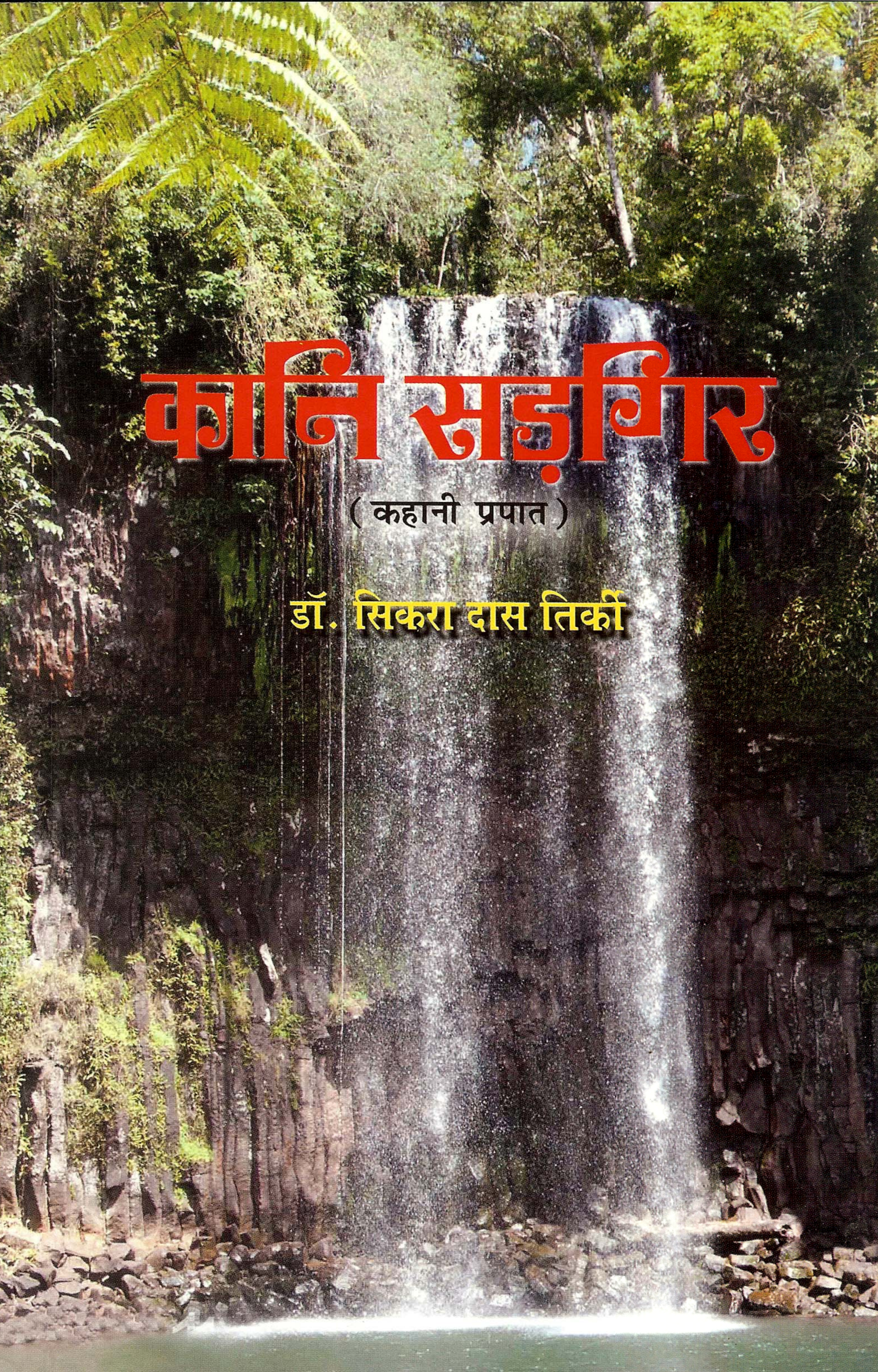


कानि सड़गिर

(कहानी प्रपात)

डॉ. सिकरा दास तिर्की

कानि सड़गिर

(कहानी प्रपात)

डॉ. सिकरा दास तिर्की

PYARA
FOUNDATION

प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन
राँची (झारखण्ड)

मूल्य : 100

प्रकाशक:
प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन, चेशायर होम रोड, बरियातु, राँची–834009,
दूरभाष : 9234301671, ई–मेल : pkfranchi@gmail.com,
वेब पता : www.kharia.in प्रथम संस्करण : नवंबर 2012
टाईपसेटिंग/आवरण : आधार अल्टरनेटिव मीडिया (आम) 9234301671

KANI SADGIR (KAHANI PRAPAT)
(A short story collection in Mundari and Hindi by **Dr. Sikra Das Tirkey**)

ISBN : 978-93-81056-36-3

अयरेकजि

मुण्डारी झारखण्ड राइज रेन मुण्डाकोवआ एंगा जगर तनआं। नेआरि होड़ो जातियआ पुरनाउतर जगरे रूपु उकुआ कना। मुण्डारी भाषा च जगर रआ ओनोमोन अर हरारनकब सिदा नेअंके 'होड़ो जगर' मनोवकोवआ जगर कजियोओतन तइकेना। नाअंदो मुण्डाकोते जगरओतन लेकाते नेअंके मुण्डारी लुतुम जना। मुण्डारी भाषा पुरना राँची जिला रेन आदि उराँवको-वओ-गे एंगा जगर हेके। जगर होराते, संसकिरिति अर निकुवआ तइअन लेकाते इनूकु के मुण्डाको मनतिंआ कना।

मुण्डारी 'मुण्ड' मने बो-ओ टुङ रे 'आ' जोड़ातयोमे रआ जोनोड़ा ते मुण्डा, जाति उदुबे टुङ रे मुण्ड + आरी जोड़ातयोमे (प्रत्यय) रआ जोनोड़ा ते मुण्डारी टुङ बइजना। एना रआ टुङ्गोरोतो मुण्डाकोवआ जगर तनआं। सिरमा 1991 ई. रआ होड़ोलेनेका लेकाते मुण्डारी जगर (भाषा) जगरतनकोवआ सनंगी 667872 मेनआं।

मुण्डारी जगरके झारखण्ड राइजअते फदिल भारतरे बिहार, प. बंगाल, ओड़िशा, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, असम अर अन्डामन निकोबर टापुकोरे जगरओतना। असम ओड़ओ अंडमान निकोबर टापुकोरे नेरआ तिनिसर झारखण्ड च छोटा-नागपुर दिसुमअते सेना कना।

मुण्डारी विश्व भाषा परिवार रआ अग्नेय च आष्ट्रिक भाषा परिवार रआ मूल जगर हेके। संताली, हो, खड़िया लेकन भाषाको नेरआ कोतो जगरको हेके। भाषा वैज्ञानिकको गे नेअंके बरिआखंडा रेको हटिंआ कदा (क) आष्ट्रो-एशियाटिक अर (ख) आष्ट्रो नेशियन।

आष्ट्रिक च आग्नेय भाषा रआ मने सेंगेल च परकिरिति (होड़ोमो) अते उड़ंआकन जगर तनआं। एनामेन्ते मुण्डारी के होड़ो जगर कजियोओतन तइकेना। नेरआ पिनिनूतर भारत अते आष्ट्रेलिया जकेद मनतिंआ कना। दखिनी पुरबी एशिया रआ जगरको के आष्ट्रो-एशियाटिक अर प्रायद्वीपीय भाषाको के चिल्काचि इन्डोनेशिया, माइक्रोनेशिया अर पोलेनेशियन रआ जगरको के आष्ट्रोनेशियन रे जोगओआ कना।

रे अते पुरआ-ते दुरङ के-गे-को रचगना ना। मेनूदो गअइदि च कानि साहिता रआ एनेटेएओ कोम गे आदि (सिनिदा) बनओं। मुण्डारी होड़ो कानि रे ओते, सिरमा, सिंगि-चण्डुऊ, इपिलको, होयो, दआ, होड़ो, जऊंतुको ओड़ओ एटआ-एटआ जीऊकोवआ सिरजन उपर्जन रआ कानिको मेनआं। ओड़ओ मनोवा समुदाय रआ कानिको मेनआं। तरालेका होड़ो कानिको जनोवरहोराते बइआ कना। एनारआ जुगूलोदते जगरगनम हरारकब इदिआ कना। मेनेमेदो ने कहनिको इसु पुरना तनआं। इमिन रेओगे नेका मनतिंआ कना चि कहनी रआ ओनोमोन अर हरारनकब हिन्दी साहिता रआ भारतेन्दु जूगु रे होबा कना। मेनूदो मुण्डारी कानिको रआ उपन ने जूगु रे कहोबा कना जआ। इमिन रेओ सिदा जूगुअते सेसेन अगुतन होड़ो कहनिको रआ होरो जंगिइ रआ एटआ सोमते हरारकबे रआ मोका ने जूगु रे नम जना। नेआं मनतिं कना चि कानि च गअइदि सहिता रआ सोबेनलेकाते हरारनकब सनमंअन (वर्तमान) जूगु रआ एनेटेए लोद गे होबा जना। एनामेन्ते ने-जूगु के गअइदि जूगु सकी जना।

सरतेदो मुण्डारी साहिता रआ ओनोल परम्परा रआ नेओं अंग्रेज, किरतन मिश्नरी अर ईसाई धरम परचारकेनको गे बइलआ। छोटानागपुर च झारखण्ड रे अंग्रेजकोवआ हिनिजुऊ जकेद मुण्डारी होड़ो साहिता पुरा मोचा रेगे तइकेना। अंग्रेजी राइजि दूबजन लोओगे मध्यकाल टुन्डु जना अर 19वीं शताब्दी, आधुनिक काल आ एटेए, रआ ने जूगु रे इन्कुगे मुण्डारी होड़ो साहिता के जमा केअते ओलबइए रूपु को ओम केदा। चियआ चि निकुके दिसुम रे यीशुवआ आज्ञाते इनियआ चेलाकोके किरतन धरममआ परचार नेरआ होड़ो जगर रे रिकायआ तइकेना। सरति दो नेआं चि होड़ोकजि रआ पड़व अंग्रेजको नेरे हिजुउ सिदा रेगे यूरोपको दिसुमको रे एटेएआकन तइकेना। ने सनङ रे इन्कुगे झारखण्ड च भारत रआ होड़ो जगरकोके जमाकेअतेको छपा केदा। ने देंगाओमे लोदतेगे किरतन धरम ते सम्बंदितेन चिमुं चिट्ठी-पतिरिको मुण्डारी जगर रे छपा इदि जना।

सन् 1942 रआ असे पसे रे सुशील कुमार बागे आ संपादन रे 'जगरसड़ा' पतिरिका उडुंजना। ने होरातेओ मुण्डारी रआ नवां पुरना कानिको समां रे हिजुऊ जना। ने सिरमा गे डब्लू. जी. आर्चर गे मुण्डारी रआ मरङ लेका कितब 'मुण्डा दुरङ' ए उडुंकेदा। सन् 1909 ई. रे शरतचन्द्र रायआ कितब 'मुण्डा एण्ड देअर कन्ट्री' रे हुडिंलेका मुण्डा धरम गाथा अवदान उक्ता लेका

भाषा विज्ञान लेका ते लेललेरे दो मुण्डारी जोनोड़ाओं भाषा हेके। जोनोड़ाओ जगरको रे समूबंदि तोत् ओड़ओ ओरोतो तोत् रे जोड़ाओ तना। मुण्डारी जगर के जगरजद लेकाते च दिसुम गुन दिसुम लेकाते उपुन रकम रे हटिंआ कना- हसादआ मुण्डारी, तमड़िंआ मुण्डारी, नगुरी मुण्डारी अर केरआ मुण्डारी।

हसादआ मुण्डारी रआ ओते राँची-चाईबासा संडकाएते सिंगितुरओ, खुन्टी, मुन्ड़हू इलाका रआ जगर हेके। ने मुण्डारी रे फनरचि थतिआ कना। एना मेनूते हसादआ मुण्डारी के फरचि मुण्डारी मनतिंआ कना। चियआचि नेअरे एटआ जगर रआ मेनेसा च समूबंदि बनोगा च कोमगेआ ओड़ओ मुण्डारी भाषाई तला रे मेनआं।

केरआ मुण्डारी रआ इलाका झारखण्ड रअ राजधानी राँची रे सोबेन मुलि बियुर बियुर तेरआ हेके। ने मुण्डारी उराँव अर मुण्डा बरन समुदाय रेनको जगर तना। नेआं रे जगरतन रे 'रआ' सड़ा रआ कजिपुरछओ पुरआ ते मेनआं लेकाते नेअंके केरआ मुण्डारी सकी जना। तमड़िंआ मुण्डारी रआ छेतर बुण्डु-तमाड़ रे जगरओतन मुण्डारी रआ तनआं। ने मुण्डारी रे बंलगा भाषा रआ परभाव मेनआं। नगुरी मुण्डारी रआ क्षेत्र रंचि चाईबासा होराअते सिंगिअयुब रे खुन्टी, कर्रा, तोरपा अर सिमडेगा सआ रआ तनआं। मुण्डारी रआ नवां साहिता ओले रे चेतन रआ सोबेन रकम रअ मुण्डारी के ओतोंए रे एनं ठउकओआ।

मुण्डारी जगर रआ अयआ बेयकरण मेनआं। संस्कृत लेका मुण्डारी रे अपिआ वचन अर अपिआ लिंगि मेनअं। नेअंके राष्ट्रिय लिपि देवनागरी रे ओलओ तना। मुण्डारी भाषा रआ केटेए साहिता मेनआं। नेरआ बरिआ रूपु मेनआं-(क) होड़ो साहिता अर(ख) शिष्ट साहित्य। मुण्डारी होड़ो साहिता पुरआगे किसडां मेनआं अर नेरआ पुरा-पुरा जमाकेअद नाअं जकेद कओल बइआ कना। चिलूकाते चि जांनगे भाषा रआ होड़ो साहिता संसार रआ मूल साहित्य लेका तइना। ने-लेका-गे मुण्डारी होड़ो साहिता रआ स्वरूपु मेनआं। कोआ चि कओला कना। मुण्डारी शिष्ट साहिताओगे कोम मरङ बनओं, इमिन रेओ होड़ो साहिता रआ समां रे नेरआ ओते हुड़िंगेआ।

मुण्डारी साहिता रे दुरङ साहिता रआ रूपु मरंउतर मेनआं। चियआमेन्ते चि मुण्डारी साहिता रे नाअं समते रेन चिमुंगे साहिताकार को हिजेना, इन्कु

लुतुम कितकोए ओल केदा। काशीनाथ सिंह मुण्डा 'काण्डेआ' उपुनेआस 'गुइरम' मुण्डा समाज रआ मिअद मरङ गिसिरगमं लेल तनआं। ने-लेका ने समय रे नेआं अयआ मजा होराए तेबआ चोटेए तदा। सन् 1984 रे दूरदर्शन केन्द्र राँची बइ जना, नेरआ कमिओं मूल तनआं, मुण्डारी जगर संसकिरिति के अयरते इदिइ नतेन। ने अयर तयोम रे 'कानि सड़गिर' (कहानी प्रपात) कितब, कानि विधा रआ नेआं अञआं सिदाउतर किरिति हेके। कितब रआ बरनतड़िं सिदाअते बिनगा गेआ अर नेआं अनचुओ अञगआ गे तनआं। एनामेन्ते चिमुं कोमकोओ होबा धड़ियोआ।

'झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा' रेन अश्विनी कुमार पंकज ओड़ओ वंदना टेटेयआ कलगओ अनचु ते नेआं कितब अबेनआ-ती-रे मेनआं। नेरआ अञ किरितिगेय। नेअंते फदिल नेरे जे चिमुंगे गलतिको तइन जना, एना अञआं हेके। विद्वानको तअते अञआं असरा मेनआं चि नेआं रे अपनाआं सलमति अञए ओमञ-का। चियआ एटआ संस्करण रे सुदुरओ दड़ियोओ-का।

डॉ. सिकरा दास तिर्की

हिजुगा कना। सन् 1950 ई. रे हॉफमैन आ 'इन्साइक्लोपिडिया मुण्डारिका' रे इसु पुरआ कानिको नेतआ-हेन्तआ नमओंआ। मेन्दो अञआं एद्का नसिब नेआंचि नाअं समते अञ नेअंके मजालेका कञ पड़व धड़िआ कदा। एनाते कञ इतुअन तना चि ने लुतुमन ग्रंथ रे मुण्डारी साहिता नतेन 'साहिता' साहित्य अर 'परिभाषा' लेकन जरूड्डु टुङ्को नतेन फादर हॉफ मेन गे कोआ टुङ्कोए ओमा कदा? मेनस राम ओड़ेया 'मतुराः कहनि' लुतुम उपुनेयास रे मुण्डा समाज संसकिरिति लोद ते ईसाई संसकिरिति रआ चर्चा इसु जिलिंग चकर रूपुतेए ओमाकदा। मेनूदो अंग्रेज विद्वनकोवआ ने अनचु नींव पचिरि बिरिदेकोवआ बोरसाए तंगी जना। मुण्डारी होड़ो साहिता रआ इन्कुवआ छपाकन कितबको अकोवआ कितबओड़आ रे इसु समय जकेद हंडेद रआ हंडेदा कनगे तइन जना।

सन् 1947 रआ 15 अगस्त रे चिल्कागे दिसुम आजादी जना, एन्कागे नेरआ भारोम भारत सरकार च राइज सरकार रे हिजुऊ जना। ने सिरमागे राँची रे 'आदिवासी अठाउरी पतिरिका छपा जना। ने पतिरिका होरातेओ चिमुंग मुण्डारी रचगनाको ओड़ओ रचगनाकार समां रेको हिजेना। सते-सते गे मुण्डारी कानिको दुरङ्को जमाए आर छपाए रे जोर नमजना। राज भाषा विभाग बिहार सरकार सअते मुण्डा लोक कथाएं, दणां जमाकन कानिको लुतुम मुण्डारी गअइदि रआ चिमुं कितबको उडुंजना। ओड़ओ गे चिमुं कितबको राजभाषा सअते उडुआं कना। सोबेन नेरे कओलओ तना। ने दोमेसोमे गे सरना सकम, जगर सड़ा समपड़तिङ लेकन चिमुं चिटी-पतिरिको उडुं जना। एना होराते गअइदि रआ कूब विकास होबा जना।

सन् 1974 ई. रे राँची विश्वविधालय रे आई. ए. अर बी. ए. कलासे रे आधुनिक भारतीय भाषा सकम रे बरहिसिगेल नम्बर रआ मुण्डारी जगर रआ पड़व एटेए जना। नेअं नतेन पड़वे कितबको रआ जरूड्डु ठोओ जना। ने सोमयओ नेआं नतेनो नवां अर पुरना गअइदिको ओल जना। सन् 1957 ई. रे आकाशवाणी राँची बइ जना। सन् 1980-81 ई. रे चिल्का स्नातकोत्तर जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग बइ जना, एन्कागे मुण्डारी भाषा साहितारे दुरङ लोद गअइदि रआ एटआ-एटआ विधाको रचगना रे जोर हिजुऊ जना। ने क्रम रेंगे डॉ. रामदयाल मुण्डा जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभागाध्यक्ष पदाबिकमि संबड़वाए जएलोद एअ नवा कानि, मुण्डारी पाठ, मुण्डारी व्याकरण

मूरहू की बोली है। इस मुण्डारी में विशुद्धता व्याप्त है तथा इसे शुद्ध मुण्डारी माना गया है। क्योंकि इसमें अन्य भाषा का संबंध या समिश्रण नहीं है या कम मिलता है और मुण्डारी भाषाई केन्द्र में अवस्थित है।

केरआ मुण्डारी का क्षेत्र झारखण्ड की राजधानी राँची के चारों ओर का है। यह मुण्डारी उराँव तथा मुण्डा दोनों समुदाय के द्वारा बोली जाती रही है। इसके बोलने के क्रम में 'रआ' ध्वनि का उच्चारण की अधिकता के कारण इसे केरआ मुण्डारी की संज्ञा मिली। तमड़िया मुण्डारी का क्षेत्र बुण्डु-तमाड़ में बोली जाने वाली मुण्डारी का है। इस मुण्डारी में बांग्ला का प्रभाव है। नगुरी मुण्डारी का क्षेत्र राँची - चाईबासा मार्ग से पश्चिम खूँटी, कर्रा, तोरपा और सिमडेगा की ओर का है। मुण्डारी के नये साहित्य लेखन में उपर्युक्त सभी प्रकार के मुण्डारी को लेकर चलना उचित होगा।

मुण्डारी भाषा का अपना व्याकरण है। संस्कृति जैसा तीन वचन हैं तथा तीन लिंग हैं। इसे राष्ट्रीय लिपि देवनागरी में लिखी जाती है। मुण्डारी भाषा का समृद्ध साहित्य है। इसके दो रूप हैं- लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य। मुण्डारी लोक साहित्य काफी समृद्ध है तथा इसका पूरा-पूरा संकलन अब तक नहीं किया जा सका है। कयोंकि किसी भी भाषा का लोक साहित्य संसार का मूल साहित्य स्वरूप होता है। इसी भाँति मुण्डारी लोक साहित्य का स्वरूप हैं। जिसका अब तक अलिखित है। शिष्ट साहित्य भी कम सम्पन्न नहीं हैं। फिर भी लोक साहित्य की अपेक्षा इसका क्षेत्र सीमित है।

मुण्डारी साहित्य में पद्य साहित्य का वृहत् रूप है, कारण मुण्डारी भाषा में अब तक के जितने भी साहित्यकार हुए हैं उनमें से अधिकांश ने पद की ही रचना की है। पर गद्य या कहानी साहित्य की परंपरा भी कम आदि नहीं है। मुण्डारी लोक कथा में धरती, आकाश, सुर्य, चाँद, तारे, हवा, पानी, मानव, जानवरों एवं सभी जीव जन्तुओं की सृष्टि की क्रमबद्ध कथाएं हैं। पुनः मानव समुदाय की कथाएं हैं तथा कुछ लोक कथाएं पशु-पक्षियों व अन्य जीव-जंतुओं पर आधारित हैं। जिनका कालबद्ध मौखिक विकास हुआ है।

संभवतः ये कहानियाँ अति प्राचीन हैं। फिर भी वैसे माना गया है कि कहानी या गद्य का उद्‌भव और विकास हिन्दी के भारतेन्दु युग में हुआ है। पर मुण्डारी कहानियाों की उत्पत्ति इस युग में नहीं हुई होगी। फिर भी आदिकाल से चली आ रही लोक कथाओं की सुरक्षा संरक्षण का नये सिरे से

प्राक्कथन

मुण्डारी झारखण्ड राज्य की मुण्डा जाति की मातृभाषा है। इसमें मनुष्य जाति की प्राचीनतम भाषाई रूप निहित है। मुण्डारी भाषा के उद्भव और विकास पूर्व इसे 'होड़ो जगर' लोक भाषा अथवा मनुष्य की बोली या भाषा कहा जाता था। अब मुण्डाओं द्वारा बोली जाने के कारण इसे मुण्डारी की संज्ञा मिली। मुण्डारी भाषा राँची जिले के आदि उराँव की भी मातृ भाषा है। अतः भाषाई, संस्कृति एवं उनकी उपस्थिति के आधार पर इन्हें मुण्डा माना गया है।

मुण्डारी 'मुण्डा' जाति वाचक शब्द में मुण्ड-मूल या सिर 'आरी' प्रत्यय के योग से बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ मुण्डाओं की भाषा है। सन् 1991 ई. की जनगणनानुसार मुण्डारी भाषा बोलने वालों की संख्या 667872 है। मुण्डारी भाषा को झारखण्ड राज्य के अतिरिक्त भारत में बिहार, पं. बंगाल, ओड़िसा, मध्यप्रदेश, असम और अण्डमान निकोबार द्वीप समूहों में भी बोली जाती है। असम तथा अण्डमान निकोबार द्वीप समूहों में इसका विस्तार झारखण्ड व छोटानागपुर प्रदेश से हुआ है।

मुण्डारी विश्व भाषा परिवार की अग्नेय या आष्ट्रिक भाषा परिवार की प्रमुख भाषा है। भाषा वैज्ञानिकों ने इसको दो भागों में बाँटा है- (क) आष्ट्रोएशियाटिक और(ख) आष्ट्रोनेशियन। आष्ट्रिक या आग्नेय भाषा का अर्थ अग्नि से या प्रकृति से निकली भाषा है। अतः मुण्डारी को होड़ो जगर कहा जाता था। इसका विस्तार भारत से आस्ट्रेलिया तक माना जाता है। दक्षिणी पूर्व एशिया की भाषाओं को आष्ट्रो एशियाटिक और प्रायद्वीपीय भाषाओं जैसे - इन्डोनेशिया, माइक्रोनेशिया एवं पोलेनेशिया की भाषाओं को आष्ट्रोनेशियन में शामिल किया गया है। भाषा विज्ञान की दृष्टिकोण से मुण्डारी योगात्मक भाषा है। योगात्मक भाषाओं में संबंध तत्व और तत्व में योग हो जाता हे। मुण्डारी भाषा को बोल-चाल व क्षेत्रीयता के आधार पर चार प्रकार में विभक्त किया जाता है- हसादआ मुण्डारी, तमड़िया मुण्डारी, नगुरी मुण्डारी और केरआ मुण्डारी।

हसादआ मुण्डारी का इलाका राँची चाईबासा मार्ग से पूरब में खूँटी,

दायित्व भारत सरकार व राज्य सरकार पर आई। इसी वर्ष राँची से 'आदिवासी' नामक साप्ताहिक पत्रिका छपने लगी। इस पत्रिका के माध्यम से कई मुण्डारी रचनाएं एवं रचनाकार सामने आए। साथ ही साथ मुण्डारी लोक कथाओं, गीतों के संग्रह और प्रकाशन में गति मिली। राजभाषा विभाग, बिहार सरकार की ओर से मुण्डारी लोक कथाएं, दणां जमाकन कानिको, सोसो बोंगा आदि मुण्डारी गद्य की कई पुस्तकें निकली। और भी पुस्तकें निकली, उन सब का विवरण नहीं दिया जा रहा है। इसी परिपेक्ष में सरना सकम, जगर सड़ा, समपड़तिङ आदि अनेक पत्र-पत्रिकाएं निकलने लगी थी। जिसके माध्यम से गद्य का चौमुखी विकास होता रहा।

सन् 1974 ई. में राँची विश्वविद्यालय में आई.ए. तथा बी. ए. की कक्षाओं में आधुनिक भारतीय भाषा पत्र में पचास अंकों के मुण्डारी भाषा की पढ़ाई शुरू हुई। जिसके लिए पाठ्य पुस्तक की आवश्यकता पड़ी। इस दौरान भी इसके लिए आधुनिक एवं आदि गद्य लिखे गए। सन् 1957 ई. में आकाशवाणी, राँची की स्थापना हुई। सन् 1980-81 ई. में जैसे ही स्नातकोत्तर, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग की स्थापना हुई, वैसे ही मुण्डारी भाषा साहित्य में पद्य के अलावे गद्य की विविध विधाओं की रचना में तेजी आई। इसी क्रम में डॉ. रामदयाल मुण्डा ने जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभागाध्यक्ष पद कार्य संभालते हुए एअ नवा कानि, मुण्डारी पाठ, मुण्डारी व्याकरण आदि पुस्तक लिखीं। काशीनाथ सिंह मुण्डा 'काण्डे' का उपन्यास 'गुइरम' मुण्डा समाज का एक वृहद् मार्मिक दर्शन है। इसी भाँति वर्तमान में यह अपने चर्मोत्कर्ष पर पहुंच चुका है। 1984 ई. में दूरदर्शन केन्द्र राँची की स्थापना की भूमिका भी अहम् है मुण्डारी भाषा संस्कृति को आगे बढ़ाने में। इसी क्रम में "कहानी प्रपात" पुस्तक कहानी विधा की यह मेरी प्रथम कृति है। पुस्तक की वर्त्तनी पूर्वाग्रह से कुछ परे है। अतः इसमें कई त्रुटियाँ भी हैं।

'झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा' के वंदना टेटे और अश्विनी कुमार पंकज के परिश्रम से यह पुस्तक आप के हाथ में है। इसका मैं कृतज्ञ हूँ। इसके अलावे इसमें कुछ भी त्रुटियाँ हैं वह मेरी है। विद्वतजनों से मेरा अनुरोध है कि इस पर अपनी सहमति मुझे दें ताकि द्वितीय संस्करण में उसे सुधारा जा सके।

डॉ. सिकरा दास तिर्की

विकास करने का मौका मिला। यह मान्य है कि कहानी या गद्य साहित्य का चौमुखी विकास आधुनिक युग के आरम्भ के साथ ही साथ हुआ। अतः इस युग को गद्य युग की संज्ञा मिली।

वस्तुतः मुण्डारी साहित्य का लिखित परम्परा की नींव 19वीं शताब्दी में अंग्रेज प्रशासकों, ईसाई मिशनरियों एवं ईसाई धर्म प्रचारकों ने डाली। छोटानागपुर व झारखण्ड में अंग्रेजों के प्रवेश तक मुण्डारी साहित्य पूर्णतः मौखिक था। अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना के साथ ही मध्यकाल का अन्त हुआ और 19वीं शताब्दी आधुनिक काल का आरम्भ हुआ। इसी काल में उन्होंने मुण्डारी लोक साहित्य को संग्रहित कर उसे लिखित रूप प्रदान किया। क्योंकि इन्हें देश में यीशु की आज्ञा से उनके शिष्यों को ईसाई धर्म का प्रचार यहाँ की लोक भाषा में करना था। सच तो यह है कि लोक वार्ता का अध्ययन अंग्रेंजों के यहाँ आने से पूर्व ही यूरोपीय देशों में आरम्भ हो चुका था। इसी उद्देश्य में उन्होंने झारखण्ड व भारत की लोक भाषाओं का संग्रह कर उन्हें प्रकाशित किया। इस योगदान के साथ ही ईसाई धर्म से संबंधित अनेक पत्र-पत्रिकाएं मुण्डारी भाषा में प्रकाशित होती रही। सन् 1942 के आस पास सुशील बागे के संपादन में 'जगर सड़ा' पत्रिका निकली। इसके माध्यम से भी मुण्डारी की कई नई पुरानी कहानियाँ आई। इसी वर्ष डब्लू. जी. आर्चर ने मुण्डारी की बहुत बड़ी पुस्तक 'मुण्डा दुरङ' निकाली। सन् 1909 ई. में शरतचन्द्र राय की पुस्तक 'मुण्डा एण्ड देअर कन्ट्री' में कुछ मुण्डा धर्म गाथाएं और अवदान प्रसंगवश आए हैं। सन् 1950 ई. हॉफ मैन का 'इन्साइक्लोपिडिया मुण्डारिका' में बहुत सी कहानियाँ यत्र-तत्र मिलती है। परन्तु दुर्भाग्य है कि मैं अब तक इसका समुचित अध्ययन नहीं कर सका। अतः मालूम नहीं कि इस चर्चित ग्रंथ में मुण्डारी साहित्य के लिए "साहित्य" और "परिभाषा" आदि महत्वपूर्ण शब्दों के लिए उसने कौन-सा शब्दों का प्रयोग किया है? मेनस राम ओड़ेया ने 'मतुराः कहनी' नामक उपन्यास में मुण्डा समाज संस्कृति के साथ-साथ ईसाई संस्कृति की चर्चा भी विस्तृत रूप से किया है। किंतु अंग्रेज विद्ववानों का यह प्रयास नींव की दीवार उठानेवालों की बाट जोहती रही। मुण्डारी लोक साहित्य की उनकी प्रकाशित पुस्तकें उनके संग्रहालयों में लम्बे समय तक बन्द के बन्द रह गई थी।

सन् 1947 के 15 अगस्त को ज्योंही देश स्वतंत्र हुआ त्यों ही इसका

अनुक्रम

जपंगाकेते बेंगड़ागोद

हतु लतर बदीको रआ अचड़ा कनउ बबा जरोम जना। एना सोहराई सिदा रेगेको इरकेदा। नाअंदो सोबेन अपन-अपन बदीकोरे बेंगड़ा रोआनं रोका तोकाको सी-तेयर केदा। एनाते एन ओतेकोरे बेंगड़ा-जोलबटाको रोआ केदा। अउरि जीदओ बारि उपुन मोड़ें-मा लेका सेतआ-सेतआ जनओ बेंगड़ा सुबा रे लोटाते दआ दुल दुलतेको पटओ केदा। मजालेका पटव जीदकेद चि बरसा अपिसा लेकाको कोड़ाओ केदा एनूका हराइदि जना। एनातेदो बेगर पटाओतेगे गोटा सिरमा जोआकन-गे तइनजना। मोसा-मोसा अगहन चण्डुऊ, फागु चण्डुउकोरेए गमा इदिआ एना रअ हलते। ओको सिरमा रबं-सा रे-ए गमाकेदा दो, सोहराई सिदा रे रोवाकन बेंगड़ा फागु चण्डुऊ तयोम, बा-चण्डुऊ रे बरखर जो-ओआ। ने सिरमाओ बदिको रआ बेंगड़ा खूब जोआकन तइकेना।

मुसिं पीटि रआ दिलं तइकेना। धुचु अको बेंगड़ा बकिड़ी रे बेंगड़ा गोदतन तइकेना। ती-ते-ए ओटआ इदि जदा अर दंड़ां-दड़ांते-ए गोद जदा। गोदतन गोदतन नाअंदो-ए उड़ुऊ नमतदा- "मुसिंअआं दिनरे मनोवाको बेंगड़ाओ जपांगाकेअतेको गोदेआ।" हड़महोड़ोको कजितद ने-कजि। ओड़ओ इनिई जी-जी रे नाअंदो-ए मेनजदा- "एला मर बेंगड़ा दो ओते रेगे जोआ कना अरको कजिआ कदा, "मुसिंअंआ दिलं रे मनोवाको बेंगड़ाओ जपंगाकेतेरको गोतेआ मेन्ते।"

गोदतन गोदतन, उड़ुऊतन-उड़ुऊतने-ए मेन जदा, "एनका दो कोकोनो-का-होबा धड़ियोगा? बेंगड़ा चि भला ओकोए जपंगाकेतेए गोदेआ?

"अञआं अबा पीटि-दं-ए इदीआ एना मेनतेञ अचुगिड़िआ कना।" धुचुमेन रूड़ा केदा। हिलिते ने कजि इदो-ए अयुम केदा चि भइ क-ए अयोम केदा। इनिइ डड़ि मुलि-ती जना।

नाअंदो हुड़िंखोन रे अपुतेए डेबेल रकब जनां ओड़ओ धुचुकेए मेतइ तना, "चिअम गोद केदा चि अउरि-गे! पीटिञ हेड़ा तना, बा-पीटि हेके। तिसिं संकेड़ाञ सेना तोबे दो बेंगड़ा सेकेड़ा अकिरिंओंगा।"

"हे बा मर दोला समपोड़ो हतड़नमे। एनलोदगेञ सेन तना।" मेतइतनलोद ओड़ओ जी-जी-रे-ए दोरेअब जदा, "हे, बा मेनूते दो बेंगड़ादोको किरिं दुकुइगेआ। तोबेगेदं दुरंआं कना-

अड़ेंए लेमे, अड़ेंए लेमे
कोचा रआ मुनुइलि अड़ेंए लेमे।
चुउलेमे, चुउलेमे
जंकोलोओ बेंगड़ाटेओ चुउलेमे।।

सेकेड़ाथब-गे एनातेदो बेंगड़ा गोदे-ए होका जना अर ओड़आ-ते-ए इदिकेदा।

एनसिदा सोमय पीटि संगिन संगिन रे तइकेना। जिनिसिको च बबा चउली अर सनाफना एमनको किरिं अकरिं मेनूते संगिन-संगिन पीटि कटाते सेनइदि सेनअउ टोटोओतन तइकेना। बबा चउली एमनकोके सिकुअर चकुली रे खनची डाकिकोरे हिचाचोड़ोतन गो-ओ-भारोम इदि अगु टोटोओतन तइकेना, होड़ोमोते बलबल गिड़ियोओगे। खने मोलों रआ बलबल डुरी-रे गोसोओ इदियोओ तइकेना। अकिरिं जना दो रूड़ा इंतम रबला, कअकिरिं जना-दो दोबड़ा लगआ। किरिं बारि सेनओ दो सेन इमता रबला अर रूड़ातन रे लगआ। समा होड़ोओ हिजुऊ सेनओं रेओ-गे सेन कटा लगा दो तइनगेआ।

सोमय मोदलेका क-तइना। दिनओं दिनओं बदलि इदि तना। मंड़ि-मड़िते साइकिल हिजुऊ जना। ओड़आ-ओड़आ रे साइकिल हिजुऊ जना। पीटि-पलन च बुरु-पीटि साइकिल तेगेको हर रकबेन तना। एनका-गे तयोम-दो मंड़ि-मंड़िते मोटोर साइकिल च पटाफटिआ ओनचर जना। हतु-हतु, ओड़ओ-ओड़आ फटाफटिआ हिजुऊ जना। एनका-गे मोटोर गाड़ी हिजुऊ जना अर हिजुऊ तना। मंड़िं-मंडिं-ते सोबेन हतुको पका संडका ते जमा जना अर जमा इदि तना। शहरते हतु अर हतुअते शहर मुलि मोटोर गाड़ी सेसेन जना। होड़ोको

इदु जां-ओको जूगु रे होड़ोको जाअको हुपुड़िंओ रेदो? मेन्दो चिमुंको हुड़िंओंगा? बेंगड़ा दो ओते रेगे जोवाकना। मुंइयो बेगर जपंगाकेतेरको तेबअया। ने कजि केगेए उड़ुऊइदि तना अर दंड़ां दंड़ांतेए गोदइदि तना। अचकागे लेंगा-ती-रे-ए जनुम जना, "सूउ। अ-ज-न खड़ां।" मेनेलोदेए तिंगुन जना, एनातेदो जोम-ती-ते जनुमेए पिचआ पिचआ जदा। पिचअओ क-ए पिचआ नम धड़िआ जदा।

ठीकि ने गाड़ि गे धुचुवआ अपुते मंगा नाअंदो डेबेल मेन्ते बकिड़ी मुलितेगे-ए हड़गुन तना। चिल्काते-ए लेलकिइआ दो-ए तिंगुआकना अरेए मेतइ तना, "चिका जनामा?" धुचु मेन केदा, "जनुम जनञ-बा! देलाती उड़ुंतञमे! पिचओकञ पिचआनम धड़िआ तना। अमआं जाअ सरसर हराकत रेदो।ओड़ओ अपुते हिजुऊ लेना अर पिचआ उड़ुंलआ मरंलेका बेंगड़ा जनुम।"

"चिलकम गोद जदा अरेम जनुम जना! मोयोद जटा सबेम अर लेंगा-ती-ते जटाते ओटआएमे ओड़ओ जोम-ती-ते बेंगड़ा जो गोदेमे। चिलकातेम चनुमोगा?" ओड़ओ अपुते कजि केदा अर डोबा मुलितेए हड़गुन जना।

नाअंदो धुचु जा-टाकन, जा-टा रआ पुसुटु जटाए पेटेए नम केदा। अपुते उदुबलेद लेकागे लेंगा-ती-ते जटाते-ए ओटआ दड़ां इदिजदा अर जोम-ती-ते बेंगड़ा-ए गोद इदि जदा। ओड़ओ-ए ओनमन तना, "ओको मुसिं. ....बेंगड़ाओ.........केतेरको गोदेआ।"

ओनमनतन-ओनमनतन मोन रे ओड़ओए मेन जदा, "ओ! ने जटाते ठड़ि-ठड़िते दड़ांयआकेगेको कजि तदा जाअ, जां-मुसिं होड़ोको बेंगड़ाओ जपंगाकेतेको गोदेआ। कारे बेंगड़ा चि भला जपंगाकेते ओकोएको गोदेआ? मेन्दो, ने जटाओ- दो जाअ जयंगा-दो ककजि धड़ियोगा?"

"न-सेता बेंगड़ा! गोदतनरेओ जनुमा, हदतनरेओ जनुमा अर जोमतनरेओ जनुमा। जोम-दो सिबिला मजा! तयोम-दो बबताआ।" अयरते ओड़ओ जी-जी-रे-ए मेन जदा।

नाअंदो एन दिपिलि गे हिली टोगओ मिआद लपन्दा कुड़ी डड़िते दआउ-ती-तना। नेकन धंगड़ाकोलो लन्दा जगर इसु सुकुइआ। इनिई दिलगिते धुचु के-ए मेतइ तना, "पुरआ-दा बेंगड़ा अलोम गोदेआ का-रेदो बबताआ।"

"हे-ड़ोओ एनादो सरति कजिगे। मेन्दो बबताञ रेदो अम कचिम गोतआञाड़ोओ?" एनलोदगे लसड़ि ते-ए मेन रूड़ाई तना अर बरनकिं लन्दा तना।

सीढ़ी लगाकर बैंगन तोड़ना

गाँव के नीचे के चौंरा खेतों का लेवा धान पक गया। लोगों ने उसे दीपावली के पहले ही काट लिया। फिर उन खेतों में बैंगन लगाने के लिए जल्दी से जोतकर तैयार कर लिया। तब उन्होंने उसमें बैंगन टमाटर रोपा। बैंगन को जिलाने के लिए चार-पाँच दिन सुबह में लोटा से पानी डाल-डालकर पटाया। अच्छी तरह पटा-जिला लेने के बाद दो-तीन बार उन्होंने उसे कोड़ा कर दिया। काँटेदार बैंगन जीने के बाद जैसा कोड़ा दिया वैसा ही बढ़ते गया। बाद में तो बिना पटाए ही साल भर फल देता रहता था। कभी-कभी अगहन और फाल्गुन मास में वर्षा होती थी, उस नमी से। जिस वर्ष जाड़े की ऋतु में वर्षा हुई तो दीपावली के पूर्व लगाया गया बैंगन फागुन मास के बाद सरहुल माह में भरखर फलने लगता था। इस वर्ष भी चौंराओं का बैंगन खूब फला हुआ था।

एक दिन बाजार था। धुचु अपने बैंगन बारी में बैंगन तोड़ रहा था। तोड़ते-तोड़ते उसको याद आई- "एक दिन मानव बैंगन को भी सीढ़ी लगाकर तोड़ेगा।" बुजुर्गों द्वारा कही गई इस बात को। फिर वह मन ही मन कहने लगा, "हाँ, यही तो बैंगन है जो जमीन में फला है और उन्होंने कहा है - "किसी युग में मनुष्य बैंगन को भी सीढ़ी लगाकर तोड़ेगा।"

बैंगन तोड़ते-तोड़ते सोचते विचारते वह कहने लगा, "वैसा तो कभी भी नही हो सकता है? भला, बैंगन को कोई सीढ़ी लगाकर तोड़ेगा? पता नहीं, किसी युग में शायद मनुष्य का आकार छोटा हो जाएगा। पर, वह कितना

मोटोर गाड़ीतेगेको सेसेन तना। सिदालेका कटाते सेनहोरा, गो-ओ-भारोम होका जना। मोटोर गाड़ीतेगे बबाचउली एमनको हरइदि हरागुऊ तना। होड़ो कटाते सेसेनगेको होका जना। पीटि सेनओम, बुरुसेनओम, अड़ान्दि- बला सेनओम मोटोर च साइकिलकोतेगेको सेनओ हिजुऊ तना। ओड़ओ-दो ओड़ओ मपरं-मपरं कमि मिसिनते होबा तना।

सनमंअन जूगु रे ने दुनिया हुड़िं हुड़िं हतु लेका बइजना। नाअं नेमन दो मोद गाड़िकद रे कोतआ रेमा। ओते रे मोटोर गाड़ी, रेल, सिरमा रे अपिरकल अर समुदर रे दआ जाजे सेसेन जना। मनोवा सोबेन तआ रे-एडिगिरि तदा। ने दिसुम रेन होड़ो एटआ दिसुम रेन होड़ोलोदते रोकागे-ए जगर तना। ने जूगु रे मनोवा कोतआ-ते-कोतआए तेबआ केदा। इपिल-चण्डुऊलो-ए जगर तना। दो, चिल्का कजि धड़ियोगा चि मनोवा जां-मुसिं बेंगड़ाओ जपंगाकेतेको गोदेआ। धुचु जी-जी रे-ए मेनेन तना।

नाअंदो मंड़िमंड़िते ओड़ओ-गे बदिली जना। हुतुको शहर बइजना। होड़ोको निदा सिंगी बुरुलेकाको लेलओ तना। एनका-गे मोटोर गाड़ीकोओ संगि जना ने लेका मेनअ होरा रे तइनतनलोद ओड़ओ एटआ एटआ बेपरि अर नुकुरि-चकरि होड़ोको संगि जना। संडका अंतोम रे मेठइ अकिरिंतनको मेठई को-अकिरिं तना। मेठई जोमतनको गाड़ीअते किरिंजोम तना। नते होरा केसेदा कना जेतन परवइ बनओं। एटआ गाड़ी हरिआको, रेकेसाको, साइकिल च कटाते सेनतन होड़ोको बलए तना। एनका-दो गाड़ी के अतोम रे तिंगुकेअद मेठई किरिं जोम धड़ियोगा। मेन्दो मोटोर चेतनतेगे किरिं जोम रआ सनां मेनआं। होरा कोटोंआ कना चि-का, जेतन उड़ुऊ बनओ।

सिदा ओकोए साइकिल चलव जद तइकेना, इनिइ फटाफटिया चलव जदा। ओकोए मोटर साइकिल चलव जदकेना, इनिइ मोटर कार ते-ए सेसेन तना। रकम रअ ओपिसको बइजना। नाअदो धुचुवआ जी ओनमन तना, “हो! नाअंदोञ बुझओ जना। हड़महोड़ोको कजिलेद कजि, “मुसिंअआ दिन रे मनोवाको बेंगड़ाओ जपंगाकेतेको गोदेआ” रआ ओरोतो। एना सरति जना ने कल जूगु रे। ने जोतो, साइकिल, रेकेसा, मोटर गाड़ी, रेल गाड़ी, अपिर जाजे अर दआ जाजे लेकनकोते जोम-जोपोमकोके हरइदि हरअउ,मेनूदो नेअंञों हेगे। ओकोमुसिं बेंगड़ाओ जपंगा केअतेको गोदेआ मेने कजि रआ मुल अर्थदो इलूचि ते इलूचि च हुड़िं ते हुड़िं कमियोगे मिसिन रअ देंगा तेगेको कमिया।

और दोनों हँस पड़े। "मेरे बाबा बजार ले जाएंगे। इसलिए मैं तोड़ने में व्यस्त हूँ।" धुचु ने फिर से बोला। परन्तु उसकी भाभी इस बात को सुन सकी या नहीं सुनी। वह डाड़ी की ओर चली गई।

पुनः कुछ देर में उसके पिताजी स्नान कर लौटे और धुचु से कहा- "कहाँ बेटा, तुम ने तोड़ा या नहीं तोड़ा? मुझे बाजार के लिए देर हो रही है। सरहुल बाजार है। आज मैं जल्दी जाऊँगा, तब तो बैंगन जल्द बेचाएगा।"

"हाँ पिता जी, चलिए आप तैयार होते रहीए। मैं तुरन्त ही आता हूँ।" यह कहते हुए फिर मन ही मन तर्क करने लगा, "हाँ, सरहुल के लिए तो लोग बैंगन अवश्य ही खरीदते हैं। तब ही तो गाया गया है-

ढाल लो तुम, ढाल लो
कोचा का हड़िया, तुम ढाल लो।
परोस लो तुम, परोस लो
बैंगन का भूंजा तुम परोस लो।।

कहते हुए उसने जल्द ही बैंगन तोड़ना बन्द किया और घर ले गया। उस, समय पहले बाजार दूर-दूर में हुआ करता था। वस्तुएं व धान-चावल तथा अन्य सामानों की खरीद-बिक्री के लिए दूर-दूर बाजार पैदल ही जाना-आना पड़ता था। धान-चावल आदि को बेचने के लिए सीका झोड़ी में खाँची और डालियों में जीतोड़ ढो-ढोकर ले जाना-आना पड़ता था। शरीर से पसीना होने तक। बार-बार मस्तक का पसीना पिंडली में पोंछते ले जाना पड़ता था। बेचाया तब तो लौटते हल्का पड़ता था, नहीं बेचाया तब तो दोबारा थक जाना पड़ता था। सिर्फ खरीदने के लिए बाजार जाना हो तो जाने में हल्का होता था और लौटने के समय भारी लगता था। खाली हाथ आने-जाने में भी चलने पर थकान तो होता ही था।

समय एक-सा नहीं रहता है। दिनों दिन बदलते चला गया है। धीरे-धीरे साइकिल आ गई। घर-घर में साइकिल हो गई। बाजार हाट और मेले में लोग साइकिल से जाने लगे। ऐसा ही धीरे-धीरे से मोटर साइकिल या फटफटिया का प्रचार हुआ। गाँव-गाँव, घर-घर फटफटिया आ गई। फिर उसी प्रकार मोटर गाड़ी आई और आ रही है। धीरे-धीरे से सभी गाँव को पक्की सड़क से मिला दिया गया है, और मिलाया जा रहा है। शहर से गाँव और गाँव से शहर मोटर गाड़ी चलने लगी। सारे लोग मोटर गाड़ी से चलने लगे।

छोटा होगा। बैंगन तो जमीन में ही फला हुआ है। चीटियाँ भी सीढ़ी बेगर पहुँचेंगी।" वह इसी बात को सोचते जा रहा था और खोज-खोजकर तोड़ते जा रहा था। अचानक उसके ही बाँए हाथ में काँटा गड़ गया - "सूउ, हाय।" कहते हुए वह खड़ा हो गया। तब दाएं हाथ से काँटा नोच-नोचकर निकालने लगा। पर, वह नोच भी नहीं पा रहा था।

ठीक इसी समय धुचु के पिता मंगा स्नान करने के लिए बारी की ओर से ही उतर रहा था। कैसे देखा, वह खड़ा है। तब उसने कहा, "क्या हुआ बेटा?" तब धुचु बोला- "मुझको काँटा गड़ गया बाबा। आइए आप निकाल दीजिए! मैं नोच भी नहीं पा रहा हूँ। शायद आपका नाखून बढ़ा होगा तो। फिर उसके पिता ने बैंगन का काँटा उसकी उंगली से नोच कर निकाल दिया।

"तुम कैसे तोड़ रहे हो कि काँटा गड़ गया। एक छड़ी पकड़ो और बाँए हाथ से छड़ी से पौधों को पलटाओ, फिर दाएं हाथ से फल तोड़ो। तुमको काँटा कैसे गड़ेगा।" कहकर उसके पिताजी डोभा की ओर चला गया।

उसके बाद धुचु ने घेरा किया हुआ झाटी से छड़ी तोड़ लिया। अपने पिता के बताए जैसा ही बाएं हाथ से छड़ी से वह पौधों को उघराते जा रहा था और दाहिने हाथ से बैंगन तोड़ते जा रहा था। फिर विचार करते जा रहा था। किसी दिन..........बैंगन.........करके तोड़ेगा।"

यह सोचते-सोचते फिर मन में बोलने लगा- "हाँ, इसी छड़ी से पलट-पलटकर खोजने को ही शायद लोगों ने कहा है, किसी युग में मानव बैंगन को भी सीढ़ी लगाकर तोड़ेगा। परन्तु, इस छड़ी को भी तो सीढ़ी नहीं कहा जा सकता है।"

"यही बैंगन! तोड़ते समय भी काँटा गड़ता है, काटते समय भी काँटा गड़ता है। खाते समय भी काँटा गड़ता है। खाने में तो स्वादिष्ट होता है। बाद में खुजलाता है।" आगे फिर वह मन में सोचने-बोलने जा रहा था। इसी समय भाभी नातेदारी की एक मजाकिया महिला डाड़ी की ओर पानी लाने जा रही थी। वह मजाक से धुचु को बोली- ''अरे धुचु बैंगन जादा मत तोड़ो, नहीं तो खुजलाएगा।"

"हाँ, यह तो सही बात है। परन्तु मुझे खुजलाएगा तो आप मुझको नहीं खुजला दीजिएगा?" जल्द ही मजाक से वह बोलते हुए जवाब दिया

पहले की तरह पैदल चलना, भार ढोना बन्द हो गया है। बाजार जाइए, मेला जाइए, शादी-विवाह जाइए, लोग मोटरगाड़ी व साइकिलों से आ-जा रहे हैं। और तो और सभी छोटे बड़े काम मशीनों के द्वारा होने लगा है।

वर्तमान युग में यह संसार छोटा गाँव सा बन गया है। आप अभी यहाँ हैं तो एक घंटा बाद दिल्ली में रहिएगा। थल में मोटर गाड़ी, रेल और आकाश में हवाई जहाज तथा समुद्र में पानी जहाज है। मनुष्य ने सर्वत्र विजय पा ली है। इस देश का आदमी दूसरे देश के व्यक्ति से परस्पर सीधे बातें कर रहा है। इस युग में मनुष्य कहाँ से कहाँ पहुँच गया है। वह चाँद तारों से बातें करने लगा है तो कैसे कहा जा सकता है कि “मानव किसी युग में बैंगन को भी सीढ़ी लगाकर तोड़ेगा।” वह मन ही मन सोचते जा रहा था।

अब तो धीरे-धीरे से और ही बदलने लगा। गाँव शहर बन गए। मनुष्य दिन-रात मेलों में सा दिखने लगे। उसी तरह मोटर गाड़ियों की वृद्धि हुई। दूसरे-दूसरे व्यापारियों और नौकरी करने वालों की वृद्धि हुई। सड़क किनारे मिठाई खाने वाले गाड़ी से ही खरीद खाने लगे हैं। उधर रास्ता बाधित है, कोई परवाह नहीं है। दूसरी ओर गाड़ीवाले, रिक्शावाले, साइकिल वाले व पैदल चलनेवाले परेशानी में हैं। वैसे तो गाड़ी को किनारे खड़ा कर मिठाइयाँ खरीदकर खायी जा सकती हैं। परन्तु गाड़ी के ऊपर से ही खरीदकर खाने की चाह है। रास्ता जाम है अथवा नहीं है, उसका कोई गम नहीं है। पहले साइकिल में चलता था। अब मोटरसाइकिल में चलने लगा। जो मोटर साइकिल में चलता था वो अब कार में चलने लगा। कितने लोग पैदल तो कितने लोग रिक्शा से चलने लगे।

फिर धुचु का मन सोचने लगा था हाँ! अब तो मैं समझ गया। बूढ़े-बुजुर्गों द्वारा कही गई बात, “किसी दिन आनेवाला मानव बैंगन को भी सीढ़ी लगाकर तोड़ेगा” का अर्थ। वह सत्य हुआ है इस कलयुग में। इन सारी बातों, यानी साइकिल, रिक्शा, मोटर गाड़ी, रेलगाड़ी वायुयान और पानी जहाज आदि के द्वारा खाद्य-पदार्थो को ले जाना और ले आना का मतलब ही है “सीढ़ी लगाकर बैंगन तोड़ना।” सरल से सरल काम भी जब मशीन के द्वारा ही होंगे तो उसका अर्थ है “सीढ़ी लगाकर बैंगन तोड़ना।”

ठंकु

मिअद हतु रे बुरु हड़म अर इकिर बुड़िया हड़म बुड़ियाकिन तइकेना। निकिन ने हतु रेन सेंड़ान अर मइनन होड़ोकिं तइकेना। मेनूदो, हे! इंकिं रे ओल पड़व सेड़ां का तइकेना। निकिंआं ओड़आ रे बबा चउली एमनको रआ जेतन कोम-का तइकेना। नेलेकाते इंकिं हतु रेन किसणा होड़ोकिं तइकेना।

निकिनआं मोयोद-गे कोड़ोहोनेए तइकेना। इनियआ लुतुम मनी तइकेना। एसेकर होनकोड़ा एंगा अपुकिंआ इसुगे दुलड़ा सुगड़ा होनेए तइकेना। हतु रेन सोवेन होड़ोकोओगे इनिइको दुलड़ा ज-इ तइकेना।

नाअंदो मनी सेड़ां नोओंजन चि हतु रआ इसुकुल रे अपुते इनियआं लुतुमेए ओलरिका केदा, पड़व मेनते। नी अयआ सोंगेकोलोद सेतआ-सेतआ मेरोमकोए गुपितन तइकेना अर इसुकुल सोमय रे मेरोमको हरउ केअते इसुकुलते पड़व मेन्तेए सेनतन तइकेना। उपुन बजे ओड़ओ इसुकुल छुटी जनते मेरोमको बिर मुलि गुपि मेन्तेए हरजको तइकेना।

मनी ने लेकागे पड़वतन-पड़वतन नाअंदो हतु रअ इसुकुल रआ पड़वए पड़व टुण्डु केदा। चेतन कलासे पड़व मेनते एनातेदो संगिन इसुकुल ते-ए सेनओं जना। हिजुऊ सेनओं नतेन अपुतेतकिन साइकलकिं किरिआइ जना। एनातेदो नियआं मेरोम गुपि कमि बंगम जना। चियआ मेन्ते चि समय क-ए नमजद तइकेना मेनूदो एतवार हुलङ कोदो मेरोमकोगेए गुपितन तइकेना। बिर सआए हर जको तइकेना अर टुकु चेतन रे दुबाकन ची कितब-ए पड़वतन तइकेना।

नाअंदो मनी मजाए पड़वतन तइकेना। एंगा अपुकिंआ जी-ओ एन होनकोड़ा रे मजा तइकेना। हतु रेन एटआ सोबेन होड़ोओ एन होनआं कजिकमि लेल केअते मजाको अटकरजद तइकेना। नेग परबकोरे दो गोटा हतु होड़ोको मोदरे जोम-नूं, जारू-जगर, सुसुन-दुरंतनको तइकेन तइकेना मेनूदो, परबो-का, जनव-गे मजाको लन्दा-जगएतन तइकेना।

मनी ठीकि गेलसा कलासे रे-ए पड़वतन तइकेना। हतु रेन धंगड़ा-धंगिड़िकोलओ इनियआ दुब जारू झुम्बड़ा मरंग इदितन तइकेना। करम चण्डुऊ तइकेना। ओते हसा खिती कमिते रूड़ु नमाकन तइकेना। मुसिं निदा नाअंदो मण्डीको जोमकेद तयोमते मनी दो अकड़ा रे सुसुन-ती जना।

बुरु हड़म अर इकिर बुड़ियाकिन गितिइआ कना। अउरी दुड़ुम रे नाअंदो जगरतन-जगरतन बुरु हड़म के इकिर बुड़ियाए मेतइ तना, "इलाया ! तलं.........अपुतेम अयुम जदा चि का?

"चनआनम बेड़ेद-बेड़द जदाड़ोओ! मर कजिइमें।" बुरु हड़मेए मेनकेदा।

"कजि दड़ोओ चिकनआं? होंदेर बबुकोड़आ कुमाते हिजुऊलेन रेबेन जगरकेन जगर गेंद! नाअंदो एना पकाउतर तरे ठउकओआ।" इकिर बुड़िया कजि केदा।

एनाते बुरु हड़म मेन केदा, "चिकन जगर ना? कोनेआंकोबु दड़ांकोआ मेनेयआ चि?"

"एनागेदंड़ोओ ! ओड़ओ चिकनआं? बबुकोड़ा नाअंदो-ए धंगड़ा जना। अलङ जीदन रे अलङ सुकु सनङ लेकालं जोका जुड़ी तइरेदो मजओआ होनङ!" इकिर बुड़िया कजि केदा। "हे ना! ने अमआं कजि-दो बुगिन कजिगे हेके। मेनूदो ने होन मजाए पड़व तना अर पड़वकोओ क-ए होनङ। अबु दिपिलि दो ओल पड़व गे क-तइकेना। एना मेनूते कलङ ओल पड़व जना। बबुकोड़ा दो पड़वन तनाए मेनूते हतु रेनकुओ जेतए नी मेनूते अगुआओ कको तिंगुन तना पड़व कोओकएगे मेनूते। इमिन रेओ मामुते दो-ए कजि तदा। निसुकन करम रेदो इनिइ बेगर रअकुल तेगे नेआं जगर मेन्तेए हिजुऊगेआ। अर जुदि इनियआं कजिम थेरगिड़ि केरेदो मेनेम सिंगबोंगाआ कजि तेरगिड़िकेद लेका रिकओआ। एना मेनूते एन सोमय मरलङ जगर गो-ए-किआ!" टुण्डु रे बुरु हड़म कजिकेद चिकिन दुड़ुम जना।

"नि-इ-गा एंगा-अबाकिं, अबेन कमि देंगा मेनूते अबेनआं नवा

किमिनेञ अउतइआ।" कुमु रे इकिर बुड़िया के मनीइ मेतइ तना।

एनातेदो "कुमु तनञ चि सरतिगे।" मेनेलोद इकिर बुड़िया ओनमन तना बटिआकन बटिआकन, ओड़ओए मेन हपे तना, "गितिइतन रे होनकोड़ा के जुड़िइ रआलिं जगर केना। एनामेनूते-गे ने-लेका कुमु हिजुऊ जना।" मेनेलोद इकिर बुड़िया जेतए क-ए उदुबदकोआ। सेतआ बिरिदजन चि सोबेन अपन-अपन कमि मुलिको सेनओं जना।

बुरु हड़म दो केड़ाको के बुसुऊ बकिड़ी बितर रेगे बुसुऊ जोमनंए अदेर केदकोआ। एनाते पाल-कुदलमको इदिकेअते पसरा-ती जना। एनसआते रूड़ाजनते बासिमंडी लोवाड़िन जन चि अरड़ां-ए गोओ केदा। केड़ाको के दो बुसुऊ बकिड़िअते दसी धंगड़ा हरउडुंग केकोते सीऊ मुलिइ हरइदिकेकोआ। सी-होकाजनते दसी दंगड़ा दो केड़ाको चपिमेन्ते गेड़ाते-ए हरकेदकोआ। बुरु हड़म दो अरंड़ाको-ए गो-ओ केदा अर डेबेल डोबा मुलि-ती जना। डेबेल डाड़ी रे एन समय मिअद धंगिड़ी किचिरिइ नुरातन तइकेना। इनिइ नुरातन नुरातन ओनमन तना, ने दिपिलि सी-ऊ कोड़ाको रेंगेए-ते अकल बकल डेबेल मेनूतेको हिजुगा। सेकेड़ा-सेकेड़ाञ सोबोद तबेआ अरेञ सेनओं थबा। ठीकि ने दिपिलि गे कोसआते बुरु हड़म अरंड़ां गो-ओकेअते दड़ादुडुतनेए हिजुऊ तोरसा लेना। धंगिड़ी अकसकओ गिड़ि जना। नुरातन नुरातन फरकानञ मेनेलोद दो बुरु हड़म टोअंकेद चि डाड़ी रे-ए बोलो तोरसा जना डेबेल मेनूते। बपुड़िइ एन दंगिड़ी किचिरिको एनका-गे बगेकेद ते-ए फरका हपेन जना। दरू उम्बुल रे दुबजन चि जी-जी रे-ए मेन जदा, "ना-कुला जोंमि हड़म! देन मइ, अञ सिदा डेबेलकोओआ। ला-इ-रेंगेए दआ तेतंग जअञा मेनो क-ए कजि केदा अर बोतोए रड़ाकेद चि लेंगा ती ते-ए खपुन जना अर डाड़ी रे-ए बोलो तोरसा जना। कजिकेद रेदो होनङ मजा लेका कचिञ फरकन जना होनङ।"

तिकिन नाअंदो बुरु हड़म डेबेलजन चि ओड़आ ते-ए रूड़ा जना। मण्डी जोमकेअतेए दुबा कना अर तमकुइ गुनूडातन तइकेना। इकिर बुड़िया मेतइ तना, "चिआ हड़म तलङ! तिसिंदो पीटिम सेना-ची-का?"

"अलो-ना! एनागेञ ओनमन तना। बतिरिञ रूडुनोओं कोओआ तलङ। सेन मोनेकिञ रेदोञ सेना कारे अयर पीटि दो सेनदुकु गेअञ। अमतलं करमइली अकिदतम। दादा-दो करम रे जरूडु-ते-जरूडुइ तेब-ए गेआ। मेनजद तइकेना-ए ची अञआं सोंगे सीमन-आं ओड़आ रे मोयोद बबुकोड़ा लेकन

दंगिड़िआकन कुड़िहोन मेना-इ। इनिइओ पड़व तना भगिनाञ कोड़ालोद मजाकिन जोका जुड़ियोगा मेनूते।" बुरु हड़म ओड़ओ अयरते ए कजिकेदा- "मेनूदो अञदो ने-होन पड़वकोओ-क-गे मेनेलेकञ उडुऊ तना। चिल्काते, ने जूगू रे पड़ओन गे सिंगार तनआं। मोद समय तइकेना सोना-चाँदी ते समपोड़ाआकनिइ मरङको तइकेना। किसणां होड़ोगे मरङको मनतिंओ तना। मेन्दो नाअं ओकोए तआ रे सेड़ां मेनआ इनिइ मरङ मेनइ। मुदा ददालोओ अबेनआं बिचरं अञअते जुदानोओं गेआ।"

"जुदा बनओं! जोका जुड़िकिअते चिमुङ पड़व सनालंआ इमुंलङ ओल पड़वइआ। चिमुं होड़ो अड़ान्दी केतेरको ओल-पड़वतन तना। मामुते नी-नं-ते कोनेयांए जसु त-इ रेदो अलंआ ओड़आ दुअर गेंदए सोभा तना। नाअं-का-लं मेनकेरेदो धंगड़ाहोन-दं ओड़आ रेम दोआकइआ मेनूदो दंगिड़िआकन कुड़िहोन दो एंगा-अपु ओड़आ रे दुबाकन दो-का-दं-ए तइना।" इकिर बुड़िया कजिकेदा।

"नाअं रे नमिन मोलों पटकवए रआ चन जरूडु मेनअं। दिलं हिजुऊआ, इंतमलं लेलजोमा।" मेनेलोद बुरु हड़म पीटिन ते-ए उडुंए जना।

मिद सोमय धंगड़ा-धंगिड़िको के कुलिपुरसा केअते कोनेआं बोर दड़ां रआ जरूडु-का तइकेना। कोड़ाहोन कुड़िहोनआं अड़ान्दी एंगा-अपु अकिनआं सुकु सनङ लेका होबातन तइकेना। लेलको तेबआ लेते एनंग कोड़ाहोन कुड़िहोनको अगमजद तइकेना। ने-लेकातेगे अड़ान्दी-कोड़ान्दी होबातन तइकेना, अर नगे कोड़ाहोन कुड़िहोन लेपेल रआ जरूडु। एंगा अपुकोगेको लेलजदको तइकेना अर सुपुकु होबा जना ओड़ओ होराको बइ जना दो बइ जना। धंगड़ा धंगिड़िको लेपेल कुपुम्बुडु दो सुसुन अकड़ा, बुरु-पीटि एमनकोरे तयोमते होबातन तइकेना।

नाआंदो करम हुलं सके, मिसीअरा-ते तकिं ओड़आ सिंगिडुम्बुई सिदा रे-ए तेबआ केदा। ठीकि मिसिते इकिर बुड़िया दआ दुपिलउ केतेर बोलोतन तइकेना। दआचटु-दो-तबकेद चिइ उडुं जना अर डन्डाआको-ए तेलादरोम थबकेदा, जोअरकेते ओड़ओ बितरते अदेर केदते दुबनं गण्डु-इ ओमआंञा। एनाते लोटा रे दआ, सुनुम अर थाड़ा उडुंकेदतेए मेन- "देला ददा कटा अबुं कोओमे!"

हगाते सके बिरिद जना अर कटा-ए अबुंकिइआ। एन कटाअबुं दआ के सड़िमा रे-ए अरे-ए-केदा अदए तेलानोओं केदा। एनातेदों अबुं सनाफनाको

के एमन रेगे दो-केद चि ददाते लोदे-ए दुब सोंगेन जना, अर नू-इ दआ-ए ओमइ जना।

"हिलिञतको दो ददा मजागेअको दं?" इकिर बुड़िया कजि केदा। एनाते ददाते सके मेन केदा- "हे, रे! बे-से-गेञ बगेतुकातदकोआ। होन्देर-होन्देर-दो होनको रूआ जना अर कमि इंतमदोञ एसेकर कुल जेना।"

एह एनकओआ ददा! नमिन भलम बलय जना! अलो-हों, अपुते एनुसआतेए उडुंआ कना। हिजुऊ थबञ मेनंतुका-दा, हिजुऊ तना-ए जाअ।" मेनेलोद दो बुरु हड़म बोलो जना।

ओड़ओ बरनकिं जोपोअर जना, दुकुसुकुको किं कुपुलि रूड़ा जना। एनातेकिं दुब रूड़ा जना। नते इकिर बुड़िआ अदिंग सआ-ए बोलो जना अर सेकेड़ो-गे धंगरा पोंग केदचि रसि इलीइ अंड़ेए उडुंलआ। मोद डुबुरी बउतेके सिदा ओमइजना एनाते-ए जोअर किइया। एन्कागे तयोम दो बुरु हड़मकेओ। एनाते चकड़ां-ए होपोरआ किना। एन्लोदगे बुरु हड़म दिलागि जदा, "देम बेदा जअलिंआ-ची! कउबउ तनेम उडुंभाआ लआ!"

"हे! मर जां-लेका रेओ जेम्बेद थबेबिन। अयर सआ रआ-दो मेनआगेआ-दं! मर ददा कटालगाकोबु हरेका।" इकिर बुड़िया-ए मेनेलोओ-दो जोपोअर जन चिकिन नूं केदा। मोसा, बरसा-ए तिलरूड़ा के-ए किना। ने सोमय गे सके मेन केदा, "भगिना कोड़आ कजिदो पकाउतर केतेञ अउतदा। जेता लेका रे क-नेते हेन्तेयोओआ। नाअं अबु बारि गेआ एनामेन्तेञकजि तोरसा जदा।

"हे ददा मर! सिंगबोंगा होरा-ए बइकेरे दो सुगड़ा गे-दं।'' इकिर बुड़िया मेनकेदा अर एनातेदो हुतुमेन दआ-ए दुलआ किना। नाते बुरु हड़म तमाकु उडुंकेद चि बरन बऊहोंजरेआ अराया दुबाकना अर तमकुकिं जोमकेदा, अरकिं जगर बेड़ा तना।

निदा नाअंदो दुब सोंगेन नंते जपआ रेन पोनूचो धुमा केकिन रअकिइआ। मरंगलेका अरआ संड़ी-ईगो-ए जना। एटआ समते करम इली-मण्डिको तेयर जना। इली-नू-तआरे नाअंदो सोबेन मोदतआ रे दुबाकनको नू-जोम जगर तना।

"मर ददा जां लेकागेञ चिपा बेड़ातदा, नू हपेतअबु!" इकिर बुड़िया कजिकेदा।

नू केते, "अमो रे एनम उड्डुऊ तना। अमआं-ती-ते रआ जोम-नू चि भला जां लेका तइना।" सके हड़म मेनकेदा। ओड़ओ अयर ते-ए कजि केदा, "फागु तयोमते कुड़ीहोनआं इन्तिआन होबाओआ चिमद! एनामेन्ते करम तयोमतेगे ओड़आ दुअर लेलकोदो हिजुऊ सेनोगोओका। अर अड़ान्दी दो फागु सिदा।"

"हे ददा एनूकागे! भगिनाम कोड़ाओओदं इन्तिआन दो मेनआं।" एनाते बुरु हड़म मेनकेदा। "तोबेदो मजाकिं जुड़ियोओ तना। मोद कलासे रेकिन पड़ाओ तना। पोनूचो धुमा मेन केद चि अयरते-ए मेन केदा, "नाअंदोड़ोओ अबेनआं चनउड्डुऊ मेनआं? नेआ मोयोदगेंद, बाबुकोड़ा के जुड़ीइ रआ। मर मामुगे अगुआन तना-दो नेआरे ओड़ओ दआं-दुऊन रआ दो कजि बनओ। दोलाबु नआं दो पांड़ां बोंगा एटेए जदा, लेल अयुम संगिलेआबु अकड़ा तेबुआ।" धुमा कजिकेद चिको उड्डुं जना।

करम तयोमते नाअंदो कुड़ीहोन सआ रेनको सिदा कोड़ाहोन लेलको हिजुऊ जना। एनाते कुड़ीहोन सआ। ओड़आ दुअर, कोड़होन कुड़ीहोन केको सुपुकु जना। एनाते मागे परबकोरे नाअंदो खूब मजा एंगा-अपुको बरन सआ को कुपुपुल तना। ने सोमय गे अड़ान्दी बला कजिकोको कजि से-ए केदा। ठीकि तयोमते बरन सआ चेड़ेंउड़िई अर बला मोसा-मोसा ते होबा जना। सिदा कोड़ाहोन सआ बला रे गोओ गोनोंगको होबा जना एनाते कुड़ीहोन सआ बला रे अड़ान्दी रआ दिनमुण्डी नेंडा जना।

गोटाहातु नाअंदो ससंचउली नेवता हटिंओंओ तना अर इलि नतेन बबाअर गोदे सोंगे रे इलिरनु ओ। गेलमोंड़े दिन सिदा नेवता हटिंए हुलंअतेगे धंगड़ा-धगिड़ी नाअंदो निदा डमकच सुसुन रचा रेको एटेए केदा। मरंग फागु चण्डुऊ मोड़ेमा रे मनी अर सनिया-आ अड़ान्दी रास बासलादे होबा जना।

नाअंदो मनी ओड़ओ सनियाआ नवा-नवा नपम, ससुरइर नहियर हिजुऊ सेनओं नेगनड़ीं नड़ीं इदितना। नवा ते नवा बरन किनआं हगा-मिसी, एंगा-अपु, कुटुम-कुपुलकोलओ रआ दुलड़ा सुगड़ा दआबाड़ि अयर ते अयर लिंगिइदि तनगे तइकेना। मेनेम, इन्तिआन नतेन पड़ाओं रआ समय देआकुण्डम तनलेका तइकेना। फागु तयोम मार्च चण्डुऊ रे मिटरिक बोड एन्कागे इनतिआन नड़ेंए इदितन तइकेना। सनिया केदो इन्तिआन ओल नं ससुरइर ओड़ओ नहियर बगेकेते एटआ रे तइकोओते इन्तिआन ओल तइकेना। इमिन

रेओ बरनकिन सासेकेते इन्तिआन किन ओल केदा। सनिया दो इन्तिआन तला रे-ए रूआ जना मेन्दो इन्तिआन ओल क-ए बगे केदा। मगर अड़ान्दी अर दुकु नमकिइ लेकाते पड़व रआ सोमय क-ए नम धड़िकेदा। इन्तिआन टुण्डु जना चि मनी अर सनिया बरन हड़म बुड़िया नाअंदो अड़ान्दी अर पड़व रआ बारोम ते निचुन्ताकनकिन तइकेना। बरनकिं नवा-नवा नपम सुकुरिकिन तइकेना। बर-अपि चण्डुऊ रे इन्तिआन पासफेल उड़ुजना। मनी दो पासे जना मेन्दो सनिया टेकेद जना। फेल रआ मरंग करन अड़ान्दी अर एन तला रे रूवा बइजना। बरनकिन रे हया मेन्दो ओड़आ दुअर इंकिं चेतन रे दुबे-ए सनांतन तइकेना।

सनिया मेन केदा, "मरजी तलं अमदो पासे केदा। अम अयर जना, अञ तयोम जना। अम तलं अयरतेगे सेनेमे। निसु अञदो मजा लेकाञ पड़ाओ बइलेआ। ने सिरमा तलं अड़ान्दी क-होबाजन रेदो अञो होनं पासजन गेआ।"

"हे तलं मर! अञ नाअंदो कोलेज रे लुतुमेञ ओल अयर तड़ाना। अयर सिरमा अमआं लुतुम ओल रे जेतन बलएको कहिजुऊआ।" एनाते मनी मेन केदा।

मनी नवा-नवागे कोलेज रे-ए तेबआ तदा। इनियआ रइन जइन ओड़ओगे अयराकनातइकेना। मेन्दो कजिगे मेनआ ठंकु तइआबु! कोड़ाहोन कुड़ीहोनआ ठंकु अड़ान्दी हेके। मनी अर सनिया तकिन ठंकु जना। मोद सिरमा होबा चि-भइ कहोबाकना अड़ान्दी, सनिया होड़ोमोकोरेए तइन जना। ओड़ओ ने-खलोम मजालेकाञ तेयर लेआ कजिलेद कजि के चुन्दी-इ गेर केदा। इनियआ ओल पड़ाओं रे केसेद बइइदि जना। ठीकि गरासी बोंगाको बोंगाकेदा। एनातेदो तयोम दो होंजरते हड़म बंगा-ई जना। ओड़ओ एनाते तयोम दो नेआं रिड़िओंओ तना-चि-का, तयोम दो हनरते बगेकेदकोआ।

नाअंदो ओड़आ दुअर रआ सोबेन बारोम अकिं चेतन रेगे उयुऊ जना। रचा जोओ लेकेअते उतुमण्डी, लू- हटिं, थड़ी लोटा, हेड़ेद तुसंग, पीटि-पलन एमन सोबेन कमि सनियाआं ती-रेगे हिजुऊ जना। एन्कागे नयल-कड़बा, उरिई-मेरोम, कुटुम-कुपुल, ओड़आ-दुअर, बोंगा-बुरु, बिचर-दुनुब लेकन तराते कजिकमि मनी-ती रेगे थम्बओ जना।

मुसिं निदा नाअंदो मण्डी जोमकेद चि मनी लगा ते सेकेड़ा गे पटी रे-ए गितिई जना। अयआ कोनेया के-ए मेतइ तना, "मरना तलं तिसिंदो कमि

कमितेञ लगागिड़ि जना। एला तलं अमो सेकेड़ा जोमतबेमे अर सुनुमको गोसोओ बेड़ा तञमें।"

"अलाहों! मण्डिञ जोमलेआ।" सनिया मेन केद चि टाटि रे सुसुन रसुड़ीं लोलोकेदा। एनातेदो मनीके सुनुम एमन गोसोओ इतिर बेड़ा किइया। एनाते अयो गितिइनं-ए बटिन जना अरेए मेन जदा, "एला जी तलं! ओड़आ दुअर कमिकजि जाल रे अ-ए-ते-गेलं लटपटाओं जना। अड़ान्दी सिदा अञदो उडुऊतन तइकेना, अयर ते अयरेञ पड़ाओ इदिगेआ। मेन्दो नाअंदो ओल पड़ाओ दो मेनेम देआंकुंडम इदियोओ तना। अमो नाअंदो अयरतेम पड़ाओ धड़िआ तना चि भइ-का! चिल्काम अटकर जदा?"

"हे! नाअंदो ठोर नमओं तना। अलंअंआ होनकोलं पड़ाओकोआं चि-भइ अलं पड़वा मेनेलेका बयुऊ तना। इंतम दो एंगा अपु देआ रे सुकु रे-लं तइकेना। नाअंदो एंगा मेना-इ, नगे अपु मेला-इ! इदो सिंगबोगाआ सनां जाअ नेकागे तइकेना! एंगा-अपु गोएओ सिदाअड़ान्दी क-होबाजन रेदो इदु अञआं अमलोद ते अड़ान्दी होबा जना चिभइ क- होबा जना होनं।" मनी कजि केदा ओड़ओ अयरतेए मेन केदा, ''एंगा अपुकिं मेनूते दो ओते रे कोड़ाहोनते मरङ दो जेतए बंगइ अर होनको नतेन दो एंगा-अपु बगे केअते जेतए मरङ बंगइ।''

"हे! मेन्दो सिंगबोंगाआ सनां दो निरलगेआ अर सुगड़ा गे तइना। निमुंगेदं ची अलं डिन्डा-डंगुआलेका अजउड़ी बंलंआ नेआ-गे-दं" सनिया मेन केदा।

"एन्का दो नाअंदो कउतर-दं तइ धड़ियोओआ ची-ड़ो-ओ। मेन्दो पड़ाओ होका तबेन मेन्तेदो जेतए क-ए कजितद लंआं। नेका एंगा-अपुकिं अचकागे बंकिं जना। ने-लेकाते अचका गे मेनेम अलं चेतन रे इसु मरंग भारोम हिजुऊ तोरसा जनां खितिआर ओड़ा-आ दुअर सम्बड़ाओ मोयोद पुरआ गे मरंग कमि हेके ओड़ओ ओल-पड़ाओ दो नेआतेओ मरंउतर कमि हेके। अलं के-ने बरन कमि अपनआ इछा लेकात लेलगे मेनआ, अरलं लेलेआ। मनोवा जिउदन गे ने-लेका मेनआ। अपनआ बुगिन कमिको कमिइदिम-कमिइदिम, जोदो सिंगबोगा गे-ए ओम तना। होड़ोवआ एन्डे चिकन पेड़ेए मेनअ! इनिइदो कमि भइर दं-ए धड़िआ तना। ठंकु कारे जो-दो अ-ए-गे अयआ सुकु-सनंग-लेका-ए ओमइदि तना।" मनी कजिकेदा अर सनिया के लुतुर जपआ रे ओड़ओए मेतइ तना, "अमआं होड़ोमो रे असुलतन होन दो अम हेके चिभेइ अञ हेके, नेआंदो

सिंगबोंगा गेदंए इतुअना। नेअओदं मेनेम दो मोयोद ठंकु गे हेके।" टुण्डु रे मनी मेनकेद ची बरनकिं लन्दा केदा अर तयोमदोकिं दुडुम जना।

ठंकु

एक गाँव में बुरु बूढ़ा और इकिर बुढ़िया पति पत्नी थे। ये उस गाँव के ज्ञानी और सम्मानित व्यक्ति थे। हाँ, पर वे दोनों पढ़े लिखे नहीं थे। उनके घर में धन दौलत की कोई कमी न थी। वे धनी थे।

उन दोनों का एक ही पुत्र था। उसका नाम मनी था। एकलौता पुत्र वह माता-पिता का प्यारा दुलारा बेटा था। गाँव के सब लोग उसको बहुत प्यार करते थे। जब मनी बचपन में आ गया, तब उसके पिता ने गाँव के स्कूल में उसका नाम लिखा दिया। वह अपने मित्रों के साथ सुबह को प्रतिदिन बकरियाँ चराया करता था, और बकरियों को लाकर स्कूल जाया करता था। फिर चार बजे स्कूल से लौटने के बाद वह बकरियों को जंगल की ओर ले जाया करता था।

मनी ने पढ़ते-पढ़ते गाँव की स्कूल की पढ़ाई खत्म कर दी। उसके बाद उच्च वर्ग की पढ़ाई के लिए उसको दूर जाना पड़ा। उसके माता-पिता ने उसे आने जाने के लिए साइकिल खरीद दी। इसके बाद उसका बकरी चराने का काम छूट गया। क्योंकि उसको समय नहीं मिला करता था। परन्तु रविवार के दिन वह बकरियाँ ही चराया करता था। वह जंगल की ओर ले जाया करता था। टीले पर बैठकर वह किताब पढ़ा करता था।

अब तो मनी की पढ़ाई अच्छी चल रही थी। माता-पिता का मन भी उसके प्रति खुश था। गाँव के अन्य लोग भी उसके क्रिया कलाप को देखकर खुशी महसूस करते थे। पर्व-त्योहारों में पूरे गाँव के लोगों में मिल जुलकर

खाना-पीना मिलना-जुलना, नृत्य-गान करना चलता था। परन्तु, पर्व-त्योहारों में ही नही, आम दिनों में भी गाँव वाले सप्रेम रहा करते थे। अब मनी मैट्रिक वर्ग में पढ़ रहा था। गाँव के युवक-युवतियों के साथ उसके उठने बैठने की चाह बढ़ती जा रही थी। करम का महीना था। कृषि कार्य भी निपट चुका था। एक दिन रात का भोजन करने के बाद मनी अखाड़ा में नृत्य के लिए चला गया।

बुरु बूढ़ा और बेड़ा बुढ़िया दोनों सोये हुए थे। नींद आने के पहले बुरु बूढ़ा से बेड़ा बुढ़िया ने कहा, "हे! पति देव.......क्या आप सुन रहे हैं?"

"तुम क्या बकबक कर रही हो! चलो बोलो!" बुरु बूढ़ा ने कहा।

"बात तो क्या है पति देव! उस दिन बेटा के मामा जब आये थे। तब आप दोनों में बातचीत हो रही थी, वही! अब तो उसको पक्का कर लेने से अच्छा होगा।" बेड़ा बुढ़िया ने कहा।

उसके बाद बुरु ने कहा,"क्या बात? बहू की तलाश करेंगे यहीं ना?"

"वही बात है और क्या? बेटा अब तो जवान हो गया है। हमारे जीते में, हमारी इच्छा के अनुसार हम उसकी शादी कर दें तो अच्छा होता?" बेड़ा बुढ़िया बोली।

"हाँ! तुमने यह बात तो ठीक कही है। परन्तु यह बालक अभी पढ़ रहा है और वह पढ़ लेता! हमारे समय में तो पढ़ाई-लिखाई ही नहीं था। जिस कारण हम नहीं पढ़े। इसीलिए गाँव के कोई व्यक्ति इसका अगुआ नहीं कर रहा है। फिर भी उसका मामा ने तो कहा है। अबकी करम में वे बिन बुलाए इस बारे में बातें करने के लिए आएंगे ही। और उनकी बात को नकार देना कहो कि ईश्वर की बात को अस्वीकार कर देने-सा है। इसलिए उसी समय हम उससे बात पक्की कर लेंगे।'' अंत में बुरु बूढ़ा ने कहा। उसके बाद दोनों सो गए।

"ये लो! मेरे माता-पिता, मैंने आप दोनों की सेवा-सुरू-सा के लिए नई बहू ले आया हूँ।" स्वप्न में बेड़ा बुढ़िया को मनी ने कहा। उसके बाद "सपना देख रही हूँ या सच में।" बेड़ा बुढ़िया लेटे ही लेटे मन में सोचने लगी। फिर चुपचाप कहने लगी- "सोने के समय हमदोनों ने इसकी शादी की बातचीत की थी। इसीलिए इस प्रकार का स्वप्न आया होगा।" कहते हुए बेड़ा बुढ़िया ने किसी को नहीं बताई। सुबह उठने के बाद सब अपने-अपने

काम में लग गए। बुरु बूढ़ा ने काड़ाओं को पुआल खिलाने के लिए पुआल बारी में ही अन्दर कर दिया। तब वह फार पजवाने के लिए चला गया। उधर से लौटकर उसने बासी भात का नास्ता किया तथा जुंअटें ढोकर चला गया। धांगर युवक ने काड़ाओं को पुआल घेरा से निकाला और खेत जोतने की ओर ले गया। खेत जोतना बन्दकर धांगर भैंसों को धोने के लिए नदी ले गया। बुरु बूढ़ा ने जुआटों को लेकर स्नान डोभा की ओर चला गया। स्नान डोभा में उस समय एक युवती कपड़ा धो रही थी। वह फिचते-फिचते सोच रही है, इस समय हल जोतने वाले मर्द भूखे-प्यासे स्नान के लिए आएंगे। मैं जल्द फिच के चली जाती हूँ। ठीक इसी वक्त किस ओर से बुरु बूढ़ा जुअंट ढोकर हड़बड़ाते आ पहुँचा। युवती स्तब्ध हो गई। फिचते-फिचते मैं हट जाती हूँ, सोचते ही बुरु बूढ़ा नंगा होकर हड़बड़ा के डाड़ी में घुस गया स्नान करने के लिए। खामोश, वह युवती कपड़ों को वैसा ही छोड़कर हट गई। वह पेड़ की छाया में बैठकर मन ही मन बोलने लगी, "बाघ खाय बूढ़ा को! चलो बेटी, मैं पहले स्नानकर लूँ। मैं भूखा-प्यासा हूँ सो भी उसने नहीं कहा और करेया खोला तथा बाँया हाथ से छिपाकर वह हड़बड़ा कर घुस गया। वह बोलता तब मैं नहीं हट जाती क्या?"

दोपहर को बुरु बूढ़ा स्नान करके घर वापस आया। भोजन करने के बाद वह बैठा हुआ था, और खैनी बना रहा था। तब बेड़ा बुढ़िया उससे बोली- "आज आप बाजार जाएंगे या नहीं?"

"हाँ! मैं वहीं सोच रहा हूँ। थोड़ा मैं विश्राम कर लूँ। मुझे जाने का मन किया तो जाऊँगा, और नहीं तो आने वाला बाजार जरूर से जरूर जाऊँगा ही। तुम करम हड़िया तैयार कर दो। करम में बड़े भाई जरूर से जरूर पहुँचेंगे ही। वे बता रहे थे कि मेरे मित्र सिमन के घर में हमारे पुत्र के योग्य उनकी एक युवा पुत्री है। वे बोल रहे थे, वह पढ़ रही है। मेरे भगिना से उनकी अच्छी जोड़ी बनेगी।" बुरु बूढ़ा ने फिर आगे कहा, "पर, मेरा तो विचार ऐसा है कि यह लड़का पढ़ाई कर ले। "क्योंकि इस युग में पढ़ाई ही आभूषण है। कभी एक समय था, सोना-चाँदी से परिपूर्ण आदमी बड़ा माना जाता था। धनी व्यक्ति भी बड़ा आदमी तो कहलाता है। पर अभी जिसके पास शिक्षा है वही बड़ा है। परन्तु बड़े भाई और तुम्हारा विचार तो मेरे विचार से बिल्कुल ही भिन्न है।"

"भिन्न नहीं है। इनकी शादी कर हम उसे जितना पढ़ाना चाहेंगे उतना पढ़ाएंगे। बहुत से लोग विवाह कर पढ़ लिख रहे हैं। मामा ने इसके लिए कन्या ढूंढी है, तो वे हमारा घर-द्वार की शोभा ही बढ़ा रहे हैं। अभी हम नहीं कह देते हैं, तब तो लड़का को तो हम घर में रखेंगे ही। परन्तु युवा हुई लड़की को उनके माता-पिता अपने घर में तो रखे नहीं न रहेंगे।'' बेड़ा बुढ़िया बोली।

"अभी में इतना माथा पटकने की क्या आवश्यकता है। समय आएगा तब हम देखेंगे!" कहते हुए बुरु बूढ़ा बाजार के लिए निकल गया।

पहले युवक-युवतियों को उसे पूछताछ कर उसके लिए कन्या-वर तलाशने की आवश्यकता ही नहीं थी। लड़का और लड़की का विवाह माता-पिता की इच्छा के अनुसार हुआ करता था। लड़का-लडकियों को उसका मेहमानी पहुँचने पर ही पता चलता था। इस तरीका से शादी-विवाह हुआ करता था, और न ही लड़का-लड़की को देखा-देखी होने की आवश्यकता। माता-पिता ही पसंद करते थे और दोनों तरफ से पसन्द आया, तथा राह बन गई तो बन गया। युवक-युवती को देखने की प्रथा नृत्य अखाड़ा, मेले, बाजार आदि में बाद में हुआ करता था।

करम का दिन था। सके अपने बहन दामाद के घर सूर्यास्त के पहले पहुँचा। ठीक उसकी बहन बेड़ा बुढ़िया सिर पर पानी लेकर घुस ही रही थी। पानी की गगरी जल्दी से रखकर वह निकली और डण्डा आदि ग्रहण कर उसने प्रणाम किया तथा अपने भाई को अन्दर कर उसे बैठने के लिए पीढ़ा दिया। उसके बाद उसने लोटा में पानी, तेल और थाली निकाल कर कहा- "आइए! भइया पैर धो लिजिए!"

उसका भाई उठा और उसने उसके पैर धो दिए। उस चरणधूलि पानी को उसने छप्पर में उड़ेल कर कुछ झोंक ली। उसके बाद वह सारे समान को वहीं रखकर अपने बड़े भाई के साथ बैठ गई। फिर उसने उसे पीने का पानी दिया।

"मेरी भाभी लोग तो भइया कुशल हैं ना?" बेड़ा बुढ़िया ने कहा। "हाँ, बहन! उन लोगों को भी मैं कुशल ही छोड़कर आया हूँ। कुछ दिन पहले तो बच्चे बीमार पड़ गए थे, और काम के समय मैं अकेला हो गया था।" उसके भाई ने कहा। "वैसा ही होता है भइया! ओह! आपको बहुत कष्ट

उठाना पड़ा। थोड़ा-सा रूक जाइए। बाबु के पिता उधर ही निकले हैं। जल्द ही आऊँगा कहकर गए हैं, शायद आते ही होंगे।" वह बोली लेकिन तब तक तो बुरु बूढ़ा अंदर घुस आया था।

उन दोनों में नमस्कार हुआ। फिर से हालचाल का जायजा कहने लगे। उसके बाद वे दोनों बैठ गए। उधर बेड़ा बुढ़िया अन्दर घुसी और झटपट उरदबोदी को भूंजकर हड़िया रस ढालकर ले आई। पहले अपने बड़े भाई को एक डूभा देकर प्रणाम किया। उसके बाद बुरु बूढ़ा को भी वैसे ही दी। तब दोनों को चखना हड़का दी। तुरन्त ही बूढ़ा बोला, "ये तो हमें तुम ठग रही हो शायद! झटपट तुम निकाल ले आई हो।" सभी मुस्कुराये।

"चलिए भइया! जैसा भी हो आप दोनों जल्दी ले लें। आगे का तो हइए है ना! भइया चलिए पैर की थकान को दूर कीजिए।" बेड़ा बुढ़िया के कहते दोनों पी गए। एक दो बार उन्हे पोरसा दे दी। उसी समय सके ने कहा, "भगिना की बात को मैं पक्की कहके ही लाया हूँ। किसी भी प्रकार से इधर- उधर नहीं होगा। अभी सिर्फ हमलोग भर हैं। इसलिए मैं जल्दी से कह दे रहा हूँ।"

"हाँ भइया! ईश्वर रास्ता बना दे तो सुन्दर ही है न।" बेड़ा बुढ़िया ने कही। और तब उसने उन्हें मुंह धोने के लिए पानी डाल दिया।

इधर बुरु बूढ़ा खैनी ले आया। दोनों भाई ससुर दामाद बैठे हुए खैनी खाकर बातें कर रहें थे। रात को बैठने में साथ देने के लिए उसने पड़ोसी का धुमा को पंच बुला लिया। बड़ा-सा रंगुआ मुर्गा को मारा। उसने फिर से करम हड़िया और भोजन बनाया। हड़िया पीते हुए सभी एक साथ बैठकर पी-खा रहे थे।

"चलिए भइया! मैं तो जैसा-तैसा ही चीपी हूँ। आप चुप से ग्रहण करें।" बेड़ा बुढ़िया ने कही। फिर पीकर, "तुम भी बहन उसकी चिंता कर रही हो। तुम्हारे हाथ का खाना-पीना भला जैसा-तैसा रहता है!" सके बूढ़ा ने कहा। फिर आगे उसने कहा, "होली के बाद उस लड़की की परीक्षा है, शायद! इसलिए करम के बाद ही घर देखने के लिए आना-जाना आदि हो जाए। और होली के पहले शादी।"

"हाँ, भइया! वैसा ही हो! आपके भगिना की भी तो परीक्षा है।" बुरु बूढ़ा ने कहा। "तब तो इनदोनों की जोड़ी अच्छी होगी। दोनों एक वर्ग

में पढ़ रहें हैं।'' पंच धुमा ने कहा, फिर आगे कहा, "अब तो आप दोनों को सोचना ही क्या रह गया है? यह एक ही है, न! बेटे के विवाह का। चलिए, मामा ही अगुआ कर दे रहे हैं तो इसमें न-नुकुर की बात ही नहीं है। अब तो हम अखड़ा की ओर चलें। पहान पूजा आरम्भ कर रहा है, मिल जुलकर उसे हम देख सुन लें।" धुमा ने कहा और वे निकल गए।

करम के बाद लड़की वाले पहले लड़का देखने के लिए आए। उसके बाद लड़की की ओर। घर-दरवाजा लड़का-लड़की दोनों तरफ से पसंद हुए। उसके बाद तो माघ पर्व में खूब आदरपूर्वक दोनों तरफ के माता-पिता को मेहमानी करने लगे। इसी दौरान ही बड़ा कुटुमाईत और शादी के कार्यक्रम पर बातें हुई ठीक माघ पर्व के बीतने पर दोनों तरफ चेड़ेउड़िई और बड़ा मेहमानी में शादी दिन तिथि तय हुआ।

शादी नेवता पूरा गाँव में हल्दी रंगा चावल बँटाया, साथ में हड़िया के लिए धान और मड़ुआ और हड़िया दवा भी। पन्द्रह दिन पहले गाँव में नेवता बांटा। उसी रात से ही युवक-युवती आँगन में डमकच नृत्य करने लगे। होली मास के पांचवें दिन मनी और सनिया की शादी धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुई।

मनी और सनिया का नया-नया मिलन, होली में मनी का साला दोनों को ले गया। नहियर से ससुराल और ससुराल से नहियर आने-जाने का नियम लतर बढ़ते जा रहा था। नये से नये दोनों के भाई-बहन, माता-पिता, कुटुम्ब-मेहमानों का दुलार प्यार पानी की धार आगे ही आगे बहती चली जा रही थी। परन्तु परीक्षा के लिए पढ़ने का समय दरकिनार कर देने सा बनता जा रहा था। होली के बाद मार्च माह में मैट्रिक बोर्ड की परीक्षा थी। सनिया को परीक्षा देने के लिए ससुराल और नहियर को छोड़कर दूसरे स्थान में रहकर परीक्षा लिखना था। फिर भी उन दोनों ने हिम्मत कर परीक्षा दी। सनिया तो परीक्षा के बीच बीमार भी हो गई। फिर भी वह परीक्षा लिखना नहीं छोड़ी। शादी और बिमारी को लेकर वह पढ़ाई का मौका नही पा सकी।

इसके बाद तो मनी और सनिया दोनों पति-पत्नी शादी और पढ़ाई की बोझ से निपट गए थे। वे दोनों नये-नये मिलन सुख में थे। दो-तीन मास के बाद परीक्षा फल निकल गया। मनी उत्तीर्ण हो गया और सनिया अनुत्तीर्ण हो गई। फेल होने का मुख्य कारण उनकी शादी और बीच में बीमार होना था।

उन दोनों की चाह पढ़ने की थी। परन्तु घर-द्वार का भार इनके कंधों पर आना चाह रहा था। सनिया बोली, "चलिए! आप तो उत्तीर्ण हो गए। आप आगे हो गए और मैं पीछे पड़ गई। आप सदा आगे ही बढ़िए। इस बार तो मैं अच्छी तरह पढ़ लुंगी। हमारी शादी इस वर्ष नहीं हुई होती तब तो मैं भी उत्तीर्ण हो ही जाती।"

"हाँ प्रिया चलो! मैं अब तो कॉलेज में अपना नाम लिखवा के रहूँगा। आगे वर्ष तुम्हारा भी नाम लिखवाने में कोई कठिनाई नहीं होगी।" मनी ने कहा।

मनी ने नया-नया कॉलेज में प्रवेश किया है। उसका रहन-सहन और ही बढ़ा हुआ था। परन्तु कहावत ही है, हम उसे ठंकु कर दें! लड़का-लड़की का ठंकु विवाह है। मनी और सनिया दोनों को ठंकु लग गया। शादी किया हुआ एक वर्ष हुआ है या नहीं हुआ है कि सनिया गर्भवती हो गई। फिर इस बार ठीक से तैयार कर लूँ, कही गई उसकी बात को छुछुन्दर ने लांघ लिया। उसकी पढ़ाई-लिखाई में बाधा पड़ते गई। ठीक उसने अचराइल पूजा, पूजा की कि उसके बाद तो उसका ससुर बूढ़ा नहीं रहा। फिर उसके उपरान्त तो यह भुलाया कि नहीं, बाद में उसकी सास उन्हें छोड़ गई।

अबकी तो घर दरवाजा का पूरा भार उनदोनों के ऊपर ही गिर पड़ा। घर आँगन से लेकर खाना बनाना, बाँटना, थाली-लोटा, निकावन चोकावन, हाट-बाजार आदि सारे काम सनिया के हाथ में आ गया। उसी तरह हल-बैल, बकरी, इष्ट-कुटुम, घर-द्वार, पूजा-पाठ, विचार-आचार आदि सम्पूर्ण कार्यक्रम मनी के हाथ में थम गया।

एक दिन रात को खाना खाकर मनी थका हुआ जल्दी से चटाई में लेट गया। उसने अपनी पत्नी से कहा, "चलो प्रिया! आज मैं काम करते-करते थक गया हूँ। आओ तुम भी जल्दी से खाओ और मुझे तेल लगा दो।"

"रूक जाइए! मैं खा लेती हूँ।" बोलकर सनिया टाटी में तेल लहसुन गरम की। उसके बाद मनी को तेल मालिशकर दी । फिर वह भी ढलंग (लेट) गई और बोली, "हम घर-द्वार के कामकाज के जाल में अपने आप लटपटा गए हैं। विवाह के पहले मैं सोचा करती थी, आगे से पढ़ते ही जाऊँगी। पर, अब तो पढ़ाई-लिखाइ तो कहो तो दरकिनार होते जा रहा है। आप भी अब तो आगे की पढ़ाई कर पा रहे हैं अथवा नहीं! आपको कैसा लगता है?"

"हाँ! अब पता चल रहा है। हम अपने बाल-बच्चों को पढ़ाएंगे कि हम पढ़ेंगे, जैसा बनते जा रहा है। उस समय तो माता-पिता की पीठ में हम सुखी थे। अब तो न मां और न पिता है। पता नहीं, शायद ईश्वर की चाह ही ऐसी थी। माता-पिता की मृत्यु के पहले शादी नहीं हुई होती, तो पता नहीं मेरी शादी तुम्हारे साथ होती या नहीं होती शायद।" मनी ने कहा।

"हाँ! पर, ईश्वर की चाह तो सुन्दर ही है और सुन्दर ही रहेगा। इतना ही न, की अब तो हम दोनों कुंवारा-कुंवारी सा स्वतंत्र नहीं हैं, यहीं ना?" सनिया बोली।

"वैसा अब तो रहा ही नहीं जा सकता है ना। पर अब तुमलोग पढ़ाई छोड़ दो कहकर तो हमें किसी ने नहीं कहा है। हाँ, माता-पिता दोनों अचानक ही नहीं रहे। इस प्रकार से यों ही कहो तो हमारे ऊपर बहुत बड़ा भार साथ आ गया। गृहस्ति घरबार संभालना एक बड़ा काम है, तथा पढ़ाई लिखाई तो इससे भी बड़ा काम है। हमको इन दोनों ही काम को अपनी इच्छा के अनुसार देखना ही है, और देखेंगे ही। मानव जीवन ही इस प्रकार है। अपने अच्छा काम को करते जाओ, फल तो ईश्वर ही देता हैं मनुष्य का उसमें क्या अधिकार है? वह तो काम भर कर सकता हैं ठंकु या फल तो वे अपनी मर्जी और चाह के अनुसार देते जाते हैं।" मनी बोलकर सनिया को गले लगाते फिर बोला - "तुम्हारा पेट में पल रहा बच्चा तुम हो या मैं हूँ। यह भी ईश्वर ही तो जानता हैं। कहो तो यह भी एक ठंकु ही है।" मनी ने कहा और दोनों हँस दिए। फिर वे दोनों सो गए।

पंइकि सुसुन

मुसिं रांचि दूरदर्शन पंइकि सुसुनेए ओमजद तइकेना। होनको अर हड़मको दुब केअतेको लेलतन तइकेना। सुसुन लेलकेदते इनकु बेटेकनको रसिका जना। टुण्डु रे मिअद धंगड़ाहोन अपुकेए मेतइ तना, "अते-बा! ने पंइकि सुसुन चिकन सुसुन हेके? चिलूकाते नेकाको सुसुना?" अपुते कजिकेदा, "हे! मजाम कजिलआ! अयमेपे नाअंदो पंइकि सुसुन रआ कानिञ उदुबापे तना।

झारखण्ड राइज रआ ओते बिर-झूंडु ओड़ओ खान खदानको बारि रआकतनआं, नेआं। नेरे चिमुं रकम रआ अलर बलर सुसुन कला रआ होयो सिदाजूगु अते सेसेन अगु तना। एन सोबेन सुसुनको रआ संबंदि जां-क-जां सांसकिरितितेन परब-तिहा अर बोंगा-बुरु ते मेनआं। एन सुसुनकोरगे मिअद पंइकि सुसुनो तनआं। पंइकि सुसुन रआ संबंदि अड़ान्दि ते मेनआं। एनामेन्ते झारखण्डी समाज रे पंइकि सुसुन रआ चइल इमुंगे सिदाते मेनअं चिमुं आदिवासी समाज रे अड़ान्दि संस्कार रआ संसकिरिति।

नाअंदो अयुमेपे पंइकि सुसुन चनआं तनआं। पंइकि रआ ओरोतो हेके ईल मने पंख तइना अर पंइकि सुसुन रअ ओरोतो ईल च अपरोब के फटफटवे च अपरोब ते ओपोता। एनामेन्ते पंइकि सुसुन रआ मुल भाव भीर उदुबेयआ तनआं। एटआ टुङ्कोते नेअंके पेड़ेआन रआ सुसुन कजि धड़ियोगा। चिल्काचिं रावण सीता के अरकिद इदिजई रे जटायु रावण के अपरोब ते-ए जपटव लिइआ चियअम इदि जअइया मेनते। मेनूदो नेमन मोयोद कुनलि बिरिद तना

चि पंइकि सुसुन निइ ओकोए लोदए ओपोता तना? च इनिइ फेड़ेगनआ कोमनेए उदुबे तना? ओकोए के-ए झपटव जइआ? सिदा रे उदुब चोटेगा कना चि पंइकिसुसुन रआ सम्बनूदि अड़ान्दि-ते मेनआं। झारखण्डी समाज रआ अड़ान्दि रे कोड़ाहोनआ बरतिआ उडुंओं तना आर कुड़िहोनआं बरतिआ हिजुऊ तना। चिमता बरतिआ हिजुऊ तना इमता इनिइ कुड़िहोनआ हतु जपआ रे जमाकन तइना। हतु रेनको लेल अयुम-केतेको इतुइआ, इमिन रेओगे अगुआदार नेआं कजि कुड़िहोन सआ रेनको केए उदुबकोवा। बरतिआ पाटी मिअद मोर्चा बइकेअते जमाकन तइन तना। चिंतम जकेद चि कुड़िहोन सआ रेनको इनकुके। कको दरोम इदि जअकोआ। ने-लेकाते पंइकि सुसुन के राज सुसुन च राष्ट्रिय सुसुन सकी धड़ियोगा।

बररिया केओगे कुड़िहोन सआते दरोम रआ कजि अगुवादार ते ओमओंवा। तोबे बरन सअते दपरोम रआ तेयरि एटेगोओवा। ने समय गे पंइकि सुसुनहरियाओए तेयरेन तना। सम्पोड़ो सिंगरेन तनलोद इनिई बो-ओ रे बेद रे मरआ अर लङ चेड़ेंयआ ईल-ए तोलेन तना। मयंग रे धुति अर होड़ोमो रे पोषाक-ए तुसिंएना। ती ओड़ओ होड़मो रे रंगा-बिरंगा किचिरि को फिताको ते अपरोबदार, झलर झपुर-ए थोलेना। कटा रे गुगुरा अर सड़ी अन्दुइ तुसिंएना ओड़ओ मेदमुंड़ा रे ससंङ रंगा रआ टीकाकोते सम्पोड़ो केअते ती-रे ढाल-तरउड़ि सब केअतेए थेयरेना। मेनेय बिर रे मरआ सिरमा रे सड़ीतन हेन्दे-हेन्दे लारिको रआ सनाड़ि, अर बिजिर के लेलकेतेर ईलको पसारओ केतेर ए सुसुना। कुड़िहोन सआ रेनको बरतिया के दरोमउ मेनूते उड़ंओंओवा। पंइकियो सोंगे रे एन ढांका-नगरा, भेंर अर परेड़ेंद रआ एन सड़ी रे अयआ अपरोबकोके ओटंएलोद ए उठवना। ने सोमय रआ बाजा मेनेम गोटा हतु रेन होड़ोको के बरतिया दरोम मुलि रचआ इदि जकोआ।

हनूसआ बरतिया पाटिओ अयआ पुरा तेयरि केते जोकाकनेए तइना। भेंटेन नतेन बरन सअते मिअद ताल रआ बाजा सड़िआ। दारोमकोवआ सुसुन-दुरङ लड़इ आर बरतिया पाटी आ दुरङ सुसुन रआ लड़इ जोब बरनकिन रे नपम जना दो सुसुन दुरङ्को रआ लड़इ बरन सअते सेसेना चि-अम चियअम हेड़ा केदा, अम गे चियअम हेड़ा केदा? कुड़िहोन सआरेनूको कोड़होन सआ रेनकोके को कजिआ कोआ अर कोड़ाहोन सअरेनकोके कुड़िहोन सअरेनकोके को कजिआकोआ। कोड़होन के इनियआ बोकोते कुड़िलोओ तइन रअको

हेन्दोइया दुरङ रे दो बरतिया कुड़िहोन के इनियआ हगाते लोद तइन रअ को दुरङ ओपोतआ। ने भीरता रआ भाव ते बरन सअरेन पंइकि ओ किन दपरदड़ो ना। निकिन ककिन दुरंएआ मेनूदो एन मेरघरई रआ दुरङ अर सड़ीतन भाव रे अपन-अपन किरदरिकिन देकवेआं। ने सोमए भीर (वीर) रसि अर भीर दुरङ सुसुन होबा तना-

कले बोरोया
ने लेका सोमय रे
कले बोरोया।
कम धड़िया आ
अलेयआ हगाते लड़इ
कम धड़ियआ।
हाय!हाय!
सोना लेकन सुमदी के
हाय!हाय!
राय बरोया
सोना लेकन सुमदी के
राय बरोया।

ने लेकन ककला रआ दुरङ कजिजोरेलोदको सुसुन दुरङ ओपोतआ। धंगड़ा कोड़ाको बम्बरू जुलकेअते मेरघेरइ के को निरबियुरेया सोबेन मुलि। ने समय मोद सआ बरतिया दरोम रआ घमासान दो एटआ रआ पंइकि सुसुनकोवआ घमासान मिअद बाजा अर भावते सेसेना। नेअंके मेरघेरई कजियोओ तना। ने मेरघेरई रआ लड़इ ककला रे सुमदी भेंटे होबा तना। मेनेम ने लड़इ रे बरतिया च बोर बबुई डिगिरि केदा अर बोर बबु के कोनेयां तअको पंतिया। ने सोमय पंइकिआ सुसुन अर दारोमकोवआ अर बरतियाकोवआ सुसुन एनूका गे सेसेनाकन तइना। एन ककला रे डिगिरिकेद बराती के ओड़आ मुलिइ इदियोओ-आ। बरतिया के मिसा टोला रे बियुर केअते इनिगअ डेरा रे थेबआ तुकाओ तना। दारोमकोवआ ओड़ओ बरातीकोवआ सुसुन दल मंडोवा रेको बोलोआ। मंडोवा रे बरन सआ ते ओड़ओ एटआ समते सुसुन दुरङ रआ लड़इ सेसेना। सिदा उदुबाकन भाव ते दुरङ ने लेका सेसेना-

केकर लागिन आयोगे

झालइर मड़ोवा
केकर लागिन आयो
रोदेना लगाय।

बेटा लागिन आयोगे
झालइर मड़ोवा
बेटी लागिन आयो
रोदेना लगाय।

मंडोवा रे बरन सआ रेन धंगिड़िको दुरंएआ-

फलना गाँवक छोंड़िमने
बड़ी लाइट देखाएंना रे
कुद जाएके कचइड़ देमु
जामु थाना घर।

ने सुसुन दुरङ ओपोता इमतम जकेद सेसेनाकन तइना चिमतं जकेद चि ओड़आ बितर अते कोनेया-बोर कटा अबुंगकेअते सिलोट, अरड़ां अर सउड़ीको मंडोवा रे कको उडुंएआं अरको सुसुनेआं। एनूका गे एटआ तआ रे पंइकी सुसुनकोवआ सुसुन अपन-अपन सुसुन कला रआ उस्तादीको ओमेआं। होड़ोको निकुवआ मजा सुसुन ओपोता कला के लेलकेअतेको रसिका-ना।

टुण्डु रे बरनकिन भगवन च संसकिरिति ते मेनेम हरतिं जनाकिन अर छमा असि रे बरनकिन मोदरे पेरेम ते कुड़म-कुड़मकिन सटवया जोपोअर तना अर अकिनआ सुसुन कमिकिन टुण्डु जदा/नाअंदो नेरआ हु-बहु लेलेए मिअद हुडिंग इलाका रे मेनआं।

सरतिदो पंइकी ने ओपोता रे भिड़वन मेनूते तेयराकनेए तइना। इनिइ सुसुन एटेए सिदा सम्पोड़ो केअते अकड़ा के ओड़ओ अ-ए-के जीरे मोन्तोर तेए थोलेना। एनाते ढाल, तरउड़ी ते ओते रे बियुरतेए रचआ बियुर केअते अ-ए थोलेना अर जोम कटा रआ इंडिका रआ पेड़ेएते मिसाए बियुरेना। एना रआ कटाएने धूड़ा के कटुऊ ते सब केअते मोलोंग रे-ए टीका ना। नेरआ मने धरती एंगा के ओड़ओ लेलतनको के-ए जोरको तना। एनाते सुसुन इनिइ सुसुन इदि तना।

पंइकी सुसुन होड़ोपिचिद एआ सुसुन कहेके। ने सुसुन के पंइकी

सुसुन इतुवन होड़ोकोते सुसुनओं तना। एनामेन्ते पंइकी सुसुनकोवआ सनंगी कोम गेआ। ने सुसुन के सुसुन नतेन पंइकी सुसुनहरिया ते इतुन होबाओ तना। सिदा पंइकी सुसुन खलि अड़ान्दि-कोड़ंदि कोरे गे होबातन तइकेना। ने सोमय रे पंइकी सुसुन कला हतु रआ अड़ान्दी-कोड़ान्दी रआ मोकाकोतेओ अडुंकेअते दिसुम अते बिदेश जकेद अयअ अपरोब ए पसरओ केदा। चिमुं पंइकी सुसुन हरिआको ने कला रआ होरा ते झारखण्ड अते फदिल दिसुम केवको साबइसि केदा। सरकारो इन्कुकेए पुरस्कार केद कोवा। झारखण्ड रे दूरदर्शनओंगे पंइकी सुसुन के जीद दो-ए मेनूते रे अचुवा कना। नाअंदो चिमुं सांसकिरितिक, राजनीतिक, सामाजिक लेकन कमिको रे रे रैलिकोरे पंइकी सुसुन लेल धड़ियोओ तना। ने लेकाते पंइकी सुसुन रे उनुबर हिजुगा कना अर सुसुनहरियाकोवओ सनंगी पोसा कना। निकुवआ हाया गे सुसुन रे नवां कला के उदुबे रआ गरका-ए ओम केदा। सिदा एसेकर पंइकी सुसुनहरिया थाड़ा रे-ए सुसुनतन केना। एन थाड़ा गे नाअंदो पिरामिड रे सुदर्शन चका लेका कटुऊरे सुसुनोओं तना अर सनमंअन रे पंइकी सुसुन रे ओस्तदी उदुबे मिअद निइ चेतन रे मिअद तिंगुकोओ ते पिरामिड(चुकुबरू) बइए का-सिदानेलेका-का बिकासेया कना।''

नेएं दो पंइकि सुसुन रआ कानि। नाअंदो टुन्डु जना।

पंइखा नृत्य

एक दिन राँची दूरदर्शन पंइखा का नृत्य दे रहा था। बच्चे और बूढ़े बैठकर देख रहे थे। नृत्य देखकर वे आनन्द से लोट-पोट हो गए। अन्त में एक लड़के ने अपने पिता से कहा "पिताजी! यह पंइखा का नृत्य कौन सा नृत्य है? क्यों ऐसा नाचते हैं"

पिता ने कहा, "हाँ! तुमने अच्छा प्रश्न किया है। तुम सभी सुनो, अब मैं पंइखा नृत्य की कथा बताता हूँ।

"झारखण्ड राज्य की धरती न सिर्फ जंगल-झांड और खान खदानों का है, बल्कि सभ्यता संस्कृति और कला का भी धनी भू-भाग है यहाँ कई प्रकार के रंग-बिरंगे नृत्य-कला की बहार आदिकाल से चली आ रही है। उन सभी नृत्यों का संबंध किसी न किसी सांस्कृतिक, पर्व-त्योहार एवं पूजा अनुष्ठान से रहा है। इन्हीं नृत्यों में पंइखा नृत्य भी एक है। पंइखा नृत्य का प्रचलन उतना ही आदि है, जितना आदिवासी समाज में शादी संस्कार की संस्कृति है।

अब मैं तुम्हें पंइखा नृत्य क्या है? वह बतलाता हूँ। पंइखा का शाब्दिक अर्थ है, पंख का होना तथा पंइखा नृत्य का अर्थ पंख को फड़फड़ाना, पंख से युद्ध करना है। अतः पंइखा नृत्य का मूल भाव है वीरता प्रदर्शित करना दूसरे शब्दों में इसे वीरता का नृत्य कहा जा सकता है। मानो रावण सीता को हरण कर ले जाते समय जटायु ने उसी पंख से युद्ध किया था कि तुम इसे क्यों लेकर जा रहे हो बोलकर। पर यहाँ एक प्रश्न खड़ा होता है कि पंइखा नृत्यकार किसको झपटा मारता है या वह वीरता का प्रदर्शन कहाँ करता है?

पहले कहा जा चुका है कि पंइखा नृत्य का संबंध शादी से है। झारखण्डी समाज की शादी में लड़कों की बारात निकलती है और लड़की की बारात आती है। जब बारात आती है तब वह लड़की के गाँव के पास रूकी रहती है। गाँव वाले देख सुन कर जान जाते हैं फिर भी अगुवादार इसकी सूचना लड़की वालों को देता है। बारात पार्टी एक मोर्चा बनाकर रूकी रहती है। जब तक की लड़की पक्ष उसे परिछकर नहीं ले जाता है। अतः पंइखा नृत्य को राष्ट्रीय नृत्य या राजकीय नृत्य भी कहा जा सकता है।

बाराती को भी लड़की पक्ष से परिछने की सूचना अगुवादार के द्वारा दे दी जाती है। तब दोनों ओर से भिड़ने की तैयारी शुरू हो जाती है। इसी क्रम में पंइखा नर्तक भी अपनी तैयारी करता है। साज-शृंगार के दौरान वह सिर पर फेंटा के सहारे मोर पंख तथा लङ चिड़िया का पंख लगता है। कमर में धोती तथा बदन में पंइखा पोषाक पहनता है। हाथों तथा बदन में रंग-बिरंगे कपड़ों के फीतों से पंखदार, झालदार बांधता है। पैर में घुंघरू और बाजावाली पैरी पहनता है, फिर चेहरा को पीला रंग के टीकों से सजाकर हाथ में ढाल तलवार लेकर तैयार हो जाता है। मानो वन में मोर आकाश के काले-काले बादलों की गरज और बिजली की चमक को देख कर नाच उठता है। लड़की पक्ष बारात को परिछने के लिए निकलता है। पंइखा भी साथ में उसी ढाँक-नगाड़े, शहनाई और भेंइर की उसी बाजा में अपने पंखों को लहराते हुए चल पड़ता है। इस समय का बाजा मानो पूरे गाँव को बारात परिछने की ओर खींचकर ले जाता है।

दूसरी ओर बाराती पार्टी भी अपनी पूरी तैयारी के साथ थमी हुई रहती है। सामना करने के लिए दोनों पक्ष से एक ताल का बाजा बजने लगता है। परिछने वालों का नृत्य-गीत युद्ध और बारात पार्टी का गीत नृत्य का युद्ध जब दोनों में घमासान हो जाता है तब नृत्य गीतों का युद्ध दोनों तरफ से चलता है कि- तुमने क्यों देर की और तुमने क्यों देर की। लड़की पक्ष वाले लड़का को उसकी बहन के साथ रहने का व्यंग बनाकर गीत गाती हैं। इसी वीरता का भाव में दोनों पक्ष के पंइखा भी आपस में भिड़ जाते हैं। ये गाते नहीं हैं पर उसी मेरघेराई गीत और बाजे में अपना-अपना उस्तादी दिखाते हैं। इस समय वीर रस और वीर गीत नृत्य होता है-

हम नहीं डरेंगे

ऐसी युवा में
हम नहीं डरेंगे।

तुम नहीं जीतोगे
हमारे भाई से लड़ाई
तुम नहीं सकोगे।

हाय! हाय
सोना-सा समधी को
हाय!हाय

राय बरोया
सोना-सा समधीको
राय बरोया

ऐसा शोर गीत गाते नृत्य युद्ध होता है। युवा लड़के मशाल जलाकर चारों ओर दौड़कर घुमाते हैं। यह वक्त बारात को परिछने का घमासान तो दूसरी ओर पंइखा नृत्यकारों का घमासान एक बाजा और एक भाव से चलता है। इसे मेरघेराई कहा जाता हैं इसी मेरघेराई की लड़ाई (शोर) में समधी भेंट होती है। मानो इस लड़ाई में बाराती या वर बाबू ने विजयी हासिल कर लिया है और उसे ले जाकर वधू की पंक्ति में खड़ा कर दिया जाता है। इस समय पंइखा नृत्य और परिछने वालों का नृत्य चलते रहता है। बारात को उसी गति से एक बार टोली में घुमाकर उनका डेरा में पहुँचा दिया जाता है। परिछने वालों का और बाराती पार्टी का नृत्य दल मड़वा में प्रवेश करती है। मंड़वा में दोनों तरफ से फिर से नृत्य-गीत की लड़ाई चलती है। पहले बताए गए भाव से इस तरह के गीत गाये जाते हैं-

केकर लागिन आयो गे
झालइर मंड़ोवा
केकर लागिन आयो
रोदेना लगाय।

बेटा लागिन आयोगे
झालइर मंड़ोवा
बेटी लागिन आयो
रोदेना लगाय।

मंड़ोवा में दोनों पक्ष की युवतियाँ गाती हैं गाँव का नाम बदल-बदलकर

फलना गाँव की लड़कियाँ
अपने को वीर दिखाती हैं
दौड़ जाकर पटक दुंगी
चली जाऊँगी मैं थाना।

यह नृत्य-गीत युद्ध तब तक चलता रहता है जब तक कि घर अन्दर से वर-वधु के चरण धोकर सिलाट, जुवांट और खेर को मड़वा में नहीं निकाल लेते और नाचते उसी तरह दूसरी तरफ में पंइखा नृत्य करने वालों का नाँच अपनी-अपनी नृत्य कला की उस्तादी प्रदर्शित करते हैं। लोग इनके नृत्य प्रतियोगिता कला को देखकर लोट-पोट हो जाते हैं।

अंत में दोनों ईश्वर या संस्कृति से मानो पराजित हो गए तथा क्षमायाचना करते दोनों परस्पर छाती से छाती मिलाते हैं तथा आपस में सप्रेम प्रणाम कर अपने नृत्य कार्यक्रम को विराम दे देते हैं। अब इसका हु-ब-हू दृश्य एक सीमित क्षेत्र में है।

वस्तुतः पंइखा इसी युद्ध में भिड़ने के लिए ही तत्पर रहता है। वह नृत्य प्रारम्भ करने के पहले साज श्रृंगार करके अखड़ा को तथा स्वयं को मनमंत्र से बांधता है। तब ढाल-तलवार से जमीन में घुमाकर रेखा वृत्त बनाकर अपने को घेरता है तथा दाहिना पैर की एंड़ी के बल पर तेजी से एक चक्कर घूम जाता हैं उसी का धूल को उंगली से उठाकर मस्तक में टीका लगाता है। इसका तात्पर्य यह है कि वह धरती माँ को तथा दर्शकों को प्रणाम करता है। तब वह नृत्य प्रारम्भ करता है।

पंइखा नृत्य जन-जन का नृत्य नहीं है। इस नृत्य को पंइखा नृत्य के जानकार लोगों के द्वारा नाचा जाता है। इसलिए पंइखा नृत्य करनेवालों की संख्या अधिक नहीं है। इस नृत्य को प्रस्तुत करने के लिए पंइखा नृत्य जानकार लोगों से प्रशिक्षण लेकर नाचा जाता है। पहले पंइखा नृत्य की प्रस्तुति केवल शादी-विवाह के अवसर पर किया जाता था। वर्तमान में पंइखा

का नृत्य गाँव के शादी-विवाह के अवसरों से निकलकर देश से विदेशों तक अपना पंख पसार लिया है। कितने पंइखा नृत्यकारों ने इस नृत्य कला के माध्यम से झारखण्ड के अलावे देश को भी गौरवान्वित किया है। सरकार ने भी उन्हें पुरस्कृत किया है। झारखण्ड में दूरदर्शन केन्द्र भी पंइखा नृत्य को जिन्दा रखने के प्रयास में है। अब तो कई सांस्कृतिक, राजनीतिक, सामाजिक आदि कार्यक्रमों में रैलियों में पंइखा नृत्य देखा जा सकता है। इस तरह से पंइखा नृत्य का विकास हुआ है। तथा नृत्यकारों की संख्या बढ़ी है। इन्हीं की चाह ने नई कला की प्रस्तुति की प्रेरणा दी है। पहले एकल पंइखा नर्तक थाली में नृत्य करता था। वही थाला ही अब तो पिरामिंड पर सुदर्शन चक्र सा उंगली में नचाया जा रहा है तथा वर्तमान में पंइखा नृत्य में उस्तादी प्रस्तुति एक के ऊपर एक चढ़कर पिरामिड बनाने का अभूतपूर्व विकास किया है।"

"यही तो पंइखा नृत्य की कहानी है।"

चेड़ेंअटा

कुडुम्बाबुरु, जोजोबुरु, बुरुबोंगआ कोयों रे भण्डरा लुतुमे हतु मेनआ। हातुते सिंगितुरओ रे बिर, सिंगिअयुब रे तजना गड़ा, कटाजम्बड़ा रे उलीडीह गड़ा अर बो'ओ खुन्दुड़ी रे तजना गड़ा सेनेगुटु, किसिरकेला हातु मेनअ। मदुकमडीह, पुटकलडीह, चण्डीडीह, कुद्दआ अर भोगता मदुकमडीह ने मौजाहातु रअ मोड़ेआ टोलाको मेनआ। ने-लेकागे सिंगितुरओ रे रूण्डालोर, बुड़ीलाता, सिंगिअयुब रे कुलाटुकु, बिंपुटआ, सुकुरी गड़हा, तयनइकिर लेकन लुतुमन टयदको ने हातु अतोमकोरे मेनआ। ने तला रेगे देविगुड़ी, बुरु-इकिर मंड़ाबुरु, चण्डीपिड़ी, जयर देसाउली, जीलुजयर, अकड़ा अर ससं-मसड़ां लेकन ठयद-को मेनआं।

एटेएरे ओको सोमय रआ कजि ने हातु रे जाँ राजा अर राजाआ राजादानी अर भण्डार ओड़आ तइकेना। एन टयद के भण्डार कोचा कजियोओ तना, मेन्दो राजादानी रआ चिना बनओ नगे भण्डार ओड़आ। ने भण्डार ओड़ओतेगे हातु रआ लुतुम भण्डरा सकी जाना। एनामेन्ते सिदा सोमयाते ने हातु राइजिनीजितते, उदामोओते, सोलोटोओते, सांसकिरितिओते ओड़ओ धारमओतेन रअओगे मुल तइकेना अरमेनआ ने दिसुम रेयआ।

ने हातु रे जेटे-सा, जरगी-सा अर रबं-सा हिजऊ-सेनओ बियुरलेका गे बोंगाबुरु, कमिउदम, धरम-करम, सुसुनदुरङ,परब-तिहाए, सुकु-रसिका ओड़ओ नेग-दस्तुरको ओतेसिरमालोद सोंगे-सोंगे गोटा सिरमा पड़ि-पड़िते सेसेनाकन गे तइना। ने कमि बारोमको सम्बड़ाव नतेन हातु रे मिआद पाड़ां, मिआद मुण्डा,

निकिन देंगानं कोटवार, पइनभरा लेकन पदाबि रे होड़ोको बालिआ कना। ने कमि बारोमको सम्बड़ाओतनको बदला रे ओतेको हिसाकना। राजा के ओमाकन ओते राजांस च मझिआस पांड़ांआ डालीकतारी, मुण्डाआ मुण्डाई, पइनभरा अर कोटवरआ कोटवरि ओते-ते लुतुमा कना। निकु सोंगे रे ओड़ओ बर-अपिहोड़ोको सदसे मेनआ कुवा मेन्दो निकुनं ओते हिसा बनओ। ने लेका नेरेन होड़ोको चेतनुदुबन होरा रे अपन मोने-सनांलेका मजाको सेनहोराआ, लन्दा-जगरा, सुसुन-करमा, जारू-दुनुबा अरको कमि-उदमा। सेवा कमिकोगे नेरआ मरंअआ हेके जाति पतिअते। गोटा हातुहोड़ो मिआद नाता गोता रे बकिड़ि बियुरा कना।

मिन सोमय रअ कजि हेके, नाअंदो रबंसा रे मोद अठउरि लेका-ए मागे डुन्डुर केदा। जनव सिरसा लेका-गे नाअंदो धंगड़ाहोनको बइंठी कातु एमनको सबकेते अटा बइनं मद रआ अटाठुंगी अर अटाचरि-ई बइ-चटआको अचुवा कना कुरूमुटु चेड़ेंइअटानं। अटाठुंगी अर अटाचरिई बइकेचि अटचरिइके लेसेरदिरी रे मरको हिरगड़ां जुरूडु जदा। एनाको बइकेचि नाअंदो ओकोए दो पड़ाओ ओकोए दो पड़ाओ अकमकेतेर दो ओकोए उरिईगुपि बगेकेतेर अटाजीलनं पुटकल सोसोए, डाउलुपुड़ि ओड़ओ लोंवा सोसो-ए कोटे-ए जमाको अचुवा कना, कोते अयुमेम ठा-अ, ठू-उ, मेनेम बिर रे संगिपतिते दारू मगोओतन लेका अन्दोड़ोगिड़िआ कना।

अयुबतेरे नअंदो जोतो धंगड़ाहोनको मिदतअरे ओड़ओ कुरूमुटु अपन-अपन दिरिजूला बइको अचुवा कना। ओकोए दो एनाको बइकेचि तिंनं जटाको दड़रि-ए अचुवा कना। सिरंसोटों ओकोयआ दो होड़ोमो रे लुपुड़ि जोरोवा कना। चटुकेचओ अर ओड़आ रअ सुनुम सिसिको अउकेचि अपन-अपन जूला रे सेंगेल जुलकेचि सुनुमलोद पुटकल, लोवा अर डाउ लुपुड़िको इसिनबइ तना अर अटाको जील तना। निदाव निदा जना, अको ओड़आ रे नाअदो-को ककलाओ तना "एला हई, मण्डिजोम बोदे! कारेले गिति-ई तना।" ओकोए-दो चिमुंसा लेका ककला जदए मेनजदा, "नमुं रबं रे जोमनू रटि रिड़िंकेते होला-होदेराते अटाबइ बडुई रेगे-ए आटाकना। अपन दो रबं रे जी राटि उडुंगिड़ियोओ तनलेका अटाकरओ तना।" मेन्दो धंगड़ाहोनको बुला कना अटाजिल रसिका रसि रे। बुरसी-अराड़ाँ नाअंदोको तिकिनजना, अटाओ जील तेअर जना। सोबेन मण्डिजोम-गिति-ई बुरुमनं अपन-अपन ओड़ाओतेको सेना

अपनदड़िन जना।

सेतअतेरे ओड़ओ बिरिद तोरसा जिरूबतनलोद भुरसी सेंगेलरेको तेरसं जदा अटा चिल्का जीला कना लेल फदर्सि तनलोद। टीकि एनहुलंदो नाअदो गोटासिंगिई जेटेकेदा। धगड़ाहोनको उरि-ई-केड़ा गुपि पीड़िरेको जगर तना "तिसिंदा सेकेड़ाबु हरकोवा, बुर्दुलुउको उडुंओंआ, "हेआ।" कोमेपेन तना। सोबेनको चिउला अयुबोगा मेनेयआगे-को उडुऊ तना। ओकोए-दो मेनजदा "तिसिं बोदेयोका अयुबोओ तना?" "हेया, सिंगिहोनं तेबागोओ रेदो होनंबु उदुर डुम्बुइतइआ होनं।" जी रे उकुल-बुकुल तना इन्कुवआ चेड़ेंअटानं बुर्दुलुऊ सब नतेन। मेन्दो अयुब जनगेआ, होनको च ओकोयआ कजिते चि अयुब तबोओआ?

नआंदो सिंगि अउरि हसुरोओलोदगे उरिईको ओड़आ मुलिको उढ़र एटेएकेदकोआ। टीकि सिंगि डुम्बुई तोरसा उरिई-केड़ाको अदेरकेदकोआ। अपन-अपन लोटा सबकेतेरको तेअरा कना, लेलबेड़ा तनाको कोते बुर्दुलुको उडुंओंओ मेनआ-न धंगड़ा होनको। बुर्दुलुऊको उडुं तना कको जो-रा कना मेन्दो चेतन रेको लेलओ तना, ओते रेदो-का। नेते हेन्ते नाअंदोको निर बियुर जदा बुर्दुलुऊ सबनं। "नकुवा नते" ओकोए मेन जदा दो ओकोए ककला जदा- "हन्तअयाको उडुं तना।" ओते रे होनको निरबियुर जदा बुर्दुलुऊ सबनं दो सिरमा रे चड़ें चिपुरूदको जलातिं तना इन्कु जोमनं। तयोम दो गासागासा बुर्दुलुऊको उडुं तना। नाअंदो लोटा रे चेड़ें अटानंको जोगव जदकोवा अर बुसुऊ च सेरेदते लोटाको मुन्दिद तदा। तरालेका दो अताजोमकोनं छिपा-थाड़ि रआ दआरेको हलंडोबे जअकोआ। तयोम दो ओड़आ रे नाअंदो तरा डुबा-थड़िकोरे दआ रे हलंड़ोबे लेदकोके चउलीलोदको अताकेदकोवा, जोमकेदकोवा। ओड़ओ निदा नाअंदो मण्डी एमनको जोमकेद चि मोद रे बुरसी-को चिरूब तना। जिरूबतन-जिरूबतन ओड़ोओ चेड़ेंअटा रआ कमिकजि बयुऊ तना "सेतआदा चेड़ेंअटा नुबआ रे बिरिद जनलोदगेबु सेना। गपरका-दो-का, बिर होरा रेगेबु नपमका। दोलाबु नाअंदो गितिइतेबुआ, अरड़ाँको तिकिन जना, सेतआ कारे बोदेकबु बिरिदा।"

"हेयादोलाबु लड़ा सेतआ सेकेड़ाबु..........सेना।" मेपेन लोद अपन-अपन गुयु-ओड़आकोते गितिइंतेको सेनओं जना। सोबेन नाअंदो चेंटेअनगेको गितिई जना। ओकोयआ-दो सेकेड़ा दुडुम कहिजऊ तना अर मोठईते मेद-ए जपिद

जदा। दुडुम बाअकञ अर सेतआ सेकेड़ाञ एयोनोओ-का मेन्ते!

तोबे सेतआ तयोम सिमको रनआ होबा लेना, मागे चण्डुऊ रआ रबं-दो-रबं, रबंलेका गेआ। चेडेंअटा रआ जो-सोरे कोते मसकल लेना चि कमसकल लेना, अपन-अपन ओड़आ रआ बुरसी रे अटाको थेरसं जुगुतु तना अर बुर्दुलुऊ लोटा, अटा ओड़ो-ओ बुर्दुलुऊ गुतुनं कटई जनुम सबकेद चिको उडुं जना अपन-अपन। अयर-तयोम हेपेतालोदको-सेनओं तना, मसड़ाँ अयर टीकि जोजोबुरु चेतन होरा-रेको जमन-नपम जना अरको सलइकेदा, "दोलाबु झूंडु लतर रेबु अटाया अर ने चेतन सआ रकब रूड़ाकोद-ते चेड़े कोबु एटेएकोवा, टीकि चेड़ेंको लतरतेको निरा अर बुर्दुलुऊ लेलकेतेर जोममोनेए चिको अटावगा।" ने लेकागे नाअंदो सलइकेद चि जोजोबुरु-कुडुम्बा बुरु गेना झूंडु लतररे अपन-अपन हेन्ते-नेते ठयद रे अटाको रोपाओ केदा। बुर्दुलुऊ लोटा ओड़ोओ अटाठुंगी एमनको सोबेन मोदतआ रेको दोबइकेद चि सोबेन चेड़ेंअटा होनको चेड़ेंकोके एटे-ए मेन्तेको रकबतन चि घुसा लुतुमि धंगउाहोनर बोलमोन दो, "दोला हई अयर हतड़नपेलिं बहरसआ कोओवा।" मेनेलोद बहरसआकिन दुबा कनगेआ।

नअंदो तरा धंगड़ाहोनको बुदुवा, सोहराई, सोमा, बन्धना, मंगा लेकनको चेतन सआ निर रकबसिदा जनचि मराको धुनिल जदा दिरिकोते, दिरिको रअदो नेमन जेतनकोम बनओ। बनोओ नअंदो घुसा मुलिगे झूंडुअते कुला बोंगोरकेनए फलंगओन जना। कोकोरोम्बो बोतोए सम्बड़ओ केद चि निर तना। बोलमोन दो कुला लेललिई चि-का, इनिइओ निर केदा। सकोर-सकोरतन जोलाकिन निर रकब लआ अर निरतन-निरतनलोदकिन मेनजदा, "ओचोवा खड़ाँको कु ... कु ... कुला अञमुलिगे निर जना।"

उदुबतन गेआकिन अर ओड़आ मुलिगेकिन निरतन चि ओड़ओ होनकोको निर जना बोरोते जोतो अटा-लोटा एमनको निरबगे-केतेर। मोद निररेगे हातुको तेबआ लआ अरको उदुब तोरसा जदा, "अब्...अब्....अबु बिरे, कुला हिजुगा कना! अञमुलि-गे भोंगोरकेनए निर परोम जना। कोकोरोम्बो बहसअतेञ बिरिद निर जना बोरोते लोटाकोएन्तेगेले निरबगे तुका तदा।" घुसा भुरसी जिरूबतन तइकेनको के-ए उदुब तोरसाको तना। एन्का गे नाअंदो सोबेन धंगड़ा होनको उदुब केदा।

ने कजि अयुम केतेर हातुहोड़ोको के भकुवाओन रआ कजिदा कहेके।

बोंगोरकेन गोटा हातु रे ने कजि पसारओ जना चि- "अबुवआ बिररे चेड़ेंअटा होनको कुलाको नमलिजा अरसमबोरोते-को निर जना!"

ने बुरसि जिरूब तअतेगे नाअंदो जनाओ लेकासेंदरा-ई रआ कजि ओनचर जना, "दोलाबु सेन्देराइया कुला!" "जू कोटवर रआलिपे," घुसा-आ अपुते कजि केदा। नांअदो हातुरेन कोटवर राअजन चि सोबेन टोला रे ने कजिई ओम तका मेनते-ए कजि संगि जना। नी-सोबेन टोला रे कुला सेंदरा कजिई ओम केदा। सोबेन टोलाहोड़ो ने कजि अयुमकेदको जमन जना अपन-अपन हतेअरको सबकेतेर। अयर-तयोम सेनओ जनाको बिर मुलि, जोजोबुरु तअतेगेको दड़ाँ एटे-ए केदा तराहोड़ो दो। मेन्दो बिर अतोम रे सोबेन टोला रेन होड़ोको जमन जना ओकोए सेनओ जनको। ओड़ोओ मिसा नाअंदो मर नाअंदोबु दड़ांया मेनते कजिजन चि बिरको बोलो जना। सिसिबा लोर दड़ां-दड़ां चबा-ओ तना चि का! कुला क-ए नमओ तना! कुददआ टोला रेन भोमभा मुण्डा नाअंदो-ए मेन जदा, "कुरिईआ कोतआ रेन कुला? सोसोजोम होनको बेदा तना जाअ? "इदा, होनकजि सेताबुऊ! कुला चि-भई तुयु? चिका-निई जाअको लेललिइआ अर समबोरोतेको निर जना जाअ?" जगर इदि, दड़ांइदितन गेंआको चि अचकागे कुला भोमभा केगे-ए सोलकाकिइया, बरसा लेकाकिन घेंड़-मुडिआ जना। एनाते एमन रेन बरहोड़ो लेका-ए सोलका बटिकेदको चि ओड़ओ फोंगोरकेन अयरतेगे-ए सोरेन जना।

गोटा बिर ककला जना, "निरपेआ......निर.....पे! कुला सोलका जदकोवा।" तरालेका बिर अतोम रेगेको तइकेन होड़ोको दारू रेको निरदेए तना अर होनकोकेदोको रचआ उदुर रकब जदकोआ दारू रे।

नाअदो सोबेन होड़ोको बिरातको निर उडुं जना। दारू-कोरे देगाकनको हड़गुन जना अर होनको-दो हातुमुलिको निर-सेनओ जना। लेलकेदकोवाको बर-अपि होड़ोलेका कुला-ए सोलकातदकोआ। मेन्दो कको जखमगरंआ कनाअर एटआ सोमते नाअदो ओड़ओ कुला दड़ाँई सासे कहोबा जना एनातेदो सोबेन हातुतेको रूड़ा जना।

नाअंदो ओड़ओ कसेनठोओलेन होड़ोको जमन जना अरको कुलिदरोम तना, "चियातबु कुलादोपे नम लिजा चि-का?" "नम लिईयालेआ, चिमुं होड़ोको कुलालोंदकों ओपोता जना। मगर कले गो-ए धड़ियाई जना।" सेनकेन को उदुब केदा। मंड़ि-मंड़िते ओड़ओ-गे होड़ोको जमा संगिन जनाअर नाअंदो

ओड़ओ को बिचर, सभा केदा। रकम रआ बिचर हिजुऊ तना ओकोए मेन जदा, "निसुकन संगितें-संगि होड़ोबु सेना अरबु सेंदरा लिआ ओड़ओ मिसा?"

ओकोए कजि केदा, "काया, कारे कबु डुकितआ!" "कुला जुदि सेंदरा-गे मोनेयोओ तना दो आसे-पासे हातुहोड़ोकोबु राअजमा केतेरबु सेना!" -ओकोए दो कजि केदा। नेलेका कजि दो बेसेए संगिजना।

लेंगा मास्टर नाअदो मेनकेदा चि, "कायातबु, अञआं कजि मोसाबु अयुम लेका। कजि दो नेका मेनआं चि अबु मिआद दरखासेबु ओलेका अर एन्डे सोबेनकोबु टेपा-सही लेचि थाना रेनकोबु ओमाकोका! भोगता मदुकमडीह रेन अबुवआ चौकीदार चमरा प्रधानलोद उपुन-मोड़ेंहोड़ो खूँटी थाना तेबु सेना। थाना रेनको बन्दुकुको अगुईका अर इन्कुलोदबु सेंदराआ!"

मजा, मजा मेनेलोद ने कजि सोबेनको मनतिं जना अर लेंगा मास्टर नाअंदो सेकेड़ा-गे दरखासे-ए ओलतब केदा। सोबेनको टेपा सही थब केदा एनाते चौकीदार लोद थानातेको जना सलालेन होड़ोको। थाना रे दरखासे ओमकेद चि चौकीदारी हड़म मेताको तना ''अलेयआ बिर कुला हिजुगा कना, तरालेका होड़ोकोके-ए हबकओकेद कोवा! एनामेन्ते अले गोटा असे-पसेरेन होड़ोको जमाकोदते कुला सेन्दराले सेन तना! अपे जुदि इनि-ई सेंदरा रे अपेयआ बुन्दकुलोदपे देंगा ल़ेलेरेदो इसुगे ठउकाओवा? चौकीदारआ कजि थानादार दोड़ो-ए मनातिं गेआ। सेकेड़ागे बरिआ सिपाईकिन बन्दुकुलोद हिजुऊनंकिन कजि तेयारेन जना। एन सोमय खूँटी थाना रे कमिको संगि कतइन तनकेना। चियअते चि खून्टी इलाका रे ने सोमय कुम्बुडु-जुम्बुड़ी, रे-ए-रेपे, गो-ए गोपो-ए एमनको कोमगे च कउतरगे तइकेना। होड़ोके बोरो तइनकेना दो बिर जनोवर, बोंगा-बिंग कोवआ-गे। मेन्दो इन्कुओ बेकरन रेदो होड़ोकोरे कको सोजेना नगे जनवरकोवआ अहर मनोवा हेके। जनोवर गेको बोरो तना, सोंजोको नपम जन सोमय रे समबोरोते खींसिलोद जी रआ ओकोलेका ते हइन होबा धड़ियोओ तना जेतए क-ए कजि धड़ि तना नेआ।

नाअंदो निरे-सेने मोद घंटा रे कुललेन होड़ोको रूड़ा जना। सिपाईकिन दो साइकिलतेकिन हिजुऊ लेना। नते हातुरेन सोबेन होड़ोओ कुला सेंदरानं मण्डी जोम-नू केचिको तेअरा कना। निंतमदो फोकोतोनोओ गे अटकर जना, सोबेनकोरे नवा सासे बोलो जना सिपाईकिनर बन्दुकु लेल जदलोद! बिर हातुते संगिन रे बनओ, लन्दा-जगरलोदगे बिर तेबआ रे हेड़ा गे बनओ। जोजोबुरु-कुडुम्बा

बुरु होरातेको हड़ागुन जना। बिर अतोम रे जिलिंगा होराते बो-ओ खुन्दुड़ी रे बिरटुण्डु सउड़ीपीड़ि जकेदको पन्तिन जना। सिपाई बन्दुकु हरिआकिन दो तलामला कुला नमलेन सआरिकिना।

"मर हई नाअंदोबु दड़ांया," कजि चल कजि तनलोदते बिरको बोलो जना। नाअंदो फोकोतोगे अटाकरओ तना, चिल्काते चि बन्दुकु-गुली-दं मेनआं? तराकोरेदो बोरोओ मेनआं! कुला मेनलेरे ओकोए चि क-ए बोरोया! जोममे न-ए जोम-मे जी बारिदंए अगुमा मेनाअन।

दड़ांतन-दड़ांतन ओड़ओ सिसिबालोर परोम जना, कुला क-ए नम जना। मेन्दो कुला संगिन रे क-ए सेनाकन तइकेना। ठीकि सिंगितुरओतेको दड़ांइदि तना अर कुलाओ सिंगिअयुब मुलि, अको सेंदरातनको सआगे समंकेते-ए बुरुम हपाकना। दड़ांतन होड़ोको लेलनम किईया, कुला-दो निरफिकिर-ए बुरुमा कना। सोबेनकोके कजि चलकजितेको उदुबआकोवा, बन्दुकु सबन सिपाई एनसआ रेगे मेनआकिना, सेकेड़ातेको गाऊई के-एकिना। नाअंदो सिपाई दारू दनंते कुला के-ए टोटेकिइया, मेन्दो कुला क-ए ठोव जना अर बोंगोरकेन होड़ोको मुलि-ई सोरेन जना। सोबेन नाअंदो नेते-हेन्तेको निर-बलए तना, ओकोए दो दारू रे-ए निरदे-ए जना। ओकोए-दो जी नम-नमकेतेए निर बंचओन तना। 'कन्दना ओड़आ रे कांदु-को मेतइआ दारूरे-ए देएतन सोमए गे कुला देंआसअते देअरेगेए रूबा हबकव बटिकिइ चि ओड़ओ अयरतेगे-ए घसकओन जना। सोबेन एन जपआ रेन होड़ोको कोकोरोम्बो नाअंदो कन्दना के हरदुऊ रेको अचुन जना। कुला-दो जेताइमुं क-ए ठोओ जना, तयोम दो सिपाई कोरेओ डीड़िकोम जना, मिआद दो अयुबो अयुब तना। ओड़ओ तरालेका होड़ोकोरे बोरो बोलो रूड़ा जना। तरालेका होड़ो बिराते को घसकओ एटेएन तना।

तरालेका होड़ोको संगिपति-ते गोओतेयआ बइकेते नाअंदो कन्दुकेको गो' ओ अउकिइया। हातुरे ने कजि उनव जना, "कन्दुके कुला हुवआकिइया।"

सिपाइकिन नाअंदो कन्दना के अस्पताल इदिई रआ सलइकिन ओम केदा, "दोला अलिंलोद-गे नीके खूँटी अस्पतालतरालेका होड़ो गो 'ओ इदिइपे, पुरआ क-ए जखमा कना रानु एमनको नमकेरे सेकेड़ागे-ए बुगियोओआ?"

ने लेकागे एनातेदो अस्पताल को इदिकिइया। सोंगे रे सिपाईकिनो तइकेना। अस्पताल रे इन्किनगे होबालेन होनोबाकोकिन उदुब केदा। एनाते

रानु नम रे जेतन टेनेकदको कहोबा जना। अस्पताल रे डाक्टर-ए लेलकेदा, कन्दना पुरअ क-ए जखमा कना। कुलाआ कटा-पंजा बारिंगे मेनआं। ने कजि नी अउतइ होड़ोकोके रानुओमाकोलोदए उदुबकोवा।

नाअंदो निदाओ निदा जना, एनामेन्ते एमन गे तइअंएन कजि बइ जना। गोटा निदा खूँटी अस्पताल रे तइअंजन चि गापातेरे सेतआतेरे ओड़ओ-गे जोमे गोसो-ए रानुको नम जना अर छुटी नम जना। (कन्दना जोड़ापुल जपओ रे तिरिलडीह हतु रेनिइ तइकेना, भण्डरा अयआ मामुहातु रे सुकरा-आ ओड़आ रे तइकेना अर डिन्डातेगे-ए हड़म जना। नी-गे खूँटी मंडा रे जनओ सिरमा बगतिआ-ए बोलोतन तइकेना। हड़मजन चि नाअदो कमिको कए धड़िजन चि तिरिलडीह रेन होड़ोको मेनकेदा, "नाअदो मामु नी-हन्ड़ेगे मरए जाँ चिकाओ-का अले इदिया?"

"इलाया जीउदन बारि अञके कमि देंगआञा नाअंदो अपे-पे इदिया, भला ओकोए बे-से मेताञा? नेरेगे मर अयंआ जीदन लीला-ए टुण्डुतरेदो चिल्काओवा?" सुकरा हड़म मेनकेदा! "जेतओ-का चिकओवा, मामु! अमआं कजिओ मजागेआ, मेन्दो नीयआ जिदन लीला टुण्डुजन रे जुदा रेगेदंएम जोगाओइआ! अर अयआ एंगा-अपुकिनआ ओतेहसा क-ए नम धड़ियआ। नाअंदो हड़म-दुडुम, गो-ए जनतेदो मर अयआ एगा-अपुकिं ओते-हसा-ए तेन नमेका? अर अनपुरतेए सेनेका! नेअ मेन्ते अलेसनं तना!" तिरिलडीह रेन कन्दनाआ हगाको कजिकेदा। ने लेका टुण्डुरेदो कन्दना के गोयोओ सिदा हगातेतको इदिकिइया। परबकोरे धड़ितन बइरे-ए हिजुऊ सेनओं जना। मजालेकागे-ए तइन जना)।

गपातेरे नाअंदो रूड़ा लेनाको अस्पतालते, ओड़ओ हातु रे एन जपअकोरेन इनि-ई लेलनंको जमन जना। लेलबेड़ा-किइअको घाव-दो डुरि रे अर मोयोद तरन रे मेनआं मेन्दो जी-दो मजा लेकागेया-ए।

एनातेदा ने जनामा रेगे घुसा-आ अपुते सोहराई हड़म मेन जदा, "इदा कुला दो, कुला तइकेना चिभई बोंगा? हातुको बगड़वकन रे नेकन जातिको दिस्तरेना! मेन्दो एन्कादो कअटकरओ तना। हातु बगड़वाकन रेदो हातु रे होनं ओड़ओ गे-ए धिंगिई तेयआ। मेन्दो ने होनोबा दो एन्का कतनआं। दुडुमाकन कुला चबिं रगोड़ोई रेदो-ए हुवआगेअदं।

ओड़ओ अयरते-ए कजिकेदा, "बा-बुरु, बोंगाबुरु रे चियआ मेन्तेबु

गोटा रम्बड़ा जदा? चिल्का एनामेन्ते चि रम्बड़ा रपुद केरे बुरुबोंगा-ए हंड़ावगा। चिल्का रमबड़ा जन्ती रे रापुद जरे गुड़ुगुड़ु सड़िआ एन्कागे बुरुबोंगा कुला रआ रूपु रे हातुरे-ए रूबेयाको मेनेआ हड़म होड़ोकोकजि तदा। एनामेन्ते बाकटब हुलंबु गोटा रम्बड़ा जदा। मेन्दो होला च ने होनोबा रआ दो जाँ बोंगा ओड़ाँजन लेकादो कअटकरओ तना। बिर रेदो रकम रेन जनोवरको मेनआकोवा, बंउतरकोवा मेनेकजिदो-का। सिदाअते लेलउआ कना, कुला निदा गोड़ाँअते उरि-ईको-ए गो-ओ उडुं इदितद कुडुम्बाबुरु रआ झूंडु कोरेको लेला कना। सेंदरा लिई च चेंड़ेंअटा होनको नमलि-ई कुला-दो अ-ए तेदो जेतायआ क-ए हइन तदा अर अलो मरे-ए हइने-का! नेआनं रतन पांड़ाँ हड़म उदुबोओका। अयआ ओड़आ राचा दुअरकोरे गे-ए बोंगा-दोड़ोम तका।

"मेन्दो अबुवआ पाड़ाँ ने कजि-ई मनतिंआ तोबे-दो?" भोजा हड़म मेनकेदा।

अयरते ओड़ओ सोहराई हड़म कजिकेदा, "नेअदो मनातिंआकन कजिगे हेके! बोंगाबुरु बेजइं कजि चि हेके? जरगी रे खेतिबती-सा रे रोवानं बबा बिअड़ाँ हातु बितर रे जांयअ तेयारा कना अर पाड़ाँ जुदि ओकोलेकाते क'ए कोदेलेटे परब चा बोंगा तदा, तोबे-दो बबा रोवा च कोदे रोआ कमि एमनको मना मेनआ। ने सोमए रे जुदि एन किसन पाड़ाँ के मिआद अरआ सिमअर तपन नतेन चउलि एमनको उदुबई जलोद जिमाई जनते बताऊली कमनतिंआकन रे इनि-ई रोवा धड़िया तना!"

"हे, नेअदोबु लेलउजद गेआ।" सोबेनको कजिकेदा। "ठउकओ-गेआ ने कजि पाड़ाँ हड़मतआ कोटवर-ए उदुब तेबएका! गपा सेतआ पसरा रे कोटवर के ने कजिबु उदुब संगिअइआ।" ओड़ओको मेनकेदा।

एनाते राम मेनकेदा, "गपा सेतआ पाड़ाँ हड़म पालकोटे-ए इरिनं-ए हिजुगा इनितआ एमनगे सोबेनकोतेबु जगर संगियाइआ ओकोए-ओकोए बुधु तआबु सेनतना इन्कु! "हे, तोबे नेअगे मजाओआ" सोबेनकोते कजितोल जना। नाअंदो ने लेका जपगर बिचरजन चि तयोमदोको अपनदड़ि जना। दआ-ए गामा तदा, नवागोड़ाको तेअर रआ सोमय-ए ओमतदा। टीकि गपातेरे पसरातआको जमन जना तरालेका। पाड़ाँ हड़मो टीकि पालकोटे-ए इदि-ई हिजुगा कना। नाअदो एनकजि के उदुबनं कोटवरगेको अरड़ां जअइया। लन्दा जगरतन लोदते ओड़ओ कोतवर-ए मेन जदा "मरातबु अपेगे जगरेपे!"

"काया मरतबु अमगे जगरेमे!" मेपेनतनलोओ नाअंदो पाड़ाँ हड़म मेन जदा "चिकन जगर?" कोटवर ओड़ओ पालकोटेएलोद कजिलन्दा तना, "क-बा जगर-दो नेआ चि चेड़ेंअटा होनको नम सेंदरालि-ई कुला, कुला चिमई अबुवआ ओकोबोंगाआ रूपु तइकेना। ओको रकमते ओकोबोंगाको ओड़ांकनते-ए दिस्तरेन जना चि चिल्काते मेन्दो ओड़ओ अयरते अलो-ए दिस्तरेनका। नेअ नतेन अबेनदं अगोम रआ कजि उदुब बिचरा कना?"

"ने कजि रे बेजञ चनआ। अञतअते कजितेबआ जनआ-गे अगोम हेके! कोलोमसिंरे, मागे परबरे बुरुबोंगा-लोद सोबेन बोंगाको बोंगा-ओ तना!" पाड़ां हड़म मेनकेदा। "हे, नेअं जगरनं गेदंले अपरड़ाँ तना, बरअठाउरि रेदो ने परबो मनतिंओ गेआ!" ओड़ओ कोटवर पालकोट-ए, कोटे-ए लोद-ए कजि केदा।

सोबेनकोवआ पाल-सबड़ो एमनको नाअंदो-ए कोटे-ए तेयर केचिको अपन दड़िन जना। अपन-अपन ओते आड़ि रे कमि उदम, सी-चलुतेको सेनओ जना। ओकोए-दो नवागोड़ा तेअर तना, ओकोए दो गोड़ा-गुडुलनं-ए सी रूड़ा तना। मजा लेका गोड़ापीड़ि रबं-ए जोमेका मेनेलोद। अठाउरि दिलं नाअदो पाड़ाँ-ए कोलोमसिं बोंगा तना, धंगड़ा धंगिड़िको रसिका तना सुसुनबु नएके मेन्ते। कोलोमसिं गपातेरेअते-गे कोलोम रआ बुसऊकोको रकब-हुण्डि जदा, अर ने बुसऊको उरि-याओ जनाते साल बारि रआ पुरना कमि पुरा जना। बुसऊ रकब ईलि मण्डी छबा जना।

नाअंदो मागे परब मनातिं रआओ जोगाड़ि रेको अचुवा कना। सुरगुजा सुनुम लेन गांड़िकोरे, अदवा चाउलि होलोंनं। गोटाहातु रे खसी किरिं नतेन बिहिरि तना दो धंगड़ा-धंगिड़ी मागे बुरु रआ तेअर रेकोवा। ठीकि मागे चण्डुऊ पूर्णिमा रे मागे परब रास-बासते मनतिं जना।

मागे तयोमते फागु चण्डुऊ रकब जना। रबं निर जन चि जेटेसा हिजुऊ जना। सेतआ-सेतआ सी-चलु अर ओड़ओ तिकिन-तिकिन बिर सेन्दरा कमि एटे-ए जना। बिर रे चेड़ें-चिपुरूद, कुलए एमनको नम सेंदराको तना। मेन्दो तयोम दो चेड़ेंअटा रे होनको नमलीई कुला जेता रे क-ए लेलइरिन जना नगे-ए नम जना। इदो ने बिर रेगे-ए तइन जना, चिभई ने बिर रे अयरते कोते-ए सेनओ जना। चिभई ओको बुरु बिर बोंगाआ रूपु-गे तइकेना। मेन्दो, एनातेदो बिर-बुरुकोरे मजागे, जेतानियआ बोरो-बोतों कतइन जना नेरेन होड़ोकोरे।

चिड़ियां लटकाना

कुडुम्बा पहाड़, जोजो पहाड़, पहाड़ी देवता की गोद में भण्डरा नामक गांव है। गांव के पूरब में वन, पश्चिम में तजना नदी, उत्तर में उलीडीह नदी और दक्षिण में तजना नदी एवं सेनेमुटु-किसिरकेला गांव है। महुवाटोली, फुटकलटोली, चण्डीटोली, कुदाटोली और भोगता महुआटोली इस मौजा के पांच टोलेक हैं। इसी बीच में देवीगुड़ी, बुरु-इकिर, माड़ाबुरु, चण्डीपीड़ि, जयर, देसउली, जीलुजयर, अखड़ा और श्मशान जैसे स्थान हैं।

आरंभ में किसी समय की बात है, इस गांव में किसी राजा की राजधानी और उसका भण्डार घर था। उस स्थान को भण्डार कोचा कहा जाता है। परंतु अब न ही राजधानी की पहचान है और न भण्डार भवन की। इस भण्डार घर से ही इस गांव का नाम भण्डरा पड़ा। इस भांति अतीत से ही यह गांव राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से इस क्षेत्र का मूल स्थान था।

इस गांव में जैसे कि गर्मी का मौसम, वर्षा की ऋतु और जाड़े की ऋतु आती है और चली जाती है। उसी प्रकार यहां पूजा-पाठ, काम-क्रिया, धर्म-कर्म, नृत्य-गीत, पर्व-त्योहार, नेग-दस्तुर एवं सुख-उमंग प्रकृति के साथ-साथ वर्ष भर एक के बाद एक आते-जाते रहते हैं। इन सभी कार्यक्रमों को संभालने के लिए गांव में एक पहान, एक मुण्डा, इन दोनों की मदद के लिए पानीभरा, कोटवार आदि पदों में व्यक्तियों की नियुक्ति हुई है। गांव के इन पदों में आसीन लोगों को उस पद के पीछे उन्हें जमीन दी गई है। राजा के पद के

लिए दी गई जमीन माफियश कहलाती है। इसे राजा खेत भी कहा जाता है। पहान को दी गई जमीन डालीकतारी, मुण्डा की मुण्डाई, पानीभरा की पानीभरी और कोटवर की कोटवरी जमीन के नाम से है। इनके स्थान में अन्य दो-तीन सदस्य होते हैं, पर इनके नाम से कोई जमीन की हिस्सेदारी नहीं है।

इसी भांति इस गांव के लोग ऊपर बताए गए सूत्र में अपनी चाहनुसार भली-भांति जीवन जीते हैं, हंसते-बोलते हैं, नृत्य-गान करते हैं, मिल-जुल बैठते हैं और अपने क्रिया-कलाप करते हैं। सेवा कर्म ही उनकी महानता है जात-पात से संपूर्ण गांव के लोगों में एक नातेदारी का बंधन है।

एक समय की बात है। जाड़े की ऋतु में एक सप्ताह तक माघदुन्दुर कर दिया। प्रतिवर्ष की भांति ही छोटे लड़कों ने बैठी, छुरी आदि लेकर लासा बनाने के लिए बांस का लासा ठुंगी और लासा खड़िका झटपट फाड़ने और बनाने में लगे हुए हैं। चिड़ियां लटकाने के लिए लासाठुंगी और लासा खड़िका बनाने के बाद लासा खड़िका को पत्थर में वे रगड़कर चिकना करने लगे हैं उन सबको बनाने के चक्कर में कोई स्कूल नहीं गया, तो कोई गाय चराने नहीं गया। दिनभर लासा बनाने के लिए फुटकल लासा, डौ लासा और डुमर लासा टांगी से ठोक-ठोककर जमा करने लगे हुए हैं। जिधर भी सुनो तो ठा, ठू, मानों वन में बहुत से लोगों के द्वारा वृक्ष काटा जा रहा हो, जैसी आवाज गूंज रही है।

शाम को सभी लड़के एक जगह झटपट अपना-अपना पत्थरों का चूल्हा बनाने लगे हैं। कोई तो चूल्हा बनाकर जलाने के लिए झुरियां जमा करने में लगा है। किसी का तो पूरा शरीर लासे से लथपथ हो गया। टूटे घड़े के टुकड़े में और घर का तेल बोतलों को लगाकर अपने-अपने चूल्हे में आग जलाकर तेल के साथ फुटकल, डुमर और डौ लासा को गरमकर लासा बनाने में लगे हुए हैं। रात भी हो गई उनके घर वाले चिल्लाने लगे हैं - "आ जा बाबू, जल्दी भात खाने! नहीं तो हम सब सो रहे है।" कोई तो कई बार चिल्लाते हुए बोल रहा है- "इतनी ठंड में खाना-पीना तक भूलकर कल-परसों से लासा बनाने में ही लटका हुआ है। ई आदमी को तो ठंड से जान निकल जाने जैसा लग रहा है।" परंतु लड़के लासा बनाने का रस में मते हुए है। रात हो गई, भूस्सी और जुवांट (तारे) दोपहर हो गए हैं। लासा भी बनकर पूरा हो गया। सब कोई भोजन करने एवं सोने के लिए अपने-अपने घर चले गए।

सवेरे फिर वे सब उठकर आग तापते हुए भुस्सी में गर्म करने लगे हैं। मेरा लासा कैसा तैयार हुआ है, इसकी जांच करते हुए उस दिन ठीक दिनभर धूप कर दिया। लड़के गाय-भैंस चराते हुए टांड़ में बातें कर रहे हैं "आज तो हमलोग गायों को जल्द ही घर ले जाएंगे, उफियां निकलेंगे?" "हां मित्रों," वे आपस में बातें करने लगे हैं सभी सोचने लगे कि कब शाम होगी? कोई कहता है- "आज तो जल्दी शाम भी नहीं हो रही है?" "हाँ, यदि सूर्य तक हाथ पहुंचता तो हम उसे ढकेलकर डुबो देते?" कहते हुए उनके मन में अकबकी हो रही है, चिड़ियां लटकाने के लिए उफियां पकड़ने के लिए पर अब तो शाम हो गई। बच्चें के या किसी के कहने से क्या जल्दी शाम होगी?

सूर्यास्त के पूर्व ही लड़के गायों को घर की ओर खेदने लगे। ठीक सूर्यास्त के होते ही वे गाय-बैलों को घर के अंदर कर दिए। फिर वे अपना-अपना लोटा-बर्तन पकड़कर सभी तैयार हो गए। वो सब इधर-उधर देखने लगे कि कहां उफियां निकल रही हैं। पर उफियां निकल रही हैं कम मात्रा में और ऊपर में दिखाई पड़ रही हैं, जमीन में नहीं। लड़के इधर-उधर दौड़ने लगे हैं, उफियां पकड़ने के लिए "आओ, मित्रो इधर!" किसी ने कहा तो किसी ने चिल्लाया- "वो देखो, वहां निकल रही हैं।"

बच्चे इधर-उधर दौड़ने लगे, उफियां पकड़ने के लिए, तो आसमान में चिड़ियां मंडरा रही हैं उन्हें दबोच्च खाने के लिए। अब तो जोरों से उफियां निकलने लगीं। तब लोटा में गीली मिट्टी डालकर जिन्दे उफियों को लोटे में चिड़ियां लटकाने के लिए रख रहे हैं और उसे पुवाल या कपड़ा की ठीपी से बंद कर दिये हैं। कुछ को भूंज खाने के लिए थाली के पानी में डाल-डुबा रहें हैं। बाद में पानी में डुबोये उफियों को चावल के साथ उन्होंने भूंजा और खाया।

फिर रात में भात खाकर सब कोई एक साथ भूस्सी ताप रहे हैं। तापते-तापते फिर चिड़ियां लटकाने का कार्यक्रम वे बनाने लगे हैं- "मित्रों, कल सबेरे होने के पहले, उठते ही हमलोग चलेंगे एक दूसरे की इंतजारी हम नहीं करेंगे। वन राह में ही हम मिलेंगे। अब तो चलो हम सब सो जाएं। रात हो गयी जुवंट दोपहर हो गए, नहीं तो हम सुबह जल्दी उठ नहीं सकेंगे!"

"हां मित्रों, सुबह हम जल्दी उठेंगे चलो" आपस में बातें करते वे सब अपने-अपने कुम्बा-घर की ओर सोने के लिए चल दिए। सब होशियारी

से सो गए किसी को जल्दी नींद नहीं आ रही है। तो कोई जबरदस्ती आंखे मूंदे हुए हैं। जल्दी से सो जाऊं और सुबह को जल्दी से उठ सकूं कहते हुए।

सुबह जब अंतिम मुर्गा बोलने का समय हुआ, माघ मास की ठंड के बावजूद चिड़ियां लटकाने के जोश में सभी अपने-अपने घर की भूस्सी में लासा को गरम करके तथा उफियां लोटा, लासाठुंगी और उफियां गाड़ने के लिए कटाई कांटा पकड़कर वे एक-एक कर निकल गए, आगे-पीछे देखते हुए चलते-चलते मसना से आगे ठीक जाजो पहाड़ के ऊपर रास्ते में वे सभी जमा होकर मिले और सबने सलाह किया कि "चलो, झूंड़ के नीचे की ओर भागने लगेंगी और उफियों को देखकर उन्हें खाने की इच्छा होगी कि चिड़ियां लटकेंगी।

इसी भांति अब राय करके वे जोजो पहाड़, कुडुम्बा पहाड़ी की तलहटी के झूंड़ के नीचे सबने अपना लासा इधर-उधर लगा दिया। उफियां लोटा और लासाठुंगी आदि को सभी ने एक जगह रख दिया। चिड़ियों को भागने के लिए बैठ गये। बुधवा, सोहराई, सोमा, बंधना और मांगा आदि ऊपर की ओर दौड़ते हुए पहले चढ़ गए तथा जोरों से पत्थर फेंकने लगे। पत्थरों की तो यहां कमी नहीं। उसी समय घुसा के सामने ही झूंड़ से बाघ कूद निकला। वह डरके मारे कलेजा संभालकर भागने लगा। बोलमोन भी बाघ को देखा या नहीं, वह भी भागने लगा। दोनों हांफते-हांफते चढ़ाई दौड़कर ऊपर पहुंचे और चिल्लाये- "भागो मित्रों, बाऽ ऽ बाऽ ऽ ऽ बाघ मेरे ओर से ही निकल भागा।" दोनों बताने लगे और भागते ही जा रहे हैं घर की ओर अन्य लड़के भी डर से सब लोटा, लासा आदि छोड़कर भाग गए एक ही दौड़ में सब गांव पहुंचे और बताने लगे- "हम ... हम ... हमारे वन में बाघ आया है। मेरे ओर ही छलांग लगाकर निकल भागा। मैं जल्दी से मैदान से उठकर भाग गया और डरके मारे लोटा सब हम सभी ने उधर ही छोड़ दिया है।" घुसा ने भुस्सी तापते गांव के लोगों को बताया। इसी प्रकार सभी लड़कों ने भी बताया। यह बात सुनकर गांव वालों को कोई आश्चर्य नहीं हुआ। बिजली की तरह पूरे गांव में यह बात पसर गई कि "हमारे वन में चिड़ियां लटकाने वाले लड़कों ने बाघ पाया, वे सब डर के मारे भाग गए" और फिर भुस्सी तापते बाघ के शिकार की बातें चल निकली। "हम चलें, बाघ का शिकार करने।"

"कोई जाए, कोटवर को बुला लावे," घुसा के पिता ने कहा। इसके पश्चात गांव के कोटवर को बुलाकर सभी टोलों में इस बात को बताने को कहा गया। उसने सब टोलों में बाघ के शिकार की बात बता दी। सभी टोलों के लोग जमा हुए अपने-अपने हथियार लेकर। आगे-पीछे वे वन की ओर चल पड़े कुछ लोगों ने जोजो पहाड़ के पास से ही खोजना शुरू किया। परंतु वन के पास सभी टोले के लोग इकट्ठे हुए दोबारा फिर चले, 'अब तो हम वन में उसे खोजे' कहते-कहते वे वन में प्रवेश कर गए, खोजते-खोजते धवई फूल गड्ढा खत्म होने लगा, लेकिन बाघ नहीं मिला। कुदाटोली का भोमभा मुण्डा बोलने लगा-"कहां का बाघ? भेलवा खानेवाले लड़के ठग रहे होंगे" "पता नहीं, बच्चों की बात कुत्ता का भूंक! बाघ था या सियार? कोई जानवर दिखाई पड़ा होगा और वे डरके मारे भाग गए होंगे।"

वे इस तरह आपस में बातें करते, खोजते जा रहे थे कि अचानक ही बाघ भोमभा मुण्डा पर झपटा। दोनों दो बार घुड़मुड़िया गए, इसके बाद बगल के दोनों व्यक्तियों को भी झपट मार बाघ आगे उछल कर भाग गया। पूरे वन में हल्ला हो गया। "भागो।।।भागो, सब लोगों पर बाघ झपट रहा हैं "कुछ लोग वन के किनारे ही थे। वे भी सुनकर पेड़ों में दौड़कर चढ़ने लगे बच्चों को खींचकर चढ़ाने लगे। कुछ देर बाद सभी लोग वन से बाहर निकले। पेड़ों पर चढ़े लोग भी उतरे तथा बच्चों को घर की ओर भेज दिया गया। सभी ने उन दोनों को देखा जिन्हें बाघ ने झपटा मारा था। परंतु वे अधिक जख्मी नहीं हुए थे। फिर से बाघ का शिकार करने की हिम्मत किसी को नहीं हुई। सब वापस गांव आ गए। अब तो गांव में जो लोग नहीं जा सके थे, वे भी जमा हो गए और पहुंचते ही पूछने लगे- "कहिए भाइयों, आपलोगों ने बाघ पाया था या नहीं?" "हाँ, हमलोगों ने बाघ पाया था, कितने लोगां ने तो बाघ के साथ लड़ा भी। परंतु हम उसे मार नहीं सके।" शिकार में गए लोगों ने कहा धीरे-धीरे और भी आदमी जमा होते गए। इस प्रकार उन्होंने फिर से सभा-विचार किया। इसमें कई प्रकार के विचार आने लगे। कोई कहने लगा- "हम अबकी बार अधिक से अधिक संख्या में जाएंगे और फिर से बाघ का शिकार करेंगे!" किसी ने कहा- "नहीं भाईयों! नहीं, हम तो नहीं जायेंगे। यदि बाघ का शिकार ही करना है तो हम आसपास के गांव के आदमिंयों को बुला, इक्ट्ठा कर जाएंगे।" किसी ने कहा इसी भांति बातें तो अनेक हुई। तब लेंगा

मास्टर ने कहा- "नहीं बंधुओं, आपलोग मेरी भी एक राय सुन लीजिए। बात ऐसी है कि हम एक दरखास लिखें और उसमें सभी कोई ठेपा-सही कर थाना के लोगों को दें। भोगता महुवाटोली का हमारा चौकीदार चमरा प्रधान के साथ चार-पांच आदमी खूंटी थाना में जाएं। थाना वाले बंदूक ले आएं तथा उनके साथ हमलोग शिकार करेंगे।"

"ठीक है, ठीक है" कहते हुए इस बात को सभी ने मान लिया। लेंगा मास्टर ने तुरंत आवेदन लिख दिया और सब लोगों ने जल्दी से ठेपा-सही कर दिया। उसके बाद चुने गए लोग चौकीदार के साथ थाना चले गए बूढ़ा चौकीदार थाना में दरखास देते हुए मौखिक भी बताने लगा- "हमारे वन में बाघ आया है। कुछ लोगों को काटा है इसलिए हमलोग सारे आस-पास के आदमी जमा होकर बाघ का शिकार करने जा रहे हैं। यदि आप लोग शिकार में बंदूक के साथ मदद कर देते तो बड़ा अच्छा होता?"

थानेदार चौकीदार की बात को रखेगा ही जल्द ही दो सिपाही बंदूक के साथ जाने को तैयार हो गए। उस समय खूंटी थाना में अधिक काम नहीं रहता था, क्योंकि खूंटी क्षेत्र में उस समय जनसंख्या कम थी। चोरी-डकैती, लूट-पाट, हत्याएं आदि कम ही हुआ करती थी। आदमी को भय था तो वन के जानवरों, भूत, सांपों का ही। परंतु ये भी यों ही आदमी पर आक्रमण नहीं करते और न ही जानवरों का भोजन मनुष्य है।

दौड़ते चलते बस एक घंटे में भेजे गए आदमी लौट आये। दो सिपाही साईकिल से आए इधर गांव के सभी बाघ के शिकार में जाने के लिए खा-पीकर तैयार थे। इस बार सभी लोगों में नया साहस आ गया, इन सिपाहियों और उनकी बंदूकों को देख कर। वन गांव से दूर नहीं है। हंसते-बोलते वन पहुंचने में देर नहीं लगता। सभी लोग जोजो पहाड़, कुडुम्बा पहाड़ी रास्ते से उतर गए।

अबकी बार ताकत का अनुभव हो रहा है। कारण कि बंदूक गोली न है? कुछ अभी भी डरे हुए हैं। 'बाघ कहने से कौन नहीं डरता। खाये न खाये, जान तो ले लेगा।

खोजते-खोजते फिर धवई फूल गड्ढा पार हो गया। बाघ नहीं मिला। पर, बाघ दूर नहीं गया हुआ था। ठीक पूरब की ओर सब कोई खोजते जा रहे हैं। बाघ भी पश्चिम की ओर शिकारियों की ओर ही मुंह कर चुप बैठा

हुआ है। खोज रहे लोगों ने उसे देख लिया। बाघ बेफिक्र बैठा है। सबको सचेत कर दिया गया। बंदूकधारी सिपाही उस ओर ही हैं। तुरंत ही उन्हें इशारा कर दिया गया। सिपाही ने वृक्ष की आड़ से बाघ को गोली मारी।

पर बाघ को नहीं लगी। फिर बाघ आदमियों की ओर कूद पड़ा। सभी इधर-उधर भागने लगे। कोई पेड़ पर चढ़ रहा है, कोई भागकर जान बचा रहा है। कंदना (घर में लोग उसे कांदू कहते हैं) पेड़ पर चढ़ रहा था कि बाघ ने उसे पीछे से झपट कर मार गिराया और आगे बढ़ गया। पास के कुछ आदमी झटपट कंदना को बचाने में लग गए। बाघ को थोड़ी सी भी चोट नहीं आई। बाद में सिपाहियों का भी साहस घट गया। एक तो शाम भी होने वाली थी। कुछ लोगों में डर भी समा गया और वे वन से घसकने लगे। कुछ लोग कंदना को मिल जुलकर ढोकर गांव ले आए। गांव में यह बात फैल गई - "कांदु को बाघ काटा।"

बाद में दोनों सिपाही ने कंदना को अस्पताल ले जाने की सलाह दी। "आप लोग चलिए हमारे साथ। इसे कुछ आदमी खूंटी सदर अस्पताल ढोकर ले जाइये। ज्यादा जख्म नहीं पहुंचा है। दवा मिलने पर जल्द ही ठीक हो जाएगा?" कुछ लोग उसे अस्पताल ले गए। साथ में दानों सिपाही भी गए। अस्पताल में उन दोनों ने ही घटना की जानकारी दी, जिस कारण दवा मिलने में कठिनाई नहीं हुई। अस्पताल में डॉक्टर ने देखा, कंदना अधिक जख्मी नहीं हुआ है। बाघ का पंजा मात्र लगा है। यह बात लोगों को डॉक्टर ने दवा देते हुए बताया।

अब तो रात भी हो गई। इसलिए वहीं ठहरने की बात हुई। रात खूंटी अस्पताल में ही बीत गयी। दूसरे दिन खाने लगाने की दवाएं मिली और उन्हें छुट्टी मिल गई। (कंदना, जोड़ापुल के पास वर्तमान बिरसा मृग बिहार के बगल के कालामाटी गांव का टोला तिरिलडीह का आदमी था। वह अपने मामा गांव में सुकरा के घर में रहता था। कंदना अविवाहित ही था। उसके भीतर खूंटी मंडा में प्रतिवर्ष शिव भोक्ता घुसा करता था। बूढ़ा होने पर जब उससे काम नहीं होने लगा, तब तिरिलडीह के उसके भाइयों ने कहा - "अब तो मामा, कंदना हमारा भाई वहीं अपनी जीवन लीला समाप्त करें। हमलोग इसे गांव ले जायेंगे?" "भगिना, जीवन भर इसने मेरा काम कर दिया। अब आप लोग ले जाइयेगा? भला, मुझे कौन अच्छा कहेगा? जीवन के अंतिम क्षण

तक यहीं रह जाए तो कैसा होगा?" सुकरा बूढ़ा ने कहा। "कुछ तो नहीं होगा मामा! आपका कहना भी ठीक है। परंतु जीवन लीला के अंत में आप इसे अलग में ही स्थान देंगे। इस प्रकार ये अपना माता-पिता की जमीन जगह से सदा के लिए वंचित हो जाएगा। अब तो इनका बुढ़ापा आ गया। मर जाने के बाद अपने माता-पिता की जमीन-जगह ग्रहण कर सके और वह अन्नपुर (स्वर्ग) में जाए। यहीं हमारी अंतिम इच्छा है।" तिरिलडीह के, कंदना के भाई, कंदना को मृत्यु के पूर्व तिरिलडीह ले आए। वह पर्व-त्योहारों में जब तक सका आना जाना किया और उसने सुखपूर्वक जीवन व्यतीत किया।

दूसरे दिन वे अस्पताल से लौटे। फिर गांव में अगल-बगल के लोग उसे देखने के लिए जमा हुए। सभी ने देखा घाव एक पिंडली में और एक कंधा में है। पर, जान को खतरा नहीं है। इसके पश्चात् यहां जमा हुए लोगों में घुसा का पिता सोहराई बूढ़ा ने कहा - "हे भाईयों, बाघ तो बाघ था कि कोई देवता? गांव खराब हो जाने से इस प्रकार के जानवर अपना रूप दिखाते हैं। परंतु वैसा तो जान नहीं पड़ता है। गांव में किसी तरह की गड़बड़ी होने से और भी अधिक उत्पात करता। परंतु यह घटना वैसा नहीं है। सोया हुआ बाघ या सांप को यदि हम थूड़ेंगे तब तो वह काटेगा ही।"

उन्होंने फिर आगे कहा - "सरहुल त्योहार, पूजा पाठ में हम क्यों गोटा उड़द चढ़ाते हैं? इसलिए कि उड़द को चूरकर देने से पहाड़ी देवता रूठ जाते हैं। जिस प्रकार उड़द को जांती में फोड़ते आवाज निकलती है, उसी प्रकार पहाड़ी देवता बाघ के रूप में गांव में आवाज करता है। ऐसा पुरखों ने कहा है। इसलिए सरहुल पर्व-उपवास के दिन हमलोग गोटा उड़द करते हैं। परंतु कल की इस घटना से तो किसी देवता के रूठ जाने सा जान नहीं पड़ता है। वैसे तो वन में कई प्रकार के जानवर हैं, नहीं हैं सो बात भी नहीं है। पहले समय से देखा गया है कि बाघ रात में गाय को गोहार से ढो निकालकर कुडुम्बा बुरु के झूड़ों में ले जाता रहा है। जिस बाघ का शिकार किया गया था या चिड़ियां लटकाने वाले बच्चों ने पाया था, वह अपने से किसी का नुकसान नहीं पहुंचाया है। और किसी की हानि वह न करे, इसके लिए रतन पाहन बूढ़ा को बताया जाए, वह अपने घर-आंगन में ही पूजा-अर्पण कर देवे।"

"परंतु, हमारा पाहन इस बात को माने तब तो?" भोजा बूढ़ा ने

कहा। आगे फिर से सोहराई बूढ़ा ने कहा- "यह तो मानी हुई बात ही है। क्या पूजा-पाठ फिजूल की बात है? वर्षा ऋतु में खेती-बारी मौसम में रोपा करने का धान बीड़ा गांव में किसी व्यक्ति का तैयार हो गया है और किसी कारण वश पाहन यदि बताऊला पर्व नहीं किया हो, तब धान और मडुआ रोपनी का काम वर्जित है। ऐसी अवस्था में यदि वह किसान पाहन को एक लाल मुर्गा एवं तपन के लिए चावल आदि उसे अवगत कराते हुए सौंप दिया जाता है, तब कौदेलेटा पूजा नहीं मनाये जाने के बाद भी वह रोपा कर सकता है।"

हाँ, हम सब ऐसा देखते आए हैं।" सभी ने कहा। "ठीक ही होगा, इस बात को कोटवर पाहन को बता दें! कल सुबह इस बात को हम सभी मिलकर उसे बता देंगे।" फिर से सभी ने कहा। "हाँ, यहीं अच्छा होगा।" सबने एक स्वर में कहा। इस प्रकार बाद में राय-मसोरा करके सभी चले गए। वर्षा हुई है। नवा गोड़ा जोत कोड़ करने का अच्छा मौका दिया है। ठीक दूसरे दिन लोहरा के यहां कुछ लोग फार पजवाने जमा हुए। पाहन बूढ़ा भी फार पजवाने के लिए पहुंचा। अब उस बात को बताने के लिए वे कोटवर को कह रहे हैं। हंसते-बोलते फिर कोटवर कहता है - "चलिए भाई, आप लोग ही कहिए!" "नहीं, आप ही कहिए!"

बात चीत के क्रम में पाहन बूढ़ा ने पूछा- "क्या बात?"

कोटवर फार पजाते हुए बोला- "नहीं बाबा,बात तो यह है कि चिड़ियां लटकाने वाले लड़कों ने बाघ पाया था और हमने उसका शिकार किया था। वह बाघ था या हमारे कोई देवता का रूप था। किसी वजह से कोई देवता के रूठ जाने से उसका दर्शन हुआ, कि किस कारण से। परंतु फिर से देखार न हो। इसके लिए आप से पूजाकर देने की बात तय की गई है।"

"इस बात में गुनाह क्या है। मेरे पास इस बात को पहुंचा देना ही पूजा है। खलियानी पूजा में, माघ पर्व में पहाड़ी देवता के साथ सभी देवताओं की सामूहिक पूजा की जाती है।" पाहन बूढ़ा ने कहा।

हाँ, इसी बात को कहने के लिए ही हम एक दूसरे पर ढेंस दे रहे थे। सप्ताह में तो ये पर्व मनाया ही जायेगा।" कोटवर ने फार पजाते-पजाते कहा।

फार, साबल आदि को पजाकर सब अलग-अलग चले गए।

अपने-अपने खेतों में जोत कोड़ करने के लिए। कोई गोड़ा धान बोने के लिए नवा जोतकर तैयार कर रहा है। कोइ गोड़ा-गोंदली बोने के लिए जोत तैयार कर रहा है। यह विचार करके कि ठीक से टांड़ ठंढ़ा खा ले।

एक सप्ताह में पाहन खलियानी पूजा कर रहा है। युवक-युवतियों के मन में उमंग है कि आज हम नृत्य-गान करेंगे। खलियानी पूजा के दूसरे दिन से ही सब लोग अपना-अपना पुवाल खलियान से उठाकर समेटने में लग गए हैं। पुवाल को समेटकर साल भर का पुराना काम पूर्ण हो गया। पुवाल उरियाने का हड़िया-भात भी खत्म हो गया।

इसके बाद सब कोई माघ पर्व मनाने की तैयारी करने लगे हैं। घनी में सुरगुजा तेल पेरने लगे। चावल आटा के लिए अरवा चावल बनाने लगे। गांव में मिलकर खस्सी खरीदने के लिए चंदा होने लगा है। युवक-युवतियां माघ मेले की तैयारी में हैं। ठीक माघ मास की पूर्णिमा में माघ पर्व धूम-धाम से मनाया गया।

माघ पर्व के जाते ही फागुन मास आ गया। जाड़े का अंत हो गया कि गर्मी की ऋतु आ गई। सुबह-सुबह हल जोतना, कोड़ना और फिर दोपहर को वन में शिकार करना शुरू हुआ। वन में चिड़ियां, खरगोश आदि की खोज शिकार होने लगा। परंतु बाद में चिड़ियां लटकाने वाले लड़कों ने जिस बाघ को पाया था फिर कहीं नहीं निकला। न ही कोई बाघ मिला। पता नहीं इस वन में ही वह रह गया कि इस वन में ही आगे कहीं चला गया। या कोई पहाड़ी-वन देवता का रूप था। परंतु, उसके बाद तो वन-पहाड़ों में सामान्य रूप से किसी का डर भय नहीं रह गया इस गांव के लोगों में।

हंती लेल

बुरसी जिरूबतन जिरूबतन बुदुवा मेनकेदा, "नेआंदो ने सिरमा रआ मरंउतर गमा हेके। ने खलोम रअ जरगी रे ने-लेका दो निसुगे ओड़आ दुवर च पीड़ि कुटुड़िं रआ कमिउदम दो बंगम जना। अबु होड़ोको दो जांलेका जेतालेका अदवा-पदवा रूडुंग सेटेए केअते मण्डिबु जोम बोसा जदा। मेन्दो केड़ा उरिइ अर मेरोम मिन्डिको दो गोड़ां अर गोड़ां रेगेको अदेर गुड़गुड़ावा कना। निई बोले चिल्कम निइकोवा। निइलेको रेओ पीड़ि रे कको ठेकवना।"

"हेआ, ओकोयआ बुसुऊ मेनअंतेनको दो, बुसुऊ होतोरउ केअते गोड़ां रेगेको ओमओं तना, मेन्दो ओकोयआ बनओंतेन को दो बपुड़िइ एन बो-ड़ो को खण्डा-खण्डा केअतेको रड़ाको तना।" बलिया कजिकेदा।

"एनादो हे कजिगे। अञो उरिइकिन बुसुउञ ओम तुकआ किना। मेन्दो नेअंदो केड़ा उरिइकोवआ कजि। मेन्दो मेरोम बिन्डीको बुसुऊ दो कको च ओमओआं। अञदो इन्कु मेन्ते सिंअड़आ पतड़ा अर हुड़िंग लेका कन्टड़ा पतड़ाञ मआं अउआकोवा।" नागु मेनकेदा।

"सिमकोदड़ोओ चिकनअम ओम तुमदकोवा?" बंधना नागुकेए मेतइ जना। एनते सोबेनको लंदा केदा।

"इन्कु चिआड़ोओम गुपि धड़िआकोवा? जां इमुं चराम ओमाकोरेओ अद जांइमुंए गमय रेओ सिमकोदो अतिंदुकु गेआदं।" नागु कजिरूड़ा जलोओ अयरतेए कजि केदा "अञ मिअदेञ कजिलेआ तबु, सोबेन अपे अयुमे रेदो।" नागु कजिइ चुटिगे सोबेन कोतेको एतोंग दरोम किइया अरको मेतइ तना

"चिकनअम कजि जदा नागु, मर कजि थबेम। अलेयोले अयुम लेआ?" धंगड़ाहोनको कजि केदा।

"अपेदा कजिगे कपे पुरा रिका जअञा अरपे एटोंग दरोम जअञा। अबुवआ बिर रे बरिआ हंतिकिन हिजुगा कना। दोलाबु इन्किनबु लेलाउआ कारे? चिमुं ओड़आ रे दुबाकनबु तइना। होला-होन्देराते दुब-दुबते कटा-ती दो मुकुञं तना, जी-ओ उबड़ागिड़ि तना।" नागु कजिकेदा।

"हेआ, निसुदो ठउका कजिगेम कजिकेदा। अञो एनागे ओनमनतन तइकेना।" बुदुवा कजिकेदा। "झर-झर दआ गमातन तइकेना। बुदुवा, नागु, बलिया, बंधना, हेसेल, मझिया, मोगो, सनिका अर सोहराइ लेकनको अरे, गेलहोड़ो लेका दंगड़ाहोनको बिर ते हंतिकिन लेलउ मेन्ते बिर सेनओं कजिको पका केदा, सेतआ लोअड़ी मंडि जोम केतेरको जमाकन तइकेना। दआ गमातन तइकेना, सोबेन अपन-अपन लिजआ चतोम तेको चतोमेन जना अर हंतिकिन लेलतेको उठवन जना। सेनओंतन सेनओंतन नाअंदो होरा रेको जगर इदितन तइकेना, "ओकोमुलिबु दड़ां किना। मा-सालबु लेलकेना, एन्तेगे सिदाबु सेना कारे।" बंधना मेनकेदा। "सेनओंजन सिरमादा कोतेरेपे लेल लेएकिना।" हेसेल कजि-केदा।

"पन्डरी बुरु सोकड़ा चेतन रूडुंझूंडु होरा रे बिर तला रे मोद-तआ पीड़ि रे। अमकम चि तइकेना? अले निमुं सोबेन होड़ो मेनेम मोड़ें सौ मुका लेका संगिनते अमंग समंग कोओते एन हंतिकिनले लेललेए किना। मिअद हंती दो धुड़ा उरकेअते होड़ोमो रे-ए हेरेनतन तइकेना। मिआद निइदो कटा अयर तयोम जलोए हूंचुजद तइकेना। होड़ोमो दो भसरभूंडु लेलओतन तइकेना। बरनिकिन अलेमुलि गेकिन लेलतन तइकेना अद मेनेम नेएं जाअ निरउइ लेकाकिन लेलओतन तइकेना।" बंधना कजिकेदा।

"का-चिअपे बोरोकेदा, अमुं नड़ेंएअतेदो?" हेसेल मेन केदा। "अम-दा बोरोजद तेचिड़ोओम हिजुगा कना हंतिलेल दोड़ोओ। बोरो दो बोरोओ गेआ। जी रे अलेओले बोरोजद तइकेना इन्किन लेल केअते। मेन्दो हंतिकिन तिंगुहपेआकन तइकेना। एनामेन्ते अले सासे केदा। हंतिकिन होनं बतिरिलेका अलेमुलिकिन हुजुलकेद रेगे निरतेयआ होराओ कले नमकेद तेयआ।" मझिया कजिकेदा।

"हेआ, मेन्दो अले हंतिकिन नतेन अपन-अपन जी रे सुईं गोजा इमुंओ

एदका टुङ कले कजिकेदा नगेले ओनमान केदा। मेनेमेदो अले इंकिंके जी बितर रेले जोअर हपेकेद किना। इन्किनो जाअकिन अगम केदा चि ने होनको रसिकाते अलंलेलको हिजुगा कना। मर अलंलेलतेको रसिकाकोओका मेनयआं। मोड़ेंगेल मिनिटि जकेद अले लेलहपेजन चि सेकेड़ागे, अले तयोमते उसरकेन चि दनंगनोओं लेनचि निरे सेने बिरतेले उडुंतब जना। एनातेदो बोरो निर जना।" मोगो कजिकेदा।

"हे-आ, तिसिंओं हंतिकिनबु नमकेकिन रेदो कबु एरंग किनां जी बितर रेओ हंतिम एरंगकिरेए बुझओ गेआ।" सनिका कजिकेदा।

"हंती मोयोद अगमजनी जनोवर हेके। जां-गे होड़ो इनिइ नं जी-बितर रेओगे खींसिनका, इनिइ अगमे गेआ। बुलाकन होड़ो अर सेताआ भुऊते पुरआ गे-ए खदरओआ। एनातेचा बिर हंती के लेलकेअते सेताको जेता इमुं कको भुऊइया। इन्कु इतुवना अर हपाकन को तइकना। एन्कादो कजि मेनअं सेता भुउइ हजार हंतीइ सेने पीटि। नेआं मिअद कनजि बारिगे।" सोहराई कजि केदा।

झम-झम दआ गमातन तइकेना। इन्कु निसुकनो बिर रे एन सअगेको सेनओं जना, कोसआ सिदा सिरमा हंतिकिन लेलको हिजुऊ लेना। सोबेन मुलि इन्कु लेलबड़ा केदा। मेन्दो ककिन लेलनम जना अरको मनेकेदा ने हंतिकिन कोमन रेकिना। दोलाबु एटआ सअबु दड़ांलेकिना नाअंदो। मेनकेद चि धंगड़ाहोनको गोटा एन असे-पसे को दड़ां बियुर तना। इमिन रेओगे हंतिकिन ककिन नम जना।

तरसिंजन दिपिलि घड़िकद गमाए होकाकद तइकेना। सोबेन धंगड़ा होनको लुम छबाकन तइकेना। ओकोए दो होरदंआ कना। दड़ां-दड़ाते इन्कु असादि जना अद हंतिकिन कको लेलनम केद किना। एनामेन्ते इन्कुवआ जी गोसोगिड़ि जना अरको जगर तना, "हंतिकिनदा ककिन नमजना ओड़ओ दो चिमुंबु दड़ांकिना! दोलाबु नाअंदो ओड़अतेबु रूड़ाआ।" मेनकेद चिको रूअड़ा तना।

बिर रे मोदतआ संड़का होराअआ लेका चकर होरा बिउरा कना अर बिनिउर टुन्डुकिन रे नेंसअते-हनसआ रे कटाते सेनेहोरा ते जमाकनतइकेना। मेनेमेदो एमन कुटिदाकन अआ लेका तइकेना। एन तला रेगे एन हंतिकिन तइकेना। ने अआ हतवल लेकन कटाते सेनेहोरा रे एन धंगड़ा होनको दो अयर

तयोम अयर तयोम तिरूब केतेर अर चतोम केतेर ओड़आ मुलिको सेन रकब जए तइकेना। ठीकि एन दिपिलि गे अचका गे मिअद हंती गरजव केदा-'हा!' सोबेन धंगड़ा होनको किटिल जना अर तयोमतेको निर रूड़ा केदा। अरको ककला केदा-हा! ओड़ओ हंतिओगेए ककला केदा-हा! ने लेका कपकला कपकला तन चिको निरतना अर तयोमलेन धंगड़ा होन अयरा कना ओड़ओ अयरलेन धंगड़ाहोन निसुदोए तयोमा कना। ठीकि संड़का मेनेसा रेको थेबआ लेदचिको तिंगुन जना अरको ककला जदा- हा! हंतिओ ककला जदा हा!हा! तिंगु हपाकन ते। ने लेका ते एन धंगड़ा होनको रसिका जना अर सासे नमजना। मेनेम मोड़े सौ फीटि लेका संगिन रे तिंगुआकन चि इन्कु हंतिकिनको लेल तना। हंतिकिनआ बो-ओ अर लुतुर बइरगे लेलोओ तना। जुदि हंती जेतालेका क-ए ककला केदा अर हपाकन गेकिन तइन जन रेदो होनं एन हंतिकिनआ दोरसोन कहोबा जना। होनको इन्किनको सेनबगे के-ए किना होनं, अर फवगे ओड़आतेको रूड़ाजनतेयआ। मेन्दो हंतियआ दस्तुर गे मेनअं चि होड़ोकोके मेनअञामेने नितिर दो ए ओम सिदाए गेआ। तयोम दो एन धंगड़ा होनकोवआ बिर रे हंतिलेल कमिकजि पुरा जना अर तयोम दो एटआ मुलि बिर अतोम-अतोम तेको रूड़ा जना।

हाथी देखना

भुस्सी तपाते-तपाते बुधवा ने कहा- "दोस्तों इस वर्ष का सबसे भारी वर्षा है यह, इस साल की बरसात में इस भाँति अबकी बार घर-द्वार व खेत-बारी का काम धंधाओं को बाधा डाला है। हम मानव तो किसी भी तरह से अरवा-उरवा कूट-छाँटकर खाना खा ले रहे हैं। पर गाय-भैंसों और भेंड़-बकरियों को तो गोहार और गोहार में ही गुड़ाया गया है। उन्हें निकालने को भी कैसे निकालोगे। निकाल लेने पर भी बाहर में वे नही ठहरेंगे।"

हाँ, मित्रो! जिसका पुआल है, वह तो पुआल लाकर उसे गोहार में दे दे रहा है। परन्तु, जिसका पुआल नहीं है वह तो वही, बिरनी को काट-काटकर उसे ही खोलकर उन्हें दे दे रहा है।" बलिया ने कहा।

"वह तो सच बात है। मैं भी दोनों बैलों को पुआल देकर आया। पर, यह तो गाय-बैलों की बात है न! भेड़-बकरियों को तो पुआल नहीं दिया जा सकता है न। मैं तो उन सबके लिए कटहल पत्ता और कुछ कोयनार का पत्ता को काटकर दे आया हूँ।" नागु ने कहा।

बंधना ने नागु से तुरन्त ही व्यंग से कहा- "मुर्गियों को तुम क्या देकर आए हो मित्र?" तब सबने हंस दिया।

"मित्र, तुम उन्हें चराने सकोगे क्या? उसे तुम कितनो दाना दो और जितना भी पानी बरसे मुर्गियाँ चरेंगी ही।" नागु ने जवाब देते हुए फिर आगे कहा, "यदि तुमलोग मेरी बात मानोगे तब तो मैं एक बात कहता हूँ।" "क्या बात बोल रहे हो नागु तुम? जल्दी बोलो, हम लोग भी सुन लें!" फिर

सब हंसे!

नागु बोल ही रहा था कि सभी लड़कों ने मिलकर उसे टोक दिया। "तुमलोगों ने मुझे बोलने ही नही दिया और बीच में ही टोक दिया। हमारे वन में दो हाथी आए हैं। नहीं तो, चलो हम उन्हे देखकर आएंगे? कितना घर में हम बैठे रहेंगे। कल-परसों से बैठे-बैठे हाथ-पैर तो टटा ही रहा है, मन भी ऊब रहा है।" नागु ने कहा।

"हाँ जी, अबकी बार तुमने ठीक कहा है। मैं भी वही सोच रहा था।" बुधवा ने कहा। झम-झम पानी बरस रहा था। बुधवा, नागु, बलिया, बंधना, हेसेल, मंझिया, मोगो, सनिका और सोहराइ आदि नौ-दस लड़कों ने वन में हाथियों को देखने के लिए वन जाने की बात तयकर लिया। उसने सुबह नास्ता कर इकट्ठा हुए थे। सबने अपना-अपना छाता ओढ़ा और हाथियों को देखने के लिए निकल पड़े। जाते-जाते वे रास्ते में बातें करते जा रहे थे- "हम किस ओर उनकी तलाश करेंगे? उसी ओर पहले जाएं जिस ओर अगले वर्ष हमने देखा था।" बंधना ने कहा।

"गत वर्ष तुमलोग ने किस ओर देखा था मित्रों?" हेसेल ने कहा। "पन्डरी पहाड़ सोकरा के ऊपर रूरूडुंझाड़ी रास्ता में वन के बीच में एक खुली जगह है। तुम नहीं था क्या? हम सभी इतने लोग ने पाँच सौ फीट की दूरी से आमने-सामने हो कर उन हाथियों को देखा था। एक हाथी धूल उठाकर अपने शरीर में छींट रहा था। एक पैर को आगे-पीछेकर झुला रहा था। बदन भसरभुंड दिखाई दे रहा था। दोनों हमारी ओर ही देख रहे थे। दोनों अब तब दौड़ जाएंगे जैसा दिखाई पड़ रहे थे।" बंधना ने कहा। "मित्रों तुमलोग डरे नहीं क्या? उतना सामने से।" हेसेल ने कहा।

"मित्र तुम्हें डर है, इसीलिए हाथी देखने आए हो क्या? भय तो लगता ही है। दिल में हमें भी डर था, उनदोनों को देखकर। परन्तु दोनों चुपचाप खड़े थे। इसलिए हमने साहस किया। वे दोनों हाथी हमारी ओर थोड़े से पैरों को बढ़ाते तब हमें भागने का रास्ता नहीं मिला होता।" मझिया ने कहा।

"हाँ मित्रों! परन्तु हमलोगों ने दोनों हाथियों के लिए अपने-अपने मन में सुई की नोंक के बराबर भी बुरा शब्द नहीं बोला और न सोचा। मानो तो हमने उन दोनों को अपने दिल में चुप से प्रणाम किया। उन दोनों ने शायद

जान लिया कि ये बच्चे खुशी से हमें देखने के लिए आये हैं। चलो, हमें देखकर उन्हे खुशी हो यह सोचकर। पाँच-दस मिनटों तक हम चुपचाप देखकर जल्दी से पीछे घसक गए और ओझल होने पर दौड़ते-चलते वन से बाहर निकल पड़े। तब भय समाप्त हो गया।" मोगो ने कहा।

"हाँ मित्रो! आज भी हमें हाथी मिल जाते हैं तब उनको बुरा नहीं बोलेंगे। यदि तुम हाथी को मन में भी गाली दे दो तो वह समझ जाता है।" सनिका बोला।

"हाथी एक अगमजानी जानवर है। कोई भी व्यक्ति उसके लिए दिल के अंदर भी क्रोध कर ले, वह जान जाता है। मतवाला व्यक्ति और कुत्ता का भौंक से वह बहुत क्रोध करता है। अतः जंगली हाथी को देखकर कुत्ते थोड़ा भी नहीं भौंकते हैं। वो सब भी जानते हैं तथा चुपचाप रहते हैं। वैसे तो कहावत है, कुत्ता भूके हजार हाथी चले बाजार। यह मात्र एक कहावत है।" सोहराई ने कहा।

वर्षा झम-झम बरस रही थी। वे लोग अबकी बार भी वन में उस ओर ही गए, जिस ओर बीते वर्ष उन्होंने दो हाथियों को देखा था। उसने चारों तरफ दृष्टि डाली। पर, दोनों हाथी दिखाई नहीं पड़े। तब उन्होंने कहा, "ये हाथी कहां पर हैं। चलो अब हम दूसरी ओर उन्हें ढूंढ लेंगे।" कहते हुए लड़के चारों ओर उन्हें आस-पास तलाशने लगे। फिर भी दोनों हाथी नहीं मिले।

दोपहर को थोड़ी देर के लिए पानी बरसना रुक गया था। सभी लड़के पूर्णरूप से भींगे हुए थे। कोई तो झाड़ियों से नोचाया है। तलाशते-तलाशते वे थक गए और हाथियों का उन्हें दर्शन भी नहीं हुआ। इस कारण उनके मन में उदासी थी और वे बातें कर रहे थे। "मित्रों, अब ये हाथी नहीं मिले। हम उन्हें कितना ढूंढ़ेंगे। चलो अब हम घर वापस जाएंगे।" कहकर वे लौटने लगे।

वन में एक जगह सड़क मार्ग धनुष-सा चौड़ा और मुड़ा हुआ था तथा मोड़ के दोनों छोर में पगडंडी से मिला हुआ था। मानो वहाँ ताना हुआ धनुष-सा था। उसी बीच में वे दोनों हाथी थे। उस धनुष-सा पगडंडी में वे लड़के आगे-पीछे, आगे-पीछे सिर नीचे कर तथा छाता ओढ़कर घर की ओर लौट रहे थे। ठीक उसी समय अचानक ही एक हाथी गरजा- "हाँ!" सारे लड़के चौंक गए और पीछे की ओर दौड़े। उसने चिल्लाया- हां। फिर हाथी भी चिल्लाया- "हां।" इसी प्रकार एक के बाद एक चिल्लाते हुए दौड़े जा रहे

हैं। पीछे में जो लड़का था वह आगे है, तथा जो आगे था वह पीछे है। ठीक सड़क के संगम में पहुंच कर वे लोग रूक गए और चिल्लाने लगे-"हां।" हाथी भी चिल्लाया "हां। हां।" चुपचाप खड़ा होकर। इस तरह से उन लड़कों को प्रसन्नता हुई तथा हिम्मत भी हुई। लगभग पाँच सौ फीट की दूरी में खड़े होकर वे हाथियों को देखने लगे। दोनों हाथियों के सिर और कान सिर्फ दिखाई पड़ रहे हैं। यदि हाथी किसी प्रकार का आहट नहीं देता, और चुपचाप रह जाता तब लड़कों को उन हाथियों का दर्शन नहीं हो पाता। वे बगल से निकल जाते तथा यों ही घर वापस लौट जाते। पर हाथी का भी नियम है कि वह मनुष्यों को 'मैं हूँ' की सूचना पहले दे देता है। उन लड़कों का वन में हाथी देखने का कार्यक्रम सफल हो गया था और दूसरी ओर से वन के किनारे-किनारे वे वापस चले आए।

खुन्टी हकन

मोयोद राँचि रेन झरी ओड़ओ मिआद खुन्टी रेन जेठा लुतुमतेन बरिआ गलेद धंगड़ाकिन सचिवालय रेकिन कमितना। मोद रे कमितन कमितन बरनकिन रे ओड़ेतन सोपोंगे होबा जना। बरनकिं डिण्डागेआ, जाँ-जेताते होनोरबेड़ा-दो ककिनगे बपगेआ। शनिचर हुलङ ओफिस रेगे होनोर सेनओं होराकिन कजिबइतइआ अर एतवार हुला-दो मोदतआ-गे जमनजन चि मोसाते जोम-नूं-केतेर होनोरकिन सेना मिआद फटाफटिआ-ते।

नाअंदो हकन चण्डुऊ रआ सोमय तइकेना। निसु एतोवर हुलंग खुन्टी हकनबुरु ठोगओ तना। जेठा नाअंदो हकन बुरु लेल सेनओं-ए ओनमन तना। मुसिं नाअंदो ठीकि ओफिस रे जोमनूंबेड़ा होबाजन चि बरनकिन होटेल मुलिकिन सेनओं जना। होटेल रे जोमबेड़ातन दिपिलि नाअंदो जेठा मेनजदा, "अम जी तलं! निसु हिजुऊतन एतोवर हुलंदो अलेसआ रआ खुन्टी हकनबुरु हेके। पुरआ सिरमा ते अञकञ सेनठोओ तदा, निसु मजा छुटीहुलं ठोगओ तना, अलंङ बरनकिंलं लेलऊवा कारे!

"चियआ-का-जेठा! मजा कजिम कजि लआ। अञ-दो एन्डे रआ हकनबुरु चिउलओ कञलेल टोओ तदा। निरल मोका नमाकना, सोमोर हुलंओ अबुवआ ओफिस रे छुटी मेनआं। निसु नेरआ फएदालं नमजोम लेआ। मेन्दो अलं चिल्कालं सेना?" झरी मेनकेदा।

"एन हुलंग अलंग सेतआ रे डेबेलजन चि बेगर जोमनूं केतेरगेलं सेना अद मोयोद अमआं फटाफटिया-ते।" जेठा कजिकेदा।

"ठीकिगे मर!" झरी मेनकेदा। एनाते जोमबेड़ा केदचि ओफिस मुलिकिन रूड़ा जना।

हकन हुलं नाअंदो झरी-इ बिरिद जना अर-ए करकद डेबेल तोरसन जना। सेकेड़ा-गे सम्पोड़ोनजन चि अयआ फटाफटिया ते जेठा तआ-ती-जना। ठीकि इनिइओं तेयराकन तइकेना अर सोंगेयआ गे-ए लेलहोरातन तइकेना। एनाते नाअंदो बरनकिन मोयोद फटफटिया रेकिन उडुं जना। झरी चलाओ तना अर जेठा तयोम रे-ए दुबा कना। नाअंदो सेनओंतन सेनओंतन झरी मेन केदा, "अलंगहेड़ा तना चि चिल्का? का-रे एन्कागेलंग सेनेआं। अमगे तलंग होरा दो उदुब इदिआलंमे। अञदो खुंटी मोसागेञ सेना कना, एनाओं गाड़ी ते।"

"हे जी, मंड़ितेगे दोलं, थेबअए गेआलं! नेअंहोरा खुंटी तला-मला ते कटाजम्बड़ा-ते बो-ओखुन्दड़ी, राँचि चाइबासा होरा हेके। नेरआ तला रे नेताजी चउकु मेनअं। ठीकि हनगुड़-ते लतर रे, लतर चउकुअते हलाजोला मोद किलोमीटर संगिन सिंगिअयुब रे खुंटी हकन मेनअं। नेअं मेयोद सनसुन पीड़ि रे बइआ कना। मंदिरआ बियुर-बियुर-ते दरूको रोवा बिउरा कना। होरा मंदिरतअते कटाजम्बड़ा सआ सेनओंतन लोद मोयोद होरा सिंगितुरओ सआ बियुर जना अर लतर चउकु रे जमा जना ओड़ओ मिआद सोजे कर्रा होरा रे जमाकना। होरा अतोमकिन रे है उली दरूको मेनआं।

हुड़िं-हुड़िं, हसाते बइआकन केचओते दबाकन मंडाओड़आ च मंदिर मेनअं। नेरआ दुअर सिंगितुरओ सआरे मेनआं। सिंगिअयुबि समंकेतेर बोलोओ तना। दखिन रे उडुंओओं दुअर मेनअं। उतर रे गंगा आ लिंगि मेनआ। बोलो दुअराते जोम ती सआरे ओवारि रे महादेवआ सावारी साण्डा-आ मुरतु मेनआं। ठीकि मंदिल रआ समंग सिंगितुरओ रे रचा अतोम रे धुवांसी खुंटा मेनआं। रचा आतोम उतर रे भगतियाको तइन ओड़आ, ओड़ओ नेअंते उतर रे हकन डाँग मेनआं, अर मरंङ लेका बुरुपीड़ि मेनआं। ने बुरुपीड़ि अते पुरूब रे मादेव-पार्वतीयआ थान च दिवीगुड़ी मेनआं। पछिम रे पार्वती असरम च जयर मेनअं। बुरुपीड़ि अते संगिननोओरे पुरूब रे दादुलघाटे मेनआं। नाअंदो खुंटी रआ मंडाओड़आ च मंदिर ओड़ओ हकन मचा पका बइ-उतर जना।

पुर्णिमा रे वैशाख चण्डुऊ रकबलोदगे खुंटी हकन बुरु मनतिं रआ तेयारि एटेगोओ तना। बोंगानिई अर पाटभगता, ठाकुर, ढाँका नगरा, पेरेड़ेंदुरू ओरोंग लेकनकोवआ तइन हकनबुरु मेनते सिदारे लगातिं तना। भगतिआको

निकुतयोमते अपन-अपन सुविस्ता लेकाते इरालिमा, एमा, मोड़ेंमा च अपिमा नतेन को बोलो तना। ने लेकाते जनवसिरमा मोड़ेहिसिते अदिका भगतिआ ने हकन रेको तइन तना। सोबेन भगतिआकोवआ सेवा नतेन अको सुबिस्ता लेका इनियआं एंगा, कुड़ी च मिसीओ भगतियाको लेकागे ओड़आ रे कटब केतेर इसु नियम धरम को अपनेआं। नियते ओड़ओ टुण्डु हुलं ओड़आ रेन एटआ मिदहोड़ोओगे सोंगेरे-ए तइन तना। अमास हुलं भगतिआको हंड़ांना अर पार्वतीयआ जपआ रेको तइना।

वैशाख मरंगचण्डुऊ परिबा निदा भगतिआकोवआ धुंवासी बोंगा होबा तना। नेअं बोंगा रे भगतिआकोके बोंगानिइ ते बोंगामोन्तोर कजिपुरछवेलोद एटआ सआते थोलकेतेर कारे कटा चेतन बो-ओ लतरकेअते धुवन-धूपु ते हदकवतन सेंगेल रआ झोला रे अपिसा सोबेन को हकओ तना। भगतिआ हकाते हड़गुन जनते एना जोअर केतेर मादेव के दुअर रे सेन केतेर इकुड्डुम केतेरको जोअरिआ। नेलेका विधि ते धुवांसी कमिकजि रिकाओ तना।

वैशाख द्वितीय हुलं निदा मेदअंए(जागरण) रआ तइन तना। ने निदा दो मादेव मंडाआ रचा रे छो सुसुन ओमओं तना। नेअं सुसुन रे सिदा उतर हती, मादेव पार्वती ओड़ओ देवी-देवता कोवआ जीउदन लीला ओम उदुबओ तना। धंगड़ाहोन को छो सुसुन को मेन्ते मिसा-मिसा को हबा हबा इदिया। लेलहोड़ोको बकोड़ो बितर रे दुबकेते लेलते बुलाकनलोदको अंङ जतरेआ। तराहोड़ोको च धंगड़ाको सोबेन कलाकार गे हेके अर इन्कु गोटा मुलि बियुरेन बियुरेन लोद अकोवआ कला च दुरङको ओमइदिया। नेअंदो नेआं, ओड़ओ एमन रे बरेआ सुसुनको गोटानिदाको सुसुना। ने निदा दो भगतियाको मंडा ओड़आको होरोवा। चियआचि ने निदा ककटबबोंगातन होड़ोको मंडा ओड़आ अलोकको बोलो धड़िका मेन्ते।

तला निदाजनते अक्षय तृतीय कजियोओ तना। एन सोमोय गेभगतिआ अर बोंगानिई मोसाते अतोम रे बा-सेनेनतेन अंगोर बइमेन्ते विधि-विधान तेको उडुंओगा अर अंगोर नतेन सेंगेल जुलकेतेरको रूड़ाआ। एन जुलाकन सेंगेल बरेआ सुसुन धंगड़ा-धंगिड़िको को लेल होरोया। एनाते घंटा रअ हलाजोला रे चिमतं हंगर तेयर जना इमतं जोतो भगतिआ गोट, बोंगानिई अर रूरूकोलोओ विधि लेकाते बा-सेने नतेनको उडुंओं तना। सिदा दो बोंगानिई ती-ते दआ हिर्चि केतेर-ए हरिबोले तना, एनाते मियाद भगतिया अंगोर के ती ते मादेवआ

दरबर रे इदिकेतेरे-ए रकबे तना। एनाते सोबेन भगतिया अंगोर के अपिसाको बियुरेआ अर-को बा-सेने तना। ओड़ओ एमनते रूड़ाजनते मादेवको जोअरि तना। एनातेको रूडुन तना अर मंडा ओड़आ पहरा रेको तइन तना। नेकन समय रे बुरु रआ एटआ कमिकजिको चिल्का रअ एन्का बेटकद सेसेनाकन गे तइन तना। ने-लेका-ने-लेकाते मेदअंए रआ कमिकजि अंओंलोदगे अ-ए-अ-ए तेगे टुण्डुऊ तना। एन जपआ रेन होड़ोको अपन-अपन ओड़ओतेको सेनओं तना। एटआ सोमते सम्पोड़ोकोओते हकन बुरु लेल हिजुऊ रूड़ा मेन्ते। तिसिं तृतीय रे असे-पसे रेन चसा होड़ोको अंओं सिदा रे अकोवआ ओतेकोरेको हेरपुना तना च मूठको उयुऊ जदा।

अक्षय तृतीय रे जोतो भगतिआको अकोवआ देंगानिइयआं सोंगेरे मंडाओड़आ जपआ रे सोबेन सम्पोड़ोकोलओते अपन-अपन टयद रेको तइन तना। सेतआ साते-आठे बजे सोबेन भगतियाको मोसाते दादुलधटको सेन तना। एमन सिदा दो भगतिआको सिंगितुरओ मुलि समां केतेर सिंगीको बोंगाई तनलोद मुरूद सकमते दआको दुलतना। एनाते पाठभगता के पाठ रेको दोन्दोइया अर मादेववआको रअककलाइया। सकोवां, ढाँका ओड़ओ कुडुदुदु रआ सड़ी घुम्बुरओआ। होड़ोको नेआं बोंगा नेगके लेले नसिबनको मनतिं तना। ने तयोमते नेतआते बोंगानिइ सोजे मंदिर-ए सेनओं तना। जोतो होड़ोकोवआ बोंगा ने सोमयते एटेगोओ तना। होड़ोको बकरा एमन को देवीगुड़ी रेगेको बोंगा रकबको तना। मंडाओड़आ रे खलि तोबा-बा एमन गेको रकबे तना।

भगतियाको गोंट दादुलघाटते मिआद हेसआ दरू उम्बुल रे ढाँका नगरा रआ ताल रे बियुरते रआ पन्तिरेको सुसुना। पोटआहोड़मो, पोंएताकन, रंगाबा सड़ीते धुतिआन, कटा रे गुगुरा, लेंगा-ती-रे बेंते मयंग रे टुन्डाकेते तिंगुआकन, बो-ओ रे बेद, जोम-ती-रे बिरगइयआ चंबर झिरजलोद, ढाँका-नगरा पेरेड़ेंद-कुडुदुदु रआ सड़ी रे ने सुसुन लेलकोवआ जी-ई रचआगिड़िया। नेअं सुसुन तनलोद मादेववआ को लुतुम ककला इदिया-

बले शिवा वाहे
जय जगरनाथ
बुचा महादेव
काशी विश्वनाथ

गया गजा धौ

बले शिवा वाहे!

भगतियाकोवआ तला रे रूतनकोवआ रसिकाओगे लेले लेकनआ बयुऊ तना। ओकोदिपिलि हकन मचा थोलकेते तेयर जना एनदिपिलि भगतियाकोवआ सुसुन होकाओ तना। इमतं इन्कु अपन-अपन मेनअंकोटयदको सेनओं तना। गूड्डु रआ पानादआको नूंइया ओड़ओ हकन नतेन गोलंची माला होटओ फेरेएको बापेरेएना। हकन मचा रे सिदाउतर ढाँका रूनिइको हकाइया। इनिई अपिसा बियुरेनतन बियुरेनतन ढाँका-ए रूबियुरेआ। एन तयोमते भगतिया अपनआ सुबिस्ता लेकाते सारिते मिमिआद, बबरिआ च अपपिआ के डांग रे नवा मरकिन लिजआ ते थोलकेतेर अपिसाको बियुरको तना। सोबेन भगतियाको हकन ते जनते पार्वती च जयर सेनकिअते इनिइको जोअर सिदाइ तना। एनाते मादेवको जोआरि तना। देंगातनिई इमताछेंगोड़ाकेते अकोटयद ते-ए इदिइ तना। एमन अयआ होड़ोकोके-ए जोअरको तना एनाते ठहरओवाकन जोमको-ए जोमेआं। ओड़ओ एनाते बुरुते सनांतन जिनिसिको किरिंग केतेर अयआ ओड़आ नं-ए उड्डुओंओ तना। हतु सेनकेते असे-पसे रेन एटआ कुड़िंको लोटा रे दआ इदि कतेर इनियआ कटाको अबुंएआं। एनातेको जोपोअर तना अर परसदि रआ रूपु रे बा-ए ओमसिदाको तना एनाते जां नूं-इ जिनिसिको-ए ओमकोवा। दो खुंटी हकनबुरु रआ संछेप कजि नेआंगे हेके। नाअंदो अम लेलगेआम दं। नेअं तजना गड़ा हेके, नाअं दो मेनेम गाड़िकद-रे-दोलं थेबएगेआ।" कजिलोद जेठा-ए हपन जना। हुड़िंगे मिनिटिकोरे नेताजी चउकु थेबआजन चि गाड़ि मंड़िते जना।

"अम-जी-तलं! लेललिकिनमे चि एन धंगिडिकिन दो, इंकिन नेते दुमङकिन रूरकब जदा? नाअंदो अलं ओकोसआतेलं सेनोगा?" झरी-इ मेनकेदा।

"क-जी-तलं, दोला सोजेगे लतर सआगे हरेमे! मिअद होरा सिंगिअयुब तेओ सेना कना। ने-दुमङ रू-तनकिन दो धंगिड़िकिं क-हेके। इन्किन रसिका धंगड़ाकिन हेके, धंगिड़िलेका सम्पोड़ो रे निकिन शहर लतर अर चेतनकिन रू बियुर जदा। निकुगे गोटानिदा, धंगड़ा-धंगिड़ी छोपीड़ि रे बरेआको सुसुनअंग लआ। ने दिपिलि दो एन्ते रआ सुसुन-दुरङ कमिकजि रूड्डुआकन लेकाते इन्किन नेतेकिन रू-बियुर जदा। नाअंदो एन्ते रआ सुसुन-दुरङ हेड़ानोओंते ओड़ओ एटेए रूड़ाओआ। दोलाअलं लेलेगेआ-दं।" जेठा कजितनलोद लतर

चउकु मुलिकिन बोलो जना। ठीकि भट्टीतआ रेकिना चि हनसआते भगतियाको दादुलघाट मेन्तेको हिजुऊ तना। अकिनोगे लेले-दरसन मेन्तेकिन हड़गुन जना, गाड़ी चेतन रे तिंगुतुका केअते। दादुलघाटे लेलकेतेर सोबन नाअंदोको रूड़ा तना। सेनजद-सेनजद, "ने इलाका रे अबुवआ एनेटेए नेग-दस्तुरको चिल्का रआ एन्कागे सरेगा कना। जां-मुसिं खंटीओगे मरङ नगोर बइजन तयोमते नेअंको नेकागे तइनाचि-का! नाअंदो भगतियाको नेमनते कोमनको सेना?" झरी मेनकेदा।

"ह-ने-ए, हन हेसआ सुबा रे नाअंदोको सुसुना, हकन डांग अउरि थोलओ जकेद। दो-लं लेलकोगेआदं। एनाते सिदो मादेवआलं दरसनलेआ।" जेठा कजिकेदा।

बरनकिन भगतियाको सुसुनकिन लेलतना। सुसुन नेएगे टुण्डुइ सिदा रे दोरसोन मेन्तेकिन सेनओं जना। सरजोम पुड़ुऊ रे सिरनी अर बाकिन किरिंग केद चि मादेवमंडाकिन सेनओं जना। जोअरलोद किं बोलो जना अर बोंगानिइके पुड़ुऊकिन ओमइ तना। बोंगानिइ मिमिद होड़ोते लुतुमेए कुलिके-ए किना अर इंकिंआ लुतुमते इनिई बा-सिरनी-ई रकब केदा। एनाते मादेवकेकिं जोअर किइचि बोंगानिई मोलों रे-ए टिकाकेद किना, अरकिं उडुंजना। तयोम दो मोयोद होटोल रेकिन सेनओं जना। सिदा रकब लेन मेटइकोकिन जोम केदा अर तरादो उरमल रेकिन पोओम केदा। एनाते होटेल रेकिन नास्तान जना।

मंड़ि-मंड़िते नाअंदो हकन बुरु जुमकओ रूड़ाओ तना। भगतियाको हका एटेएकेदकोआ। अकिनो गड़िकदकिन लेल तना, भगतिया बा-गमा जदआकोकिं तेला दरोम जदा। एनाते अकिनो होनोर बेड़ाकिन मोनेकेदा। धंगड़ा-धंगिड़िको दोपद-दोपदको होनोर बेड़ा तना, दुरङ बेड़ा तना, सुसुन बेड़ा तना। ओकोए रूतु ओरोंग तना, ओकोए मुरली, ओकोए दुमङ-ढुल्की रूतना ओकोए बनम मेनेम हकनबुरु नेअंकोते रूब गिड़िअ कना। नगे सिपई मेनई नगे तिपई। सोबेन धंगड़ाको दण्डाआ-कपिको सबा कदा। बुरु रे नगे बोरो मेनआं नगे चिरि! ओको जाति रेन-चि-होड़ो बंगइया? बियुरेनतन बियुरेनतन, "निदाओ चि-जी नेमन नेकागेको होनोर बेड़ा केना?" झरी मेनकेदा। "क-जी-तलं। नेआंदो हकनबुरु पीड़ि हेके! निदा दो मंडा ओड़आको होनोर बियुरिजद तइकेना। भगतियाकोनं सेंगेल बइलेन जपआ रे एनां शहर रे दुमङ -रू-तनकेन धंगड़ा धंगिड़िको सुसुन केना।" जेठा मेन केदा।

"नेते नमिन ठंग-ठंग पीड़ि रे गोटानिदा धंगड़ा-धंगिड़िको सुसुन कको चि बोरोकेदा?" झरी मेनकेदा।

"क-चिकन बोरो! एसेकरगे मोयोद धंगिड़ियो गोटानिदा मजालेका-ए होनोर बेड़ा धड़ियआ। हे निदा नुबाआ धंगड़ा च धंगिड़ि रेओगे बोरोदो तइनगेआ बोंगा-चोंगाकोते। कारे ओड़ओ चिकन बोरो मेनआं, जेतन बोरो बनओं।" जेठा मेनकेदा।

"हे, नेते रेन होड़ोको हेवा तदा मेन्ते, का-रे-भला बोरो चि कअटकरओआ!" झरी मेनकेदा।

"बोरोदो अटकरओआ! एनामेन्ते निदा दो धंगड़ा-धंगिड़िको जमा-जमाको हिजुऊ सेनोगा। मोद सिरमा एन्कागे अले ने-छो-लेल मेन्तेले हिजुऊतन तइकेना। बलेए चण्डुऊ डुबुइआकन तला निदा रआ समय तइकेना। मिदतआ निदा नुबआ बोंगाको नमओं टयद मेन्ते उमिआंकन तआले थेबाआ केदा। एमन रेगे होरा रे बरिआ जोड़ारे इदु चिकन जनोवरकिन उडुजना। अलेतआ रे मिआद गे जुपु जुपुतन लमटेम दीया तइकेना। दीया जपआ लेकिन रेदोकिन लेलओ तना का-रेदो-का। मिआद दासि घंटा हड़म नाअंदो घंटा सड़ीलोद-ए खुदओजद किना। अलेओ होनको सोबेन एन्तेगेले निरइदि जदा तयोम-तयोमते। हुडिं दूर कुदओ इदिकेदकिन चि तयोम दो ओड़ओ छो लेलतेले हिजुऊ जना। संगिगे तइकेन लेकाते बोरा-दो-कअटकर जना। मिद बर होड़ो तइकेन रेदो होनां चि चिकाजन तेयआ एना क-कजिधड़ियोओ तना। एन्कागे तयोमते दो मोद-बर सिरमा अञआं भतिजा कोड़ा दशरथ हतुरेन सोंगे कोलओते खुंटी छो सुसुन गोटा निदा को ओमलआ।" जेठा मेनकेदा।

"अबु हतुओ ने हकन रे मेनअं?" झरी मेनकेदा "हे अले हतु जकेद नेरआ सिमन मेनआं। अयर हतुकोदो एटआ हकन बुरु रे मेनअं मेंदो एनाको खुंटी हकन तयोम तेको बुरु जदा। सिदा दो अले हतुबिरातेगे हकन डाँग अगुतन तइकेना। मेन्तेको उदुबेजद केना।" जेठा मेनकेदा

"अम जी, नाअंदो बुरु दो जुम्कओआ कना, मेन्दा जेटे झोर जना। होयो रआ दो लुतुमगे बनओं जना। बुरु ओको सोमय टुण्डुऊवा?" झरी मेनकेदा।

"नेआं नाअंदो सिंगी चिल्का गोडेगोओआ एन्का अ-ए-अ-ए तेगे टुण्डुऊआ। पुरआते होड़ोको सेनओं इदितना। टुण्डु रे दोकनको बइरको

सरेगोगा नाअंदो दोलं अलंओं हतुलं बोलो तोरसाकोओआ। जेटे लम्बुऊजनते राँची तेलं सेनोगा।" जेठा मेनकेदा।

एनाते होनको मेनते मेटइको किरिंबेड़ा केद चि फटफटिया रेकिन दे-ए जना अर ओड़आ मुलिकिन सोजेन जना।

खूँटी मंडा

एक राँची का झरी और एक खूँटी का जेठा नामक दो युवक सचिवालय में काम करते हैं। एक साथ काम करते-करते दोनों में घनिष्ट मित्रता हुई। वे दोनों अविवाहित हैं, कहीं भी जाना हो तो अलग नहीं होते। शनिवार को ही दफतर में वे दोनों घूमने का कार्यक्रम बना लेते हैं। फिर रविवार को किसी एक के घर में मिलकर, साथ में खा-पीकर एक ही मोटर साइकिल में घूमने निकल जाते हैं।

मंडा का मौसम था। रविवार को खूंटी मंडा होनेवाला है। इसलिए जेठा मंडा घुमने जाने का सोच रहा है। एक दिन ठीक जलपान का समय हो गया कि वे दोनों होटल की ओर चले गए। होटल में खाते-पीते जेठा कहने लगा, "हे मित्र, आने वाला रविवार को मेरे ओर का खूंटी मंडा है। मैं बहुत दिनों से नहीं जा सका हूँ। इस बार छुट्टी के दिन हो रहा है, हम क्यों न देख आएं?"

"क्यों नहीं जेठा! आपने अच्छी बात कही है। मैंने वहाँ का मंडा कभी नहीं देखा है। सुअवसर प्राप्त है, सोमवार को भी हमारा ऑफिस बन्द है। इस बार इस मौके का फायदा उठा लें। परंतु हम कैसे जाएंगे?" झरी ने कहा।

"उस दिन हम स्नान कर बिना खाए ही जाएंगे। आपकी मोटर साइकिल से।" जेठा ने कहा। "ठीक है" मंडा के दिन झरी उठते ही स्नान कर तैयार हुआ। फिर मोटर साइकिल से जेठा के पास चला गया। ठीक वह भी तैयार होकर अपने मित्र की प्रतिक्षा कर रहा था। तब दोनों एक मोटर

साइकिल में निकल गए। झरी मोटर साइकिल चला रहा है और जेठा पीछे बैठा हुआ है। चलते-चलते झरी ने कहा, "हमें देरी हो रही है क्या? नहीं तो वैसी ही गति में जाएंगे? रास्ता आप बताते जाइएगा। मैं खूंटी एक बार गया हूँ वो भी गाड़ी से।"

"हाँ, धीरे ही चलिए पहुँच जाएंगे। यहीं मार्ग खूंटी के बीचो-बीच उत्तर से दक्षिण, राँची चाइबासा का मार्ग है। इसके केन्द्र में नेता जी चौक है। ठीक ढलान के नीचे, नीचे चौक से लगभग एक किलोमीटर पश्चिम में खूंटी मंडा है। यह एक सुनसान मैदान में स्थित है। मंदिर के चारों ओर पेड़ लगे हुए हैं। रास्ता मंदिर से उत्तर जाते हुए एक शाखा पूरब की ओर मुड़कर नीचे चौक में और एक सीधे कर्रा रोड में जा मिली है। रास्ता के किनारे आम के वृक्ष हैं।"

छोटा-सा मिट्टी का बना खपरैल मंडाघर या मंदिर है। इसका मुख्य द्वार पूरब की ओर है। प्रवेश पश्चिम मुँह कर किया जाता है। दक्षिण में निकासी द्वार है, उत्तर में गंगा की धारा है। प्रवेश द्वार की दहिनी ओर वारण्डा में महादेव की सवारी साँड की मूर्ति है। ठीक मंदिर के सामने पूरब में आँगन के किनारे धुवांसी का खूटा है। आंगन के किनारे उत्तर में भगतियाग है और इसके उत्तर में झुलने का मचान है एवं बड़ा-सा मेला टाँड़ है। मेला टांड़ के पूरब में महादेव-पार्वती का स्थान दिवीगुड़ी है। पश्चिम में पार्वती आश्रम या जयर है। मेलाटाँड़ से हटकर पूरब में दादलघाट है। अब खूंटी का मंडाघर व मंदिर और झुलन खूटा को पक्का बना दिया गया है।

पूर्णिमा को वैशाख मास चढ़ते ही खूंटी मंडा पर्व मनाने की तैयारी चलने लगती है। पूजारी एवं पाटभगता, ठाकुर, ढाँक, नगाड़ें, शहनाई वादक आदि की उपस्थिति मंडा के लिए पहले होती है। अन्य भगतिया इसके बाद अपनी-अपनी सुविधानुसार नौ, सात, पाँच व तीन दिनों का प्रवेश लेते हैं। इस प्रकार प्रतिवर्ष एक सौ से अधिक भगतिया इस मंडा में सम्मिलित होते हैं। हर एक भगतिया की सेवा के लिए अपनी सुविधानुसार उनकी माता, पत्नी या बहन भी भगतिया के समान ही घर में व्रत कर बड़े नियम धर्म का पालन करती हैं। इसके अलावे अंतिम दिन परिवार का अन्य एक पुरुष सदस्य भी साथ देने में रहता है। अमावस्या को भगतिया रूठकर पार्वती की शरण में जाते है। वैशाख शुक्ल पक्ष परिबा की रात भगतियों का धुवांसी अनुष्ठान

होता है। इस अनुष्ठान में भगतियों को पुजारी द्वारा पूजामंत्र उच्चारण के साथ उल्टे लटकाकर या पैर ऊपर सिर नीचेकर धुवन-धुप से धधकती आग की लपेटों पर तीन बार प्रत्येक को झुलाया जाता है। भगतिया झुला से उतरकर उसे प्रणाम करते जाता है। इस विधि से धुवांसी का कार्यक्रम सम्पन्न किया जाता है।

वैशाख द्वितीय की रात जागरण का होता है। इस रात को महादेव मंडा के आंगन में छऊ नृत्य प्रस्तुत किया जाता है इस नृत्य में गणेश, महादेव-पार्वती एवं देवी-देवताओं की जीवन लीला प्रस्तुत किया जाता है। दर्शक घेरे के अन्दर बैठकर मंत्र-मुग्ध हो देखते सुबह कर देते हैं। युवा वर्ग सभी कलाकार होते हैं और वे चारों ओर घूम-घूमकर अपनी कला प्रस्तुत करते जाते हैं। इसके अतिरिक्त बगल में अन्य नृत्य मंडली रात भर नृत्य प्रस्तुत करते हैं। इस रात में भगतिया मंडा घर की रक्षा करते हैं। ताकि उस रात अव्रतियों का प्रवेश मंडाघर में न हो सके।

आधी रात के बाद अक्षय तृतीय का होता है। उसी समय भगतिया तथा पुजारी मंडल बगल में फूल खुन्दी के लिए अंगोर बनाने विधि-विधान से निकलते हैं तथा अंगोर के लिए आग जलाकर लौटते हैं। फिर एक घंटा के लगभग में जब अंगोर तैयार हो जाता है, तब सभी भगतिया मंडली, पुजारी एवं बाजे के साथ विधि के अनुसार फूलखून्दी के लिए निकलते हैं। सर्व प्रथम पुजारी हाथ से जल छिड़ककर शुद्धिकरण करता है तब एक भगतिया अंगार को दोनों हाथ से पहले महादेव के दरबार में ले जाकर चढ़ाता है। तब सभी भगतिया अंगोर के चारों ओर तीन बार घूमते हैं और फूल खून्दी करते हैं। पुनः वहाँ से लौटकर महादेव को प्रणाम करते है फिर विश्राम करते हैं तथा मंडा घर दखभाल में जुट जाते हैं। इसके दौरान मेले के अन्य कार्यक्रम ज्यों का त्यों बिना रूके चलते ही रहते हैं। इस तरह करते-करते जागरण का कार्यक्रम सुबह होते ही अपने-आप समाप्त हो जाता है। आस-पास के लोग अपने-अपने घर चले जाते हैं, फिर से तैयार होकर झुलन मेला देखने आने के लिए। इसी तृतीया को आस-पास के किसान और होने के पूर्व अपने खेतों में धनबुनी प्रारंभ करते हैं या मूठ गिराते हैं।

अक्षय तृतीया को सारे भगतिया अपने सहयोगी के साथ मंडा के पास पूरे साज सामानों के साथ अपने-अपने पड़ाव में रहते हैं। सुबह

सात-आठ बजे सारे भगतियागण दादुलधाट जाते हैं। वहाँ पर सर्व प्रथम भगतियागण पूरब मुहँकर सुर्य की उपासना करते परसा पत्ती से जलअर्पण करते हैं। फिर पटभगता को पाठ में उठाकर महादेव का उदबोधन करते हैं। शंख, ढाँक एवं दन्दुभी की आवाज गुंज उठती है। लोग इस पूजा-अनुष्ठान को देखना शुभ मानते हैं। इसके बाद यहाँ से पुजारी सीधे मंदिर चला जाता है। आम लोगों की पूजा इस समय से शुरू हो जाती है। आम लोग बकरा आदि की दक्षिण देवीगुड़ी में ही चढ़ाते हैं, मंडा मंदिर में सिर्फ दूध-फूल आदि चढ़ाते हैं।

भगतिया का दल दादुजघाट से एक पीपल के पेड़ की छाया में ढाँक नगाड़े की ताल में गोलाकार की पंक्ति में नृत्य प्रस्तुत करते हैं। खाली बदन, जेनुए पहने, रंगीन साड़ी की धोती पहने, पैर में घुंघरू, बाँए हाथ में बेंत कमर में टेके ऊपर किए हुए सिर पर फुल दाहिने हाथ मे नील गाय का चांवर लहराते हुए ढाँक-नगाड़े, शहनाई दंदभी की तान में यह नृत्य दर्शकों का मन मोह लेता है। इस नृत्य के दौरान महादेव का उद्बोधन करते जाते हैं-

बोले शिवा वाहे
जय जगरनाथ
बुचा महादेव
काशीविश्वनाथ
गया गजा धौ
बोले शिवा बाहे!

भगतियों के बीच में वादकों का आनंद भी देखते ही बनता है। जब झूलने का मचान तैयार हो जाता है तब भगतियों का नृत्य बंद हो जाता है। इस समय वे अपने-अपने ठहराव के पास चले जाते हैं। वे गुड़-पानी पीते हैं फिर झूलने के लिए गोलइची माला गले भर पहनते हैं। झूलन मचान पर सर्वप्रथम ढाँक वादक को झुलाते हैं। उसको तीन बार घुमाते हैं और वह घुमाते हुए ढाँक बजाते रहता है। इसके बाद भगतियागण अपनी सुविधानुसार लगातार एक-एक, दो-दो या तीन-तीन को डाँग में नया मारकिन कपड़ा से बांधकर लोगों को घुमाते हैं। भगतिया लोग झूलकर उतरने के बाद पार्वती आश्रम जाकर उसे प्रणाम करते हैं, तब महादेव को प्रणाम करते हैं। उसका सहयोगी उसे कांधे पर बैठाकर अपने पड़ाव पर ले जाता है। वहाँ वह अपने

लोगों से गले मिलता है। उसके बाद जो भी आहार लेने का है, वह लेता है। फिर मेले में खरीदने योग्य वस्तुएं खरीदकर वह अपने घर के लिए प्रस्थान करता है। गाँव पहुँचने पर अगल-बगल की औरतें लोटा में पानी लेकर आती हैं तथा उसके पैर धोती हैं। तब वह उनसे भी गले मिलता है तथा प्रसाद के रूप में फूल एवं मीठा जल पिलाता है।

तो खूंटी मंडा का संक्षेप सार यही है। अब तो आप देखिएगा ही। यह तजना नदी है। अब कहिए तो हम क्षण भर में पहुँच जाएंगे।" कहते हुए जेठा चुप हो गया। कुछ ही मिनटों में वे नेता जी चौक पहुँचे कि गाड़ी की चाल धीमी हो गई।

'हे मित्र! देखिए तो उन युवतियों को, वे दोनों इधर मांदर बजाती आ रही हैं। अब हम किस ओर से जाएं?" झरी ने कहा।

"नहीं बंधु! सीधे नीचे की ओर ही चलिए। मांदर बजाती हुई वो दोनों युवतियां नहीं हैं। वे दोनों रसिक युवक हैं। लड़कियों-सी पहन कर दोनों शहर के नीचे और ऊपर बजा फिर रहे हैं। छऊ टाँड़ में इन युवक-युवतियों ने बरेआ नृत्य करते हुए सारी रात बीता कर सुबह कर दिया है। इस वक्त उस ओर नाच-गान का कार्यक्रम थम गया है। जिस कारण वे दोनों इधर बजाते विहार कर रहे हैं। अब उस ओर का नृत्य-गान कुछ देर बाद पुनः आरंभ हो जाएगा। चलिए हम देखेंगे ही।"

जेठा के कहते ही वे नीचे चौक होते हुए दोनों उस ओर घुस गए। ठीक भट्ठी के पास पहुँचे हैं कि उधर से भगतिया दादुलघाट के लिए आ रहे हैं। वे दोनों भी देखने, दर्शन के लिए उतर गए, गाड़ी ऊपर खड़ी कर के।

दादुल घाट देखने के बाद अब सभी लोग लौट रहे हैं। चलते-चलते झरी ने कहा, "इस क्षेत्र में हमारे आदि नेग-दस्तुर ज्यों का त्यों बचे हुए हैं। किसी दिन खूँटी के भी महानगर बन जाने पर यह सब ऐसा ही रहेगा अथवा नहीं! अब भगतिया यहाँ से कहाँ जाएंगे?"

"वो! देखिए! उस पीपल पेड़ के नीचे अब ने नृत्य करेंगे। जब तक झूलन का मचान तैयार नहीं हो जाता। चलिए, अब हमने देख लिया। पहले हम महादेव का दर्शन कर लेंगे।" जेठा ने कहा।

वे दोनों भगतियों का नृत्य देख रहे हैं। नृत्य अब खत्म होनेवाला था, उससे पहले ही वे दोनों दर्शन के लिए चले गए। साखु दोना में सिरनी और

फूल खरीद कर महादेव मंडप चले गए। प्रणाम करते दोनों घुस गए तथा वे पुजारी को दोना दे रहे हैं। पुजारी ने एक-एक कर के नाम पूछा तथा उन दोनों के नाम से फूल और सिरनी चढ़ा दिया। तब उन दोनों ने महादेव को प्रणाम किया और निकल गए। उसके पश्चात् दोनों एक होटल पहुँचे। पहले तो उन्होंने कुछ प्रसादी खाया और बाकी को रूमाल में बांधकर रख लिया। उसके बाद दोनों ने नाश्ता किया।

अब धीरे-धीरे मंडा मेला पुनः जुमक रहा है। भगतियों का झूलना आरंभ हो गया है। वे दोनों भी देखने लगे। फूलों की वर्षा हो रही है। उसे दोनों ग्रहण कर रहे हैं। उसके बाद दोनों ने भ्रमण करना चाहा। युवक-युवतियों का दल भ्रमण कर रहा था, गाते-बजाते हुए। कोई बाँसरी बजा रहा है, कोई मुरली, कोई मांदर-ढोल बजा रहा है, कोई सारंगी। मेला इन सबसे गूंज उठा है। न कोई सिपाही है और न कोई रक्षक। सभी युवा डंडा-फरसा पकड़े हुए हैं। मेला में न कोई डर है और न कोई भय। किस समुदाय का आदमी नहीं है। भ्रमण करते-करते, "क्या रात को भी यहाँ इसी तरह लोग भ्रमण कर रहे थे, बंधु?" झरी ने कहा।

"नहीं बंधु! यह मंडा टाँड़ है। रात को लोग मंडा घर के चारों ओर भ्रमण कर रहे थे। भगतियों के लिए आग के बने फुलखुंदी के पास रातभर शहर में मांदर बजा रहे युवक-युवतियों ने नृत्य किया था।" जेठा ने कहा।

"इस ओर, इतना खुले जगह में रातभर युवक-युवतियों का नाचना, उन्हें डर नहीं लगा क्या?" झरी ने आश्चर्य से कहा।

"नहीं, क्या डर है! अकेले एक युवती भी सारी रात स्वतंत्र घूम सकती है। हाँ, अंधकार में युवक या युवती में भी डर तो रहता ही है भूत-प्रेतों से। नहीं तो और क्या डर है, कोई डर नहीं है।" जेठा ने जवाब दिया।

"हाँ, इधर के लोगों की आदत है इसलिए, नहीं तो भला डर नहीं लगेगा क्या!" झरी ने कहा।

"डर तो लगेगा! इसलिए रात को युवक-युवतियाँ मिल-जुलकर आना-जाना करते हैं। एक वर्ष वैसा ही हम यहाँ का छऊ देखने आ रहे थे। छोटा चाँद डूबा हुआ था। आधी रात का समय था। एक जगह रात अंधकार में भूत निकलने के लिए प्रसिद्ध है। हम वहाँ पहुँचे। वहीं पर रास्ते में एक जोड़े में पता नहीं कौन-सा जानवर निकले। हमारे पास एक ही कम रोशनी

का लालटेन था। बत्ती पास करने पर दोनों दिखाई दे रहे हैं नहीं तो नहीं। एक धांगर घंटा बूढ़ा घंटा बजाते उन दोनों को दौड़ा रहा है। हम बच्चे भी उसी ओर दौड़ते जा रहे हैं पीछे-पीछे। कुछ दूर उन्हें दौड़ाकर फिर हम छऊ नृत्य देखने आ गए। हमारी संख्या अधिक थी जिससे डर नहीं लगा। एक-दो व्यक्ति रहने पर पता नहीं क्या होता, यह नहीं बताया जा सकता है। उसी तरह बाद में एक-दो वर्षों तक मेरा भतीजा दशरथ गाँव के साथियो के साथ खूँटी में छऊ नृत्य सारी रात प्रस्तुत किया था।'' जेठा ने कहा।

''हमारे गाँव की भी इस मंडा में सहभागिता है?'' झरी ने पूछा।

''हाँ! हमारे गाँव तक इसकी सीमा है। इससे आगे का गाँव दूसरे मंडा में है और इसके बाद लगता है। पहले तो हमारे गाँव के वन से झूलन का डांग लाया जाता था। ऐसा लोग बताते हैं।'' जेठा बोला।

''बंधु, अब मेला जुमा हुआ है पर गर्मी चरम पर है। हवा एकदम शांत है। मेला कब अंत होगा?'' झरी ने पूछा।

''यह अब दोपहर के बाद अपने आप अंत हो जाएगा। अधिकतर लोग जाने लगे हैं। अंत में सिर्फ दूकाने बच जाएंगी। अब तो चलिए। हम भी गाँव में घुसते हुए जाएंगे। गर्मी कम हो जाने पर राँची लौट जाएंगे।'' जेठा ने कहा।

उसके पश्चात् बच्चों के लिए मिठाइयाँ खरीद कर मोटरसाइकिल में दोनों बैठ गए तथा घर की ओर प्रस्थान कर गए।

नवा सरा

उयुऊ दआ रआ सोमय तइकेना। चासा-बसा-सा एटेजाकन तइकेना। ठीकि ने-सोमय-गे मुसिं बोलोक सअते सरकारि सरा, हतु रेन मुण्डाआ ओड़आ रे उयुऊ जना गाड़ी-ते। ने सरा के हतु रेन खितियर होड़ोको के हटिंआको मेन्ते। तरा-दो पएसा ते अर तरा-दो बे-पएसाते, मेन्दो रिड़िं ते ओमेनं हिजुगाकन तइकेना। बे-पएसा-ते एनामेन्ते ओमओतन तइकेना, चियआचि ने-सरा रआ गुन-पेड़ेए निमतं जकेद हतु रेन होड़ोको कको इतुआकद तइकेना। पएसाते बइर मेनलेरेदो पुरआते होड़ो सरा कको किरिंएआ। नवा सरा नवा गे ओनचराकन तइकेना। बोलोकोवओगे कमि हेके चि खिति-बतितन होड़ोकोके ओड़ओ रेंगेए होड़ोकोके च तयोमाकन होड़ोकोके सरकारि देंगाते उबरकोवआ अर ओमाको। नवा नवा हिता, सरा, खितिइ होरा, रिड़िंकड़िको ओमाको लेकनआ नेरआ कमी तइकेना अर मेनआं।

नेअते सिदा दो हतु रेन होड़ोको बेगर बोलोक रआ सरा च बेगर रसायनिक सरा तेगेको खितितन तइकेना। गुरिइ सरा, दुबी सराते बारिको खितितन तइकेना। एनामेन्ते तरामरा गोड़ापिड़ी रे कोम गे उपुजा होबातन तइकेना। चिल्काते चि गुरिइ सरा हुपुड़िइ-हुपुड़िइको मेसाजद तइकेना आर गुरिइ सरा ते गोड़ापिड़ी रे रकम रआ तसद ओमोनतन तइकेना। कहेड़ेद तुसङ केरेदो बबा के तसद गे-ए उकु छबाया। ने-लेकाते होड़ोको रेंगेएतन तइकेना। बिर अर दारू सिंगको रे असरा तइकेना। सिरमा रे भगाजोगा मोसागेको चासातन तइकेना। एनाओ होबा जना दो मेनआं, क-होबा जना दो बनओ।

भगाजोगा साल भइर रआ जोम होबातन तइकेना। ओकोयआ संगी ओतेपिड़ी मेनअंको एनां-गे किसड़ांको तइकेना अर मेनअंकोआ। पटाओकेतेर अर सरा रानुको मेसा केतेर ओते पीड़ि रे उपुजा पोसाए रआ जेतन सुबिसताको क-तइकेना।

नाअंदो अउआकन सरा हटिंग रआ जिमा पंचाइटि रेन भी.एल. डब्लुवआ तइकेना। एन भी.एल. डब्लू. खूब भड़ा-भड़ातनेए जगरतनकेन लेकाते इनिइके भड़भड़िआ भी.एल.डब्लु को मेतइतन तइकेना।

गपातेरे नाअंदो एन भी.एल.डब्लु. सरा हटिं मेन्ते सेतआ रे-ए हिजुऊ जना। साइकिल चेतनतेगे चेतनटोला सआ रेन होड़ोकोकेदो-ए उदुब गरका तुकाको जना। एनाते ठीकि भी.एल.डब्लु तलाटोला रे-ए थेबआ केदा। साइकिल मंड़ीलेन चि तिंगु जना। दिंगआ होड़ो साइकिल मयंग रे कटा चपदलेद चि थेच्चेकेनेए हड़गुन जना। कुआं तआ रे मुण्डाआ कोनेआं थिपीको-ए गसरतन तइकेना। लसड़िते इनिइ के-ए मेतइ तना, “क-तीअन पकाई भाभी?” मुण्डाआ कोनेआं बुझओ जना चि-भइ क-ए बुझओ जना। कजिरूड़ा केदा-ए, “एन्ते गेदंए सेनओं जना!” ददात्र कोतिइ जना मेतत्र तना जाअ मेन्ते। भी.एल.डब्लु. ने कजिइ बुझओ जना चि भइ-का! इनिइओ एनाते हपे-हपे साइकिल रे फलंगवन जनचि लतरटोलामुलिइ सेनओं जना।

भी.एल.डब्लु. सोजे जोजोसुबा रे-ए तिंगुन जना। अर साइकिलए टिड़िं ....लआ। सोमा अयुमे चुटिगे-ए उडुंलेना दो, भी.एल.डब्लु. हेके। एनलोदगे हिजुऊ लेन चि-इ मेन, “परनाम सर!”

“हूंउ, दोला अपे सोबेनको सरा तेला। नेतेरेन सोबेनको के अम जूबोदे उदुबाकोम।” भी.एल.डब्लुइ कजि केदा। “हे मर,” मेनेलोद सोमा सोबेनकोके-ए उदुबको तना ओड़आ-ओड़आ सेन-सेन केतेर।

एन्कादो सिदा हुलां रे कजिआ कना, गपा बोलोक सरा हटिंओंगा मेनेयआ। एनामेन्ते एनकन सोबेन होड़ोको ओड़आ रेगे मेनआकोआ। इन्कु जोतो सरा हटिंओंओ सोमयगेको तंगितन तइकेना।

ने लेका नाअंदो भी.एल.डब्लु. हतु रे सोबेन मुलिइ उदुबको जना। एनाते सिदा रे सरा दोआकन ओड़आ तआए रूड़ा जना अर होड़ोको-ए लेलहोरा तना। हुड़िं गाड़ि रेगे चेतन-लतरटोला सोबेन मुलिते हतु रेनको मिमिद, बबर, अपपिहोड़ो दोपद-दोपदको हिजुऊ तना। सोबेनको सरा तेलाए

अर गो-ओ इदिए नतेन अपन-अपन बोरा, खनची अर सिकुवर-चकुली लेकनअंको अउतोरसा जदको तइकेना।

सरा हटिं एटेए जना, तुला-तुला केअद। तुलातन होड़ो हातु रेनकोगे तइकेना। भी.एल.डब्लु. रजिस्टर रे सोबेनकोवआ लुतुमेए ओलइदि जद तइकेना अर नेआंओ-ए ओलइदि जदा चि ओकोए चिमुं सरा बेपएसा ते-ए नम जदा अर चिमुं पएसा ते-ए नम जदा मेनेयआं। एनाते लुतुम पन्ति रे एन होड़ोको-ए सही रिका इदि जदकोआ। ओकोए लुतुम ओल-का इतुआनिइ के-ए ठेपा रिका जअकोतन तइकेना।

बेपएसा-ते च फिरिते हटिंओंओतन सरा सोबेनको के बराबरि नम जना। मेन्दो पएसाते च रिड़िंते रआ सरा ओकोए चिमुं अउमोने जअइआ इनिइ इमुंगेए ओमओंतन तइकेना। तरामरा कोरे दो बोरोओ हिजुऊतन तइकेना, "तयोम ते ओम रूड़ा धड़ियोगा चिभइ-का!" मेने मेने! इमिन रेओगे अपन अपन गोड़ापिड़ी दोरेयब केतेर अर कुलिपुरसा लेतेको अउकेदगेको तइकेना।

एन सोमय सरकारि सरा च बोलोक सरा रआ गानोंग कोम गे तइकेना। ठीकि एनकोरे होड़ोकोतआकोरे पएसा च टकाओ क-तइन तनकेना। एनामेन्ते सरकारआ सनां तइकेना, "नवा सरा बोलोक सआते परचरे रआ। सिदा सिदापएसा तेदो जेतएकको किरिंएआं, अर बेपएसा च फिरितेदो जरूडुतेको अगुइ-आ। बे-पएसा-ते बारि अउलेरेओ नेरआ गुनको इतुकेरे दो अयर सिरमा दोको किरिंएगेआ" मेन्ते। तयोम दो हतु रेन सोबेन खितियर होड़ोको अपन अपन हिसा सराको नमकेदा। तिकिन सिंगी गोड़ेए जना। एनाते कुआं रे अबुं बइनजन चि भी.एल.डब्लु. के मुण्डाआ ओड़आ रे मण्डीउतुको खिआओ किइआ अर चुना-तमाकुजन चि तयोम दो इनिइ रूड़ा जना।

नवा नवा नाअंदो हतु रेन सोबेन ओड़आ रेन होड़ो सराको नमकेदा। बोलोक सअते। गोड़ापिड़ी रे गोड़ाबबा रे सरकारी सराको हेर मेसा केदा। गोड़ाबबा ओमोन गे हेड़ा, गुल-गुलतन हरा रकब जना। गामा एन सिरमा क-ए घटिकेदा। गोड़ाबबा एन सिरमा सिदा सिरमाते अदिका-गे होबा जना, सोबेनकोवआ। पांड़ां मोयोद मरंग लेकन पिड़ी रे एन सराते गोड़ाबबा-ए चासा केदा। अनादो खूब उपुजा जना अर एन सिरमा-दो एन मिआद गोड़ा रेगे हिसिबरिआ-ए बन्दी केदा। हे गेको पतिआ जना रसायनिक सरा रअ गुन-पेड़ेए! तयोम सिरमा दो एन पिड़ी रे कोदे-ए रोआ केदा। एनाओ हले

लटिइगिड़ि जना अर कोदेओ मोद हिसिगोटए पोटोम केदा। नेअंते सिदा दो ने पिड़ी रे गोड़ाबबा क-क-ते भगाजोगा मोड़ें खण्डी लेका होबातन तइकेना।

ने-लेका ने-लेका-ते रसायनिक सरा रआ परभाव हतु होड़ोकोरे ठोओ जना। खासे लेकाते गोड़ापिड़ी ओतेकोनं दो इसुगे मजा। ने एटेए दिपिलि रे सरा रअ गुन पुरआ गे तइकेना अर कोम गोनोंग तइकेना। मोद सिरमा लगवलेद सरा रआ गुन तयोम सिरमा जकेद तइन जना। ने-लेका-ने-लेका-ते खिति रे सुधुरकओ-सोतओ लेना अर होड़ोवआ जोपोम सोतओ लेना। अगहन चण्डुऊ, मागे चण्डुऊ गामा रेगे एन सोमय गोड़ाबबा, गुड्डुलु, कोदे अर रम्बड़ाको हेरे नतेन गोड़ापिड़ीको सी-तेयर जदको तइकेना।

हतु होड़ोको ओड़ओको अयरतेको बिचर तना, "मेन्दो सनमंअन सोमय रे होयोदआ गे बदिलि जना। बे-से लेका गामा-गे बनओं जना। जरगी क-ए पुराजद ते खिति कहोबा तनाअर हतुरेनकोरे रेंगेए हिजुऊ जना। हलाजोला 1979 ई. अते नेसआ, मेनेम करम चण्डुऊ रेगे गामा-ए बगे जदा अर सोजे असड़ा चण्डुऊ रे-ए गामा एटेए जदा।

बदिलितिन ने-सोमय रे खितितन होड़ोको गोड़ाबबा-गुड्डुलु खितिइ नतेन गोड़ापिड़ी कको तेयर धड़िआ तना। आसाड़ा रे गामा एटेए जदा ने सोमय। ने-लेकाते गुड्डुलु-गोड़ाबबा अर कोदे लेकनको रआ खितिगेकको खिति धड़िआ तना। नगे सुरगुजा होड़ेएको खिति धड़िआ तना। सिदा दो गुड्डुलु इरकेतेर एनगोड़ा रे सुरगुजा, होड़ेए ओड़ओ संगाकोको चासा धड़िआतन तइकेना। मेन्दो नाअंदो जां-लेका गड़हा लोयोंगको रे दो दआ पुरा तना, चेतन लोयोंग च बदीको रआ कनउ, करंड़ीकोदो चासा गे होका जना। मेनेम रइसीकोओ ठीकि लेका कहोबा तना।

"हे, सिदा जूगु दो पुरआ गे-ए गामा जएकेना। होड़ोको सिदा सोमय गड़हा लोयोंग कको सुकुआतन तइकेना। चिल्काते चि एनाकोरे खितिइ रआ नगे ताकानमओतन तइकेना, नगे मजा होबओतन तइकेना दआते। एन सोमय चेतन लोयोंगकोरे खूब होनोबा तइकेना। चिल्काते, चि दआ क-ए घटिजद तइकेना। सनमंअन जूगु रे ठीकि एटआ जना। गड़ा लोयोंगकोरेखिति होबा तना अर चेतन लोयोंगकोरे दआ रआ रिंगाते कहोबा तना।" हड़म होड़ो मेनकेदा। हतु सभा रे।

"नाअंदो मंड़ि-मंड़िते सरा रआ परचर होबा जना। एन्कागे मंड़ि-मंड़िते

सरा रआ गोनोंग अदिका इदि जना, अर सरा गुनों कोमइदि जना। नवा-ते-नवा सराको उड़ुंइदि तना। मंड़ि मंड़िते ने-सराकोते खासे लेकाते लोयोंगको बगड़व तना। ओते रआ सरगद हइन तना। मनोआ नतेन नवा सरा च सरकारि सरा च रसायनिक सरा एदका सबुतु इदियोओ तना। ने समय रे एन एदकाकोते हरदुऊ नतेन एटआ सरा चिल्काचि लेन्डद सरा ओनचर जना। सिदा जूगु लेका गुरिड इ सरा, तोरोए सरा, कोरोंजो-बा अर कोरोंजो काड़े लेकन सराको खितिइ ओते रे ओमे रआ पुरआ जोर सेड़ांन होड़ोको ओम जदा। ने-सराको बेपएसा ते कारे कोम गोनोंग ते नमओं तना हतुकोरे दो। मनोवा जिदन नतेन ने-गुरिइ सराकोगे मजाउतर सराको हिसबओ तना। इमिन रेओगे नवा सरा च रसायनिक सरा सनमंअन जूगुरे खिति रआ कजुदओ ओंग बइ जना।" सोमा-एमेन केदा।

"हे! नेअंके बराबरि नं क-बगी धड़ियोगा। ने दिपिलि दिसुम रे उपुजा पोसाकना दो ने नवा सरातेगे। सिरमा रआ सोबेन-सा-रे ने सोमय रकम रेयआ उतुइयआको उपुजा तना गोड़ापिड़ी कोरे। एनामेन्ते नवा सरा मनोवा जिदन रआ ओंग बइजना। दिसुम रे चउलीदालि एमनको कघटिआ कना दो ने नवा सरा अर रानुको रआ पोरतब तेगे। चिल्का-चिल्का होड़ोकोबु पोसाइदि तना, एन्का-एन्का ओतेअड़ी हिसओ कोमइदि तना। सेड़ां-दं नवा ते नवा पोसाइदि तना, ओतेअड़ी दो का। एना दो मेनेम कोमन-कोमन दो हटिं-हटिंते सेरेदगिड़ी जना। ने हुडिं लेकन ओतेअड़ी रे पटवार सुबिस्ताको जोगाड़ि केतेर नवा सराको मेसा केतेर उपुजा संगी धड़ियोओ तना।" टुन्डुरे भी.एल. डब्लुइ कजिकेदा अर एनातेदो सभा अपनदड़ि जना।

नया खाद

वर्षा आरम्भ का समय था। गाँव में कृषि का काम शुरू हो चुका था। ठीक इसी समय ही एक दिन प्रखण्ड की ओर से सरकारी खाद, गाँव के मुण्डा के घर में गिराया गया था, गाड़ी से। उस खाद को गाँव के खेतिहार किसानों को देने के लिए। कुछ (खाद) को पैसे से और कुछ को बे-पैसे से, परन्तु ऋण देने के लिए आया हुआ था। मुफ्त से इसलिए दिया जा रहा था कि ग्रामीण इस खाद के बारे में अनभिज्ञ थे। सिर्फ पैसे से कहने से तो अधिकतर लोग खाद लेना नहीं चाहते। नया खाद नया ही आया हुआ था। प्रखण्ड का भी काम ही था कि खेतिहर लोगों को और गरीबों या पिछड़े हुए लोगों को सरकारी सहायता से उन्हें विकास करना और उपलब्ध कराना आदि इसका काम था और है भी।

इसके पहले तो गाँव के लोग बिना प्रखण्ड के खाद या बेगर रसायनिक खाद से ही खेती करते आ रहे थे। वे सिर्फ गोबर खाद, कम्पोस्ट खाद से ही खेती करते थे। इस कारण टांड़ों में कम ही उपज हो पाता था। क्योंकि वे गोबर खाद कम मात्रा में लगा पाते थे और गोबर खाद से टांड़ में कई प्रकार के घास निकल आती थी। निकावन नहीं करने से घास धान को दबा देता है। इस प्रकार से लोग गरीब थे। वे जंगल और वृक्षों में निर्भर रहते थे। मुश्किल से वर्ष में वे एक ही बार कृषि कर पाते थे। वो भी हो गया तो है और नहीं हुआ तो नहीं है। लगभग सालभर का भोजन हो पाता था। जिसका अधिक खेत बारी होता था,वहीं अमीर होते थे और हैं भी।

सिंचाई कर एवं खाद दवा आदि के द्वारा खेतों में उपज बढ़ाने की कोई सुविधाएँ नहीं थी।

अब तो लाया हुआ खाद को बाँटने का जिम्मा पंचायत के भी.एल. डब्लु. का था। वो भी.एल.डब्लु. खूब भड़-भड़ाकर बात करता था। इसलिए उसे लोग भड़भड़िया भी.एल.डब्लु कहा करते थे।

दूसरे दिन सबेरे भी.एल.डब्लु खाद बाँटने के लिए आया। साइकिल से ही ऊपरटोली के लोगों को बताते बुलाते आया। उसके बाद ठीक बीचटोली पहुँचा। साइकिल की गति धीमी होकर रूक गई नाटा आदमी, वह साइकिल के सोकेट में पैर रखकर थेच-सा उतरा। कुआं के पास मुण्डा की पत्नी बरतन धो रही थी। मजाक से उसने उससे कहा, "क-तीअन पकाई भाभी ?" मुण्डा की पत्नी समझी या नहीं समझी। वह जवाब दी, "उधर ही तो चले गए!" मेरे भइया किधर चले गए पूछ रहा होगा समझकर। भी.एल. डब्लु भी इस बात को समझा या नहीं समझा। उसके बाद वह भी चुपचाप साइकिल में सवार होकर नीचेटोली की ओर चला गया।

भी.एल.डब्लु सीधे इमली पेड़ के नीचे रूक गया। उसने साइकिल की घंटी..............बजा दी। सुनते ही सोमा निकला तो भी.एल.डब्लु है। तुरन्त ही आया और वह बोला, "प्रणाम सर!"

"हूँऊ, चलिए, आप सभी खाद लेने के लिए। इधर के सबको आप जल्दी से खबर कर दीजिए।" भी.एल.डब्लु ने कहा। ठीक है सर। कहते हुए सोमा सबको खबर किया जा-जाकर।

वैसे तो पहले दिन बताया गया था कि कल प्रखण्ड का खाद बंटाएगा-सो। इसलिए वैसे सभी लोग घर में ही थे। खाद बंटाने की बाट ही जोह रहे थे।

खाद वितरण की सूचना भी.एल.डब्लु ने गाँव के सभी ओर दे दी। उसके बाद उसने पहले खाद रखा हुआ घर के पास लौटा और लोगों की इंतजारी करने लगा। कुछ ही देर में ऊपर, नीचेटोली सभी ओर से गाँव के लोग एक-एक, दो-दो करके व्यक्ति दल के दल आने लगे। सब लोग खाद लेने और ढोकर ले जाने के लिए अपना-अपना बोरा, खाँची तथा सिका-झोड़ी आदि लेते आ रहे थे।

खाद बाँटना शुरू हो गया, तौल-तौलकर। तौलने वालें गाँव के लोग

ही थे। भी.एल.डब्लु रजिस्टर में सबका नाम लिखते जा रहा था, और वह यह भी लिखते जा रहा था कि किसे कितना खाद मुफ्त में मिला और कितना पैसे से मिला। उसके बाद नाम के सामने उस व्यक्ति का हस्ताक्षर करवाते जा रहा था। जिसे नाम लिखने नहीं आता था उसको अंगुठे का निशान दिलवाते जा रहा था।

बे-पैसे से या निःशुल्क बांटा जा रहा खाद सबको बराबर मिला। परन्तु पैसे से या ऋण का खाद जो जितना लेने चाह रहा था, उसे उतना ही दिया जा रहा था। कुछ लोग को तो भय भी था कि "बाद में आदयगी किया जा सकता है या नहीं!" कह-कहकर फिर भी अपने-अपने खेत टांड़ों के हिसाब से तथा उसका लेखा-जोखा पूछकर वे लेते ही जा रहे थे।

आरम्भ में सरकारी खाद का कम दाम था। ठीक उस समय लोगों के पास रूपये पैसे नहीं था। इसलिए सरकार की चाह थी कि - "नया खाद ब्लॉक की ओर से प्रचार करने का। पहले-पहल तो पैसे से कोई भी नहीं खरीदेगा और निःशुल्क लेने पर लोग इसकी गुण को जानकर अगले वर्ष तो खरीदेंगे ही।" यह सोचकर बाद में गाँव के सभी खेतिहार अपने-अपने हिस्सा का खाद ले लिया। दोपहर का समय था, कुआं में धोकर उन्होंने भी.एल.डब्लु को मुण्डा के घर में भोजन कराया फिर तम्बाकू खाने के बाद वह चला गया।

नया-नया खाद अबकी गाँव के प्रत्येक घर के लोगों को मिला, प्रखण्ड की ओर से। टाँड़ों में गोड़ाधान में सब कोई सरकारी खाद लगाया। गोड़ाधान जन्मना ही देरी तुरन्त लह-लहा उठा। उस वर्ष वर्षा भी अच्छी हुई। सबका गोड़ाधान उस वर्ष पहले वर्ष से अधिक उपजा। पाहन ने एक बड़े-से टाँड़ में उस खाद से गोड़ाधान की खेती की। वह भी खूब उपजा और उस वर्ष तो उसने एक ही बड़ा टाँड़ में बाईस मोरे बाँधे। सच में ही लोग माने रसायनिक खाद की गुण-शक्ति। दूसरे साल उस टाँड़ में उसने मड़ुवा की खेती की। वह भी कहो खूब हुआ और उसने मड़ुआ के बीस मोरे बाँधे। इससे पहले उस टाँड़ में गोड़ाधान नहीं-नहीं में मुश्किल से एक काठ के लगभग होता था।

इस तरह से रासायनिक खाद का प्रभाव गाँव के लोगों पर पड़ा। खासकर टाँड़ जमीन के लिए तो बहुत ही अच्छा, इस शुरुआती दौर में खाद गुणकारी था और इसकी कीमत कम होती थी। एक वर्ष का दिया खाद का

गुण दूसरे वर्ष तक रहा। इसी भाँति से कृषि में सुधार हुआ था और लोगों का खाद्यान्न बरकरार था। अगहन मास, माघ मास की वर्षा में ही उस समय गोड़ाधान, गोंदली, मड़ुआ और उरद बोने के लिए टाँड़ो को वे जोतकर तैयार कर लेते थे।

फिर गाँव के लोग विचार दे रहे हैं कि "वर्तमान युग में जलवायु में परिवर्तन आ गया है। ठीक से वर्षा ही नहीं होती है। वर्षा कम होने के कारण खेती नहीं हो रही है तथा गाँव के लोगों में गरीबी आ गई है। लगभग 1979 ई. के बाद से कहा जाए तो करम मास में ही वर्षा छोड़ दे रही है और सीधे आषाढ़ में वर्षा आरम्भ हो रही है।

बदलते हुए इस परिवेश में खेतिहर लोग गोड़ाधान गोंदली खेती करने के लिए टाँड़ तैयार नहीं कर सक रहे हैं। इस समय आषाढ़ में वर्षा शुरू हो रही है। जिस कारण गोंदली, गोड़ाधान और मड़ुआ आदि की खेती ही नहीं लगा पा रहे हैं। न सरगुजा, कुरथी आदि की खेती कर सक रहे हैं। पहले तो गोंदली काटकर उसी टाँड़ में सरगुजा, कुरथी और सकरकन्द आदि की खेती की जा रही थी। परन्तु अब तो किसी तरह गडढा खेतों में तो पानी पुर रहा है। ऊपरी खेतों में या चौंराओं का कनऊ, करहनी आदि की खेती ही रूक गई है। कहना चाहिए कि अब तो राईस धान भी ठीक से नहीं हो पा रहा है।"

"हाँ, पहले समय तो वर्षा अधिक होती थी। उस युग में गड्ढा दोन को लोग पसन्द नहीं करते थे। क्योंकि उन खेतों में खेती करने का न ताक मिलता था, न ही खेती अच्छी होती थी, पानी से। वर्तमान युग में ठीक उल्टा हो गया। गड्ढा खेतों में अच्छी खेती हो रही है तथा ऊपरी खेतों में पानी की कमी के कारण नहीं हो रही है।" ग्राम सभा में बूढ़े ने कहा।

"अब तो धीरे-धीरे से खाद का प्रचार हो गया। वैसे ही खाद का दाम भी बढ़ गया और खाद के गुण में गिरावट आते गया। नया से नया खाद निकलते गया। नाना प्रकार का खाद टाँड़ और खेतों मे लगाना पड़ रहा है। धीरे-धीरे इन खादों से विशेषकर दोन खेत बिगड़ते जा रहा है। जमीन का उर्वर नष्ट हो रहा है। मनुष्य के लिए नया खाद या सरकारी खाद अथवा रसायनिक खाद हानिकारक प्रमाणित होते जा रहा है। हाल में इस प्रदूषण से बचने के लिए दूसरा खाद जैसे केंचुआ खाद निकला। पहले युग की तरह

गोबर खाद, राख, करंज-फूल और करंज खली जैसे खादों को खेत में लगाने पर जोर ज्ञानी लोग दे रहे हैं। ये खाद निःशुल्क या सस्ते दाम में मिलता है गाँव में। गोबर खाद ही खेतों के लिए उपयुक्त है। फिर भी रसायनिक खाद वर्तमान युग में खेती का अभिन्न अंग बन गया है।" सोमा ने कहा।

"हाँ! इसको बराबर के लिए नहीं छोड़ा जा सकता है। वर्तमान मे देश में उपज में वृद्धि हुई है तो इस नया खाद से ही। वर्ष के सभी मौसम में इस समय तरह-तरह की सब्जियाँ उपज रही है खेत-टाड़ों में। इसलिए नया खाद मानव जीवन का अंग बन गया है। देश में चावल-दाल आदि की कमी नहीं है तो इसी नया खाद बीज और दवाओं के परतब से ही। जैसे-जैसे जनसंख्या में वृद्धि हो रही है, वैसे-वैसे जमीन जायदाद का हिस्सा छोटा होते जा रहा है। ज्ञान से नयी से नयी चीजें विकसित हो रही हैं, जमीन जायदाद तो नहीं! इस छोटे आकार की खेतीबारी में सिंचाई सुविधा उपलब्ध कर और नये खाद का प्रयोग कर उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।" अन्त में भी.एल. डब्लु ने कहा और उसके बाद सभा विसर्जित हो गई।

जोअर

मोद सिरमा रआ कजि, बिर रे हंतीइ हिजुगाकन तइकेना। बबा दौंरी मेनेम छबा चोटेआकन तइकेना। तरालेकागे दौंरीआकन बबा कुदहा कोलोम रे तइआकन तइकेना। पूस मागे चण्डुउ तइकेना। निंतम जकेद रबंओ टुण्डुउ रे निदा बलि गुयु रे एसेकर गे-ए गितिजाकन तइकेना। सोंजोकोते एन निदा गे इनियआ कोलोम रे हंतीयोए हिजुऊ जना। बबा कुदहा ठीकि गुयु दुअर सोजे रे तइकेना। एनाते इनिइ बबा जोमे सिदा रे गुयु दुअर रेए हिजुगाकन तइकेना। एनाते इनिइ मिद लेकाए सड़ि उड़ुंग केदा 'हांय'! बलि दुड़ुम चोटेआकन तइकेना। अयुमे चुटिगेए अगम केदा, "गनसा बोंगाए हिजुगा कना?" जी बितर रे कजि केदा। बोरोते इनियआ जी मोसा दो ओटंगिड़ि जना। मेन्दो सयद बियुर केअतेए उडुउ तना, "तिसिदोंञ गो-ए जना! निर दो ओड़ओ गे गुना अर अनाबोले कोमुलितेञ निरा? जाँगे चिकओ! अञ गुयुअते कञ उड़ुंगोगा।" सासे केअतेए कजि कदा।

इनिइ जी बितर रेगेए ठनव केदां चियआ मेन्ते चि हंती गुयु समंग रेगेए तइकेना। कबोरोए हंती बबा जोम नंए बियुरेन जन चि बलि दो बोरोते एकेलतान लोदते मंडिते उल्ठवन जना। गुयु रे-एइकुडुमेन ओबोरेन जना अर तीकिन जोड़ा केअतेए कजि हपा केदा, "ए गनसा बोंगा! ए भोगोमन! अमदो मरङ होड़ोदं! अञदो मिअद रेंगेए होड़ो हेके! अमआं बोरोते अञआं-जी-रे जी बनओं लेकञ ठोर जदा! दोअकेतेर अम नेमन ते जू बोदे सेनओंमे अर अञआं-जी बन-चव तम! ए गनसा मरङ होड़ो! अञदो अमके खने-खने जी

बितर रेञ जोअर तना!"

"ए गनसा गोंगा .... जोअर तना!"

जी रेगेए रूइन जना इनिइ दो। खने-खने चिमिनसा लेका नरमकोओतेए भाव केदा। टुण्डु रे हंती गड़िकद रेगे एमनतेए सेनओं जना। बेगर बबा जोम केअते।

तेतेए निदा तइकेना। बलिइ इतुअनतन तइकेना, हंती नतेन जी रेओ एदका उडुऊकेरे दो अञदो कञ बनचव धड़ियोओ तइकेना मेनअन। एनामेन्ते जी रे गोअरि भाव ओमेगे इनियआ मिअद होरा तइकेना, इनिइ ते हरदुउन रआ। एन तयोम दो सिङबोंगा गे इतुअन तइकेना। बलि ने कजि को सिदाअते गेए सरितन तइकेना। एनामेन्ते इनिइ एनका गेए रिका केदा। नेलेकन सेंड़ाको इनिइ अयते मपरंगको च हड़मको तअतेए इतुलआ, कोलोम रे जमाकनते भूरसी जीरूबतन लोओ ओड़ओ अजउड़िआकन सोमए रे जारू जगर दुनुब कोरे।

मुण्डा च आदिवासीको बराबरि बिर रेगेको तइअउआ कना, बिर जनोवरकोलोओ। निकुगे बिर मंआ फइल केअते खितीइ ओतेको कइकेदा। एनाते एन ओतेअड़ि कोरे खितीबती केअतेको असुलेन जना।बिर रआ खिती के बिर जनोवर कोते बंचवे टोटओतन तइकेना। चेड़ें चिपुरूद, बन्दरा गाड़ि, बाना, चुटु कटेया ओड़ओ कुलय लेकन बिर जनोवरकोकेदो अपनआं पेड़ेए तेको हरगिड़ियोओतन तइकेना, मेन्दो हंती लेकन फेड़ेगन जांउत के पेड़ेएते क-ए खुदओगिड़ि धड़ियोओ तइकेना अर नगे धड़ियोगा। मुदा मोन्तोर तेए खुदओआ अर नेअं मोन्तोर नरमेनआं रआ तनआं नेका-का चि पेड़ेए ओमे रआ। पेड़ेए ओमकेअतेओगे हुड़िखोन नतेन दो-ए खुदओगिड़ि धड़ियोगा मेन्दो इनिइ खींसियोओ तना अर जाँ-तआ-क जाँ-तआ रे ने खींसि रआ होरा ए अपनव जदा।

बिर दिसुम होड़ोको च सिदा जूगु रेन होड़ोको नरमेन रेगेको ठेकओआकन तइकेना अर मेनअंकोआ। एना ओड़ओ ने लेका मेनअं, "अञ मिअद हुड़िं होड़ो हेके। इसु बलएते अञ खितिआ कदा। जुदि अम नेअं जोम केरेदो अञ चिकनअञ जोमेआ। अमदो पेड़ेगन अर मरङ अम! अम नतेन दो गोटा बिरं मेनआं। जू-अम सेनओं मे अर अञ रेंगेए होड़ो रे दोवाएमे! अञ अमेञ जोअर जअमा!"

नरमेनते ती-जोड़ाकेअते कजिलेरे लोयोंग रआ बबा क जोम केअते, बेगर तयोम सआ हेता रूड़ा केअते हंती अयर तेगेए सेनोगा। ने जोअर च नरमेनआं रेगे बोंगाबुरु ठेकववा कना अर धरम। जान गे धरम रआ ओरोतो तनअं सिंङबोंगा, दिवि देंवता च पेड़ेए रआ समं रे जोअर तिरूबे रअ अर कारे इनियआ समं रे अपनआ नरमेनआं उदुबे तनआ।

सरना धरम परकिरितियआ बोंगा रे बोरसा मेनअ। ने परकिरिति च भोगोमन रेगे खिती ओड़ओ मनोवाआ जीउदन मेनआं। नेआं बेगर दो सुसिरिजन रअ दो उडुगो-क-उडुऊ धड़ियोओ तना। एनामेन्ते सिंङबोंगा पुरखाको, गोत्रको ओड़ओ परकिरिति रे बिसुवासेए दो तदा। जां-गे नेग कमि के एटेए रे अर टुण्डुइ रे चेतन रे उदुबाकन पोड़ेएकोके ठोर्रूड़ा रे सोमय च मोसमको लेकाते जुदा जुदा बोंगाआ नतुम रूपु रे इन्कुवआ बोंगा बुरूउ तना। सिंङबोंगाआ दोआ नतेन ओड़ओ इनिइ तअते सुकुसनां मोने असि रे मनोवा-ए बोंगा तना। इनिइकेए दोड़ोमइ तना। इनियआ समं रे-ए गोअरि तना नरमकोअते। नेअंगे इतियआ नरमेनआं च जोअर तनआं।

जोअर, मनोवा जीउदन रअ मरंउतर धरम हेके। सोबेन होड़ो अयाते हुपुड़िंको के आसिस ओम केअते इनिङ के को जोअरि तना। समाज रे सोबेनते हुड़ि होड़ो अपिमा च तुरिमा रेनिइ तइना। इनिइ के जोअरि नतेन जां हतु रे हतु रेन जोतो ओड़आ रेन होड़ोको जमाकेअतेको रिका तना। नेआं जोगड़ि के छठीबु मेता तना। अपनते मपरंको के सोबेन होड़ोको जोअरको तना। हतु रे समाज रे रिसिता-नाता मरङ मेनआं। कोमन नाता मरङ मेनआं एमन अपनते जोनोमते हुड़िनिइ जोअरओ तना। अड़ान्दि-बला लेकन मोकाको रे सोबेन सोलोट रेन हुड़िंग मपरङ कोके मोद लेका मइनजलोद जोपोअर रआ होरा मेनआं। गुरु के, कुपुल के, बोंगा के सुकुइरिइ रआ मोयोद गे मोन्तोर मेनआं जोअर।

अबु समाजे रे नेअंकोलोद तेगे बबा एंगा, गोदे एंगा, उरिइ एंगा-मेरोम एंगा लेकन सोबेन संसाधनको के जोअर मइनओं रअ हेओवा मेनआं। ओड़आ रे जाएंआ एंगा-अपुवआ गोनो-ए होबा जना दो इनियआ जोम-नूं अउरि होबओ जकेद एन ओड़आ रे नगे अड़ान्दि कोड़ान्दि बयुगा नगे नवां ओड़आ गे बइ धड़ियोगा। एनामेन्ते गो-ए जन एंगा-अपुवआ जोम-नूं परब इनियआ च गुरुवआ बोंगा च जोअर गे तनआं। आदिवासी समाज रे ने जोअर परब मागे

चण्डुऊ रे संगिपति ते मनतिंओं तना। ने लेका ते मागे परब पुरखाकोवआ बोंगा बुरु रआ परब हेके। जान होड़ो के, सोंगे के, सयोब के, राजा के च मुदइकेओ सोंगे रूअड़इ रआ मूल मोन्तोर 'जोअर' तनअं। ने जोअर च नरमेनआ ते बलि फेड़ेएगिड़िअन जांउतु हंती ते अयआ जी-इ हरदुऊ लआ।

सोहराई परब तयोम, नबेम्बर-दिसम्बर चण्डुऊ रे लोयोंग बबा जरोम लेना। मदुकमडीह लुतुमे हुड़िं-हुड़िं हतु बिर अतोम रे मेनआं रेन बलि लुतुमतेन होड़ो बबा इरे सिदा रे कोलोमए लअआ केदा, बबा इर केअते जमाए नतेन अर दौंरीए नं। ने कोलोम ओड़आ अते फरकानोओं रे मेनअं टयद रे तइकेना। एन कोलोम रे इर-दो-जमाकन बबा के होरोए नतेनते इनिइ मिअद गुयुइ बइलआ। एन गुयु रे गोटा निदाए गितिइतन तइकेना। नेअं-सा रबंग-सा नतेन गुयु दुअर रे गड़ा ऊर केअतेए बुरसीजद तइकेना। रबंग-सा रे निदा मरङ तइकेना। निदा गुयु रे गितिइ चिइ बिरिद जना अर जीरूब जना, एनाते ओड़ओए जीरूब असदिजन चिइ गितिइ रूड़ा जना। नेअंदो सरति कजि गे मेन्दो सेंगेल जुलाकन रे निदा-नुबआ बोंगा-चोंगा, ऊरू-तिजु ओड़ओ बिंग-बिसि लेकन जन्तुकोवआ बोरोआ-का तइना। बलि कोलोम तआ रे भुरसी जीरूबतन जीरूबतन निदा रकम गे जी बुलव लेकन जगरको जगरा अर इनितु जगरको धुनिआ अउरि गितिइ बारि।

निमिरगपा नेअंको कमनतिओं रेदो अलो मनतिंओका मेन्दो ने लेकाते होड़ो रेओ जां दिसुम समाज रे गो-ए बदिलि रे गो-ए रूड़ा, दपल-गोपोए बदिलि रे दपल-गोपोए रूड़ा रे दपल-गोपोएगे होबाइदियोगा। हतु दिसुम बगड़व इदियोगा अर होड़ो होड़ो जीउदन दुकु बकिड़ि रे बकिड़ि इदियोगा। मेन्दो जोअर रआ गोनोंग अपिआ गलेद जूगु रे एनका रअ एनका बइआकन गे तइना।

प्रणाम

किसी वर्ष की बात है, वन में हाथी आया हुआ था। धान मिसनी प्रायः खत्म हो चुका था। कुछ मिसे हुए धान का ढेर खलिहान में रह गया था। पूस माघ का महीना था। तब तक ठंढ भी अंत होने पर था। एक दिन बलि कुम्बा में अकेला सोया हुआ था। संयोग से उसी रात उसके खलिहान में हाथी भी आ गया। धान का ढेर ठीक कुम्बा के सामने था। हाथी ने एक प्रकार की आवाज की 'हाँयं'! बलि सो चुका था पर आवाज सुनते साथ उसने पहचान लिया, 'गणेश देवता आ गए हैं।'' मन में ही उसने कहा। डर से उसके प्राण एक बार तो निकल गए थे। परंतु उसने साँस लेकर कहा, ''आज मैं मर गया। भाग जाना और गुनाह है और मैं भागूं तो किस ओर से? जो भी हो! मैं कुम्बा से नहीं निकलूंगा!'' उसने साहस कर कहा।

उसने मन में निश्चय किया। इसलिए कि हाथी कुम्बा के समक्ष था। निडर हाथी धान खाने के लिए मुड़ा कि बलि ने डर से काँपते हुए धीरे से करवट लिया। कुम्बा में घुटने टेक कर तथा दोनों हाथों को जोड़कर मन ही मन कहा, ''हे गणेश देवता! हे भगवन! महाराज आप महान हैं! मैं एक गरीब व्यक्ति हूँ! आप मुझ पर कृपा कीजिए। आपके भय से मेरे प्राण निकल रहे हैं! दया कर आप यहाँ से तुरंत चले जाइए और मेरे प्राण की रक्षा कर दीजिए। हे गणेश महाराज! मैं आपको बार-बार दिल में प्रणाम करता हूँ।''

''हे गणेश देवता .... प्रणाम करता हूँ।''

वह दिल में ही कुहरा। अनेकों बार उसने नम्रता से भाव किया। अंत

में हाथी क्षणभर में वहाँ से चला गया। बगैर धान खाए।

चाँदनी रात थी। बलि को मालूम था, हाथी के प्रति मन में भी बुरा सोच लेने पर मैं उससे अपने प्राण की रक्षा नहीं कर सकता। इसलिए मन में विनय भाव प्रकट करना उसका एक उपाय था। उसके बाद तो ईश्वर ही जानता था। इसलिए उसने वैसा ही किया। ऐसे ज्ञान को उसने अपने से बड़ों-बूढ़ों से सीखा था, खलिहान में इकट्ठे होकर भूरसी तापते हुए या फिर फुर्सतों में, गपशप की बैठकियों में।

मुंडा अथवा आदिवासी बराबर वन में वास करते आए हैं, जंगली जानवरों के साथ। इन्हीं लोगों ने जंगल साफ कर खेती योग्य खेत बनाया। तब इन्होंने उस भूमि पर कृषि कर जीवन निर्वाह किया। वन की खेती को जानवरों से बचाना पड़ता था। चिड़ियों, बंदर-भालुओं, चूहों तथा खरगोश आदि जानवरों को अपनी ताकत से भगाया जा सकता था था। परंतु, हाथी जैसे बलशाली जानवर को ताकत से भगाया नहीं जा सकता था और न सकाएगा। पर मंत्र से उसको भगाया जा सकता है तथा यह मंत्र विनम्रता का है। ऐसा नहीं कि बल प्रयोग कर उसे नहीं भगाया जा सकता। बल प्रयोग के द्वारा भी कुछ क्षणों के लिए उसे भगाया जा सकता है, परंतु वह क्रोधित हो कहीं न कहीं इस क्रोध का बदला चुका लेता है। वन निवासी या पुराने समय के लोग विनम्रता में ही टिके हुए थे और वे लोग हैं ही विनम्र। वह फिर इस प्रकार से कि "मैं एक छोटा आदमी हूँ। मैंने कठिन परिश्रम कर खेती किया है। यदि आप इसे खा जाइएगा, तब मैं क्या खाऊँगा। आप तो बलशाली तथा महान हैं। आपके लिए संपूर्ण जंगल है। आप चले जाइए और मुझ गरीब आदमी पर कृपा कीजिए। मैं आपको प्रणाम करता हूँ।"

विनम्रतापूर्वक हाथ जोड़कर बोलने से खेत के धान को न खा कर, बिना पीछे देखे हाथी आगे ही चला जाएगा। इस प्रणाम अथवा विनम्रता में ही पूजा-पाठ टिकी है और धर्म। किसी भी धर्म का अर्थ है ईश्वर, देवी-देवता या शक्ति के समक्ष नतमस्तक होना और उसके सामने अपनी विनम्रता व्यक्त करना।

सरना धर्म, प्रकृति की पूजा में आस्था है। इसी प्रकृति व भगवान में कृषि तथा मनुष्य का जीवन हैं इसके अभाव में सुसृष्टि की कल्पना तक नहीं की जा सकती है। इसलिए सरना धर्म ईश्वर का, पुरखों का, गोत्रों को और

प्रकृति में विश्वास रखता है। किसी भी रस्म-कर्म की शुरुआत में तथा अंत करने में और बताए गए शक्तियों की स्मृति में समय व मौसमानुसार अलग-अलग देव नाम के रूप में उनकी पूजा की जाती है। ईश्वर की कृपा तथा उनसे मनचाही इच्छा की कामना में मनुष्य पूजा करता है। उनके नाम अर्पण करता है। उनके समक्ष वह विनती करता है विनम्रतापूर्वक। यही उनके प्रति विनम्रता या प्रणाम है।

प्रणाम, मनुष्य जीवन का सर्वश्रेष्ठ धर्म है। सभी अपने से छोटों को आशीर्वाद देकर उसे प्रणाम करते हैं। किसी भी समाज में सबसे छोटा आदमी तीन या छह दिनों का होता है। उसको प्रणाम करने हेतु किसी भी गाँव में प्रत्येक घर के लोग इकट्ठे होकर कार्यक्रम करते हैं। इस व्यवस्था को छट्ठी कहते हैं। अपने से बड़ों को प्रत्येक व्यक्ति प्रणाम करता है। ग्रामीण समाज में रिश्ते-नातों का अत्यंत महत्व है। जहाँ नाता बड़ा है वहाँ अपने से जन्म से छोटे लोग को प्रणाम किया जाता है। शादी-विवाह जैसे अवसरों पर समाज के सभी छोटे-बड़ों को एक प्रकार आदर के साथ आपस में प्रणाम करने का रिवाज है। गुरु को, अतिथि को, देवता को प्रसन्न करने का एकमात्र मंत्र है प्रणाम।

हमारे समाज में इन सबके अलावे धन माता, मड़वा माँ, पशु-धन माता आदि सभी संसाधनों को प्रणाम या पूजे जाने की प्रथा है। परिवार में किसी के माता-पिता की मृत्यु हो जाने पर उनका खान-पान नहीं हुए तक उस परिवार में न शादी-विवाह बनता है, न ही नया घर बनाया जा सकता है। इसलिए स्वर्गवासी हो गए माता-पिता के खान-पान पर्व उनकी या गुरु की पूजा है व उन्हें प्रणाम करना ही है। आदिवासी समाज में इस प्रणाम पर्व को माघ मास में सामूहिकता से मनाया जाता है। अतः माघ पर्व पुरखों की स्मृति का परब है। किसी व्यक्ति को, मित्र को, अधिकारी को, नृप को व शत्रु को वश में करने का मूल मंत्र 'प्रणाम' है। इसी प्रणाम या विनम्रता से बलि ने बलशाली हाथी से अपनी जान बचाई थी।

सोहराई पर्व के बाद, नवम्बर-दिसम्बर माह में दोन का धान पक गया था। महुआटोली नामक छोटा-सा गाँव वन के किनारे है, वहाँ बलि नामक व्यक्ति ने धान काटने के पूर्व खलिहान बनाया था, धान काटकर इकट्ठा करने के लिए तथा मिसने के लिए। यह खलिहान घर से कुछ दूर पर अवस्थित

था। उस खलिहान में काटे-रखे-जमा किए धान की रखवाली के लिए उसने एक कुम्बा बनाया था। उस कुम्बा में वह रात को सोया करता था। यह समय जाड़े का था। जोरों से ठंढ लग रही थी। इससे बचने के लिए कुम्बा द्वार में वह गड्ढा खोदकर भूरसी भरता था। जाड़े के मौसम में रात लंबी होती है। रात में कुम्बा में सोने के पहले और सोने के बाद जब भी उसे ठंढ लगती वह उठ जाता और तपता, तब वह फिर मन भर तपकर सो जाता था। यह तो सच बात है पर आग जलते रहने पर रात को भूत-प्रेत, कीड़े-मकोड़े तथा साँप आदि जीवों का भय नहीं रहता। बलि खलिहान में रात को भूरसी तपते-तपाते मन बहलाव की बातें बोलता रहता तथा ज्ञान-वर्द्धक उपदेश सुनाता सोने के पहले।

वर्तमान में यह मान्य हो अथवा मान्य न हो, परंतु इस भाँति से मनुष्य में भी किसी प्रदेश व समाज में हत्या के बदले हत्या कर देना, मारपीट के बदले में मारपीट ही होते जाएगा। गाँव-देश बिगड़ता चला जाएगा तथा मानव जीवन अशांति के घेरे में घिरता चला जाएगा। परंतु 'प्रणाम' का महत्त्व सभी कालों में यथावत ही रहेगा।



डॉ. सिकरा दास तिर्की

जन्म : 20 सितम्बर 1954
ग्राम-भण्डरा, खूँटी (झारखण्ड)

माता : स्व. मंगरी देवी

पिता : स्व. सोहराई तिर्की

शिक्षा: एम. ए. (मुंडारी), पीएच. डी.
(राँची विश्वविद्यालय)

मुंडारी आधुनिक साहित्य के विकास में डॉ. सिकरा दास तिर्की का योगदान उल्लेखनीय है। छात्र-जीवन से ही मुंडारी भाषा-साहित्य, संस्कृति एवं इतिहास के प्रति अगाध जिज्ञासा रखने वाले श्री तिर्की उरांव आदिवासी समुदाय से आते हैं, परंतु मुंडा क्षेत्र में पुरखौती निवास होने के कारण इनकी मातृभाषा मुंडारी है। साहित्य की सभी विधाओं में इनकी रचनाएं स्थानीय, क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर के पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। मुंडारी एवं हिंदी दोनों ही भाषाओं में। वर्तमान में आप रामलखन सिंह यादव महाविद्यालय, राँची (झारखण्ड) में व्याख्याता हैं और मुण्डारी भाषा-साहित्य, संस्कृति, इतिहास पर चिंतन-मनन, लेखन व शोध निर्देशन के क्षेत्र में सक्रिय हैं.

प्रकाशित पुस्तकें : बा चण्डुअ आन तोअउ, झारखण्ड के आदिवासी और उनके गोत्र, वन अधिनियम 2006 (अनुवाद), मुण्डारी लोक साहित्य में इतिहास, मरङ गोमके जयपाल सिंह मुण्डा (अनुवादित नाटक)

सम्पर्क : ग्राम-कुसई, डोरण्डा, राँची (झारखण्ड)

PYARA FOUNDATION

प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन
चेशायर होम रोड, बरियातु, राँची-834009 झारखण्ड

ISBN : 978-93-81056-36-3